TRANSFRAME

A Bilingual,Bimonthly Magazine on Translation and Cinema

VOLUME 1, ISSUE 2

NOVEMBER-DECEMBER 2015

Special points of interest:

- Film and Translation Study
- Film and Translation Personalities
- Critical evaluation
- Research Paper
- Translation
- Interview
- Creation (poem,painting,photograph)
- Language
- Theory and practice

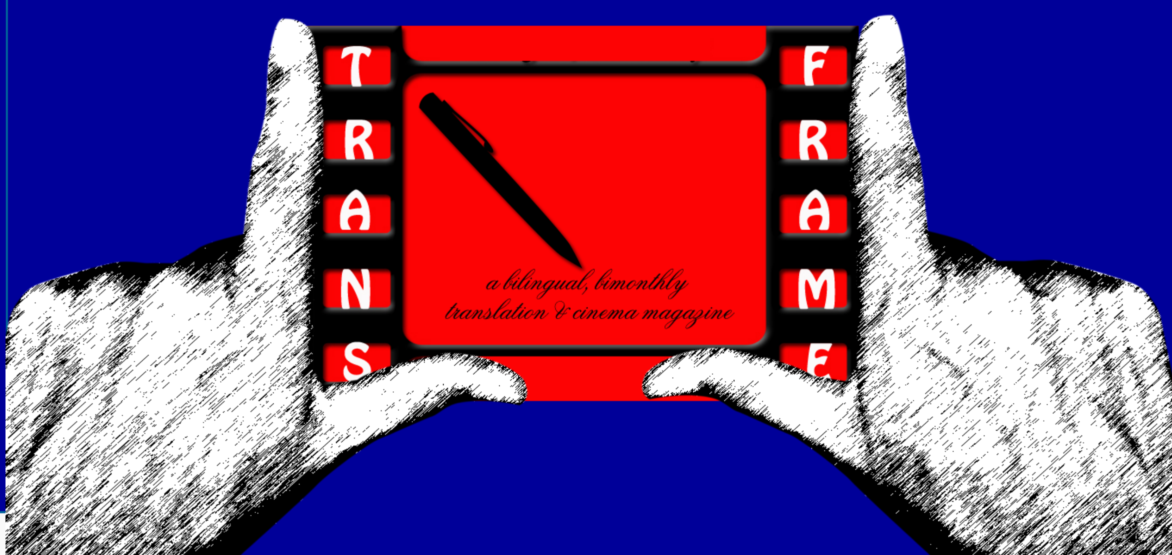

w.transframe.in ISSN 2455-0310

HTTP://TRANSFRAME.IN

NOVEMBER-DECEMBER 2015

VOLUME 1 ISSUE 2

TRANSFRAME

Inside this issue:

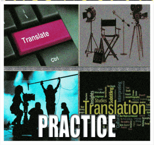

अनुवाद: कुछ शोध कुछ विमर्श	शिवम शर्मा
हिंदी सिनेमा पर अमेरिकन फिल्मों का प्रभाव	प्रवीण सिंह चौहान
नैरंतर्य लेखन और अनुवाद के प्रतिमूर्ति : प्रो. भीमसेन निर्मल	विजय राघव रेड्डी
प्रकाश झा : व्यक्तित्व व कृतित्व	प्रमोद कुमार पाण्डेय
दलित समाज का फिल्मांकन : कल और आज	मेघा आचार्य
Rang Rasiya(Colours of passion): review	मुकेश मानस
दक्षिण भारत में हिंदी प्रचार एवं प्रसार	डॉ. के. वी. कृष्णमोहन
A Study of Teaching Aptitude of Prospective Teachers in Relation to Sex, Intelligence and Academic Achievement –Dr. J.D. Singh &Satinder Kaur	
लखन रघुवंशी, मेघा आचार्य , डॉ.राजेश वी. मून	लेखनी
मरलीन , विशाल सोरटे	तूलिका
अभिमन्यु सिंह, प्रवीण सिंह	कैमरा
अनूदित कहानी : बोनज़ाय जिंदगी	डॉ. अन्नपूर्णा सी.
प्रह्लाद अग्रवाल से बातचीत	ट्रांसफ्रेम टीम
ध्वनि अंकन एवं ध्वनि पथ निर्माण की प्रक्रिया एवं उपयोगिता	प्रवीण सिंह चौहान
अनुवाद का व्यावहारिक संदर्भ	मेघा आचार्य

EDITOR

MEGHA ACHARYA

PRAVEEN SINGH CHAUAHAN

अपनी बात

प्रारंभ में जिस अनुवाद को दोयम दर्जे का कार्य माना जाता था आज उसकी अनिवार्यता जग-जाहिर है। अनुवाद एक ज्ञानानुशासन के रूप में शोध और विमर्श की संभावनाओं के साथ हमारे समक्ष उपस्थित है साथ ही इस क्षेत्र में वैचारिक और व्यावहारिक योगदान देने वालों की सूची भी लंबी होती जा रही है। अनुवाद पठन और पाठन के संदर्भ में आर. एफ. नीरलकट्टी कहते हैं, "भारत यदि 'एक भाषा क्षेत्र' है तो वह 'एक अनुवाद क्षेत्र' भी है। अत: अनुवाद सिद्धांत और अनुवाद व्यवहार के सभी विषयों पर सामग्री की कमी हम अनुभव करते रहे हैं। हमें खुशी है कि अनुवाद सामाग्री की दृष्टि से ट्रांसफ्रेम अपनी गति पकड़ते हुए इस क्षेत्र में अपना योगदान दे रहा है।

विचार अभिव्यक्ति का जो भी माध्यम चुने, अपने साथ विचार मंथन की आवश्यकता के साथ अवतरित होता है। भाषा और दृश्य 'विचार से विचार तक' का एक माध्यम या मध्यस्थ है। विचार के चौखट पार के एक नए विचार को एक ज़मीं देते हुए 'ट्रांसफ्रेम' आपके सामने उपस्थित हुआ है नवंबर-दिसंबर का यह अंक लेकर।

संपादक

PUBLISHER

PRAVEEN SINGH CHAUAHAN

301, KASHI NIWAS, MANDAWI GULLY,
VERSOVA, ANDHERI (W)

Mumbai 400061

Mob. +91 9763706428

E-mail– contact@transframe.in

Web– http://transframe.in

अध्ययन

शिवम शर्मा
हिंदी अनुवादक,
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली

अनुवाद: कुछ शोध कुछ विमर्श

संस्कृति का निर्माता समाज है और अभिव्यक्ति का माध्यम भाषा। तात्पर्य यह कि संस्कृति का सीधा संबंध समाज और उसकी भाषा से है। एक देश की भौगोलिक परिधि में विभिन्न संस्कृतियाँ विकसित एवं पल्लवित होती हैं। और लोकतंत्र में सभी संस्कृतियों को समान रूप से विकसित होने का अधिकार है।

अनुवाद प्रारंभ से ही समाज में किसी न किसी रूप में उपस्थित रहा है। आज अनुवाद एक नये अनुशासन के रूप में स्थापित हो चुका है और विभिन्न विश्वविद्यालयों में पठन-पाठन का विषय बन गया है। इस अनुशासन में शोध और विमर्श को भी एक नई दिशा मिल रही है| इस संदर्भ में कुछ तथ्यात्मक बिंदु निम्नानुसार हैं:

☐ प्रारंभ में अनुवाद को दोयम दर्जे का कार्य माना जाता था। परंतु विश्व भर में फैले हाशिए के विमर्शों की शह पाकर अनुवाद भी अपने अस्तित्व निर्माण करने में सफल हुआ है। स्त्री, दलित-आदिवासी आदि विमर्शों से शक्ति लेकर अनुवाद मुख्य धारा में अर्थात मूल लेखन के समकक्ष खड़ा हो गया है।

☐ प्रारंभ में अनुवाद करने या कराने के पीछे राजनीतिक, धार्मिक प्रेरणा अधिक होती थी और स्वैच्छिक कम। परंतु वर्तमान में ‘अनुवाद की राजनीति’ ने अनुवाद करने या करवाने की प्रेरक शक्तियों पर अनुवाद-चिंतकों को सोचने पर मजबूर कर दिया है| भाषायी राजनीति का पूरा प्रभाव अनुवाद पर पड़ता है| बहुसांस्कृतिकता को पोषित करने के लिए आने वाले धन-बल का भी अनुवाद ने खूब उपयोग किया है।

☐ माना जाता था कि अनुवाद को मूलनिष्ठ होना चाहिए| परंतु अब यह मान्यता बदल रही है। अनुवाद का भी अपना स्वतंत्र अस्तित्व है। वह क्यों मूल जैसा दिखे ? ऐसे कुछ बुनयादी सवाल विमर्श के लिए प्रस्तुत हो रहे हैं| अनुवाद को सीमा में न बंध कर ‘भाषांतरण, भावांतरण, रूपांतरण, कायांतरण आदि तमाम रूपों में खुद को परिलक्षित कराने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए।

☐ अनुवाद को क्या मूल पाठ जैसा पढ़ाया जा सकता है? अगर नहीं तो क्यों ? यह मुद्दा भी अनुवाद चिंतकों के मध्य स्थान घेरे हुए है। अरस्तू, प्लेटो, आर्कमिडिज के सिद्धांत आदि ऐसे विषय रहे हैं जिन्हें हम अधिकांश भारतीय अपनी भाषा में ही पढ़ते आये हैं। जो कि अनुवाद के द्वारा प्रच्छन्न रूप में संभव हुआ है। पर कभी अध्यापक या छात्र ने इस बिंदु पर ध्यान नहीं दिया, अगर ध्यान दिया तो कभी विमर्श के रूप में मुख्य धारा में चर्चा नहीं पा सका। पर वर्तमान में अनुवाद चिंतकों के लिए प्रासंगिक विमर्श बन चुका है।

☐ अनुवाद अस्मिता (Translating Identity) अनुवाद की राजनीति (Politics of Translation) बहुसंस्कृतिवाद और अनुवाद (Translation & multi-culturalism) अनुवाद संस्कृति (Translating Culture) अनूदित जेंडर (Translating gender), अनुवाद और सत्ता विमर्श (Translation & power of Discourse) आदि विषय अनुवाद चिंतन एवं शोध के केंद्र में आकर खड़े हुए हैं।

☐ प्रारंभ से ही अनुवाद प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में खूब होता रहा है। परंपरा और विकास से जुड़े आलेख और व्याख्यान खूब पढ़ने, सुनने, गुनने को मिल सकते हैं| परंतु अनुवाद के इतिहास, परंपरा पर अलग-अलग भाषाओं में व्यवस्थित ढंग से लिखने की जरूरत है। और

साथ ही अनूदित साहित्य की विधागत सूची भी तैयार करने की आवश्यकता है जिससे कि अनुवाद के स्वतंत्र विधागत अस्तित्व की जड़ें मजबूत हो सकें।

☐ अनुवाद दर्शन प्रारंभ से ही यह मानता रहा है कि सम्पूर्ण चराचर जगत किसी दृश्य-अदृश्य के विचारों का अनुवाद है। इस बिंदु पर भी अनुवाद को परख कर पक्ष या विपक्ष में दृष्टान्त सहित बड़े विमर्श की उम्मीद की जा रही है।

☐ अनुवाद का सबसे बड़ा, संभावना युक्त क्षेत्र- मशीनी अनुवाद, शुरुआत के दिनों से ही आलोचना का विषय रहा है। परंतु तमाम असंभावनाओं/आशंकाओं के होते हुए भी इसके पक्षधर अपनी उम्मीदों को संजोए हुए देश भर में अपने-अपने संस्थानों में दिन रात शोध में संलग्न हैं। कृत्रिम बुद्धि के विकास से संभावना थोड़ी प्रबल हो रही है। मुद्दा शोध एवं विमर्श के केंद्र में है।

☐ जबसे अनुवाद विज्ञान/कला/अध्ययन ने स्वतंत्र अनुशासन के रूप में विश्व भर के तमाम विश्वविद्यालयों में अध्ययन, अध्यापन, शोध एवं विमर्श में जगह पायी है तब से इस अनुशासन की शब्दावली में अभूतपूर्व बृद्धि हुई है| वर्तमान में 'अनुवाद विज्ञान पारिभाषिक कोश' पर शोध एवं निर्माण की आवश्यकता है। यह मुद्दा भी शोधपरक दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

☐ अनुवाद को केंद्र में रखकर कई भाषाविज्ञानियों, अनुवादकों, समाजचिंतकों, जनप्रतिनिधियों/संस्कृतिविदों ने कुछ वक्तव्यों, टिप्पणियों, आलेखों में अपने विचार व्यक्त किए हैं| इनका एक स्थान पर होने से संग्रह (हालांकि साहित्य अकादमी ने इन परिजनों को साकार रूप देने का प्रयास किया है) शोध एवं विमर्श को और बल मिल सकता है।

अनुवाद और बहुसांस्कृतिकता:

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि अनुवाद को सांस्कृतिक सेतु की संज्ञा दी जाती है। सांस्कृतिक सेतु के अर्थ में अनुवाद दो संस्कृतियों के मध्य संप्रेषण का कार्य करता है। संस्कृति का निर्माता समाज है और अभिव्यक्ति का माध्यम भाषा। तात्पर्य यह कि संस्कृति का सीधा संबंध समाज और उसकी भाषा से है। एक देश की भौगोलिक परिधि में विभिन्न संस्कृतियाँ विकसित एवं पल्लवित होती हैं। और लोकतंत्र में सभी संस्कृतियों को समान रूप से विकसित होने का अधिकार है। राष्ट्र राज्य की संकल्पना के पश्चात् एवं लोकतंत्र की स्थापना के साथ ही समाज को सांप्रदायिकता से बचाने तथा उसके उच्च विकास हेतु बहुसांस्कृतिकता की अवधारणा विकसित की गई। और उसमें परस्पर संप्रेषण हेतु अनुवाद मुख्य आयाम बनकर उभरा।

हालांकि बहुसांस्कृतिकता की आड़ में कट्टरपंथियों एवं चरमपंथियों ने आतंकवाद को पोषण भी प्रदान किया और इसी कारण पिछले दशकों में यूरोप के सभी देशों में बहुसंस्कृतिकता की राजनीतिक परियोजना विफल हो चुकी। इस दौरान बहुसांस्कृतिकता को मेल्टिंग पॉट, सेलॉड बाउल, कसाटा आइस्क्रीम, इंडियन थाली आदि-आदि के रूपकों में व्याख्यायित करने का प्रयास भी विद्वानों ने किया। अंततः बहुसांस्कृतिकता के स्थान पर एकल संस्कृति की संकल्पना उभरी। परंतु गौर करें तो और समाजशास्त्री भीखू पारेख के शब्दों में कहें तो एकल संस्कृति का आधार भी कई संस्कृतियों का परस्पर सामंजस्य ही है। जिसका आधार अनुवाद है। आज जिसे हम भारतीय संस्कृति की संज्ञा देते हैं वह भी कई संस्कृतियों का सम्मिश्रण है। भूमंडलीकरण के परिणामस्वरूप दुनियाँ एकरूपता की तरफ बढ़ रही है। यह एकरूपता भी बहुसांस्कृतिकता के इंद्रधनुष के लिए खतरा है। शोध एवं विमर्श की दृष्टि से यह विषय भी महत्वपूर्ण है| इसके अतिरिक्त - भाषा विज्ञान और अनुवाद अंतःसंबंध, अनुवाद भूमंडलीकरण और प्रवासी साहित्य, अनुवाद: कुछ शोध कुछ विमर्श, अनुवाद अध्ययन की शोध प्रविधि, अनुवाद का स्वरूप और भारतीय संदर्भ, साहित्य अकादमी की अनुवाद नीति, विभिन्न साहित्यों (कहानी, उपन्यास, काव्य) में अनूदित स्त्री अस्मिता, विभिन्न साहित्यो में अनूदित दलित अस्मिता, अनुवाद और सत्ताविमर्श, अनुवाद की पारिभाषिक शब्दावली और परिभाषा कोश, हिंदी साहित्यकारों का अनुवादकीय प्रदेय, हिंदी अनुवाद का इतिहास आदि बिंदुओं पर भी विचार प्रासंगिक हैं।

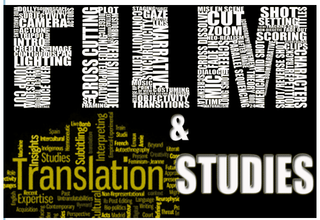

अध्ययन

प्रवीण सिंह चौहान
मुंबई

हिंदी सिनेमा पर अमेरिकन फिल्मों का प्रभाव

हमारे भारतीय सिनेमा ने अपने गौरवशाली सौ वर्ष पूर्ण कर लिये है लेकिन इन सौ वर्षों के सफर में भारतीय सिनेमा कहाँ तक प्रगति कर पाया इस पर मंथन करना आवश्यक है। यहाँ पर हम इन सौ सालों में भारतीय सिनेमा पर अमेरिकन सिनेमा के प्रभाव पर चर्चा करेंगे। यह बात सर्वविदित है कि भारतीय सिनेमा पर किसी न किसी रूप में प्रारंभ से ही विदेशी फिल्मों का प्रभाव रहा है जो आज तक क़ायम है। हम यहाँ पर केवल अमेरिकन फिल्मों के संदर्भ में ही चर्चा करेंगे क्यूंकि भारतीय सिनेमा पर जिसका सबसे अधिक प्रभाव दिखाई पड़ता है वो अमेरिकन फिल्मों का ही है। हमें यह भी विदित है कि भारत मे सिनेमा का आगमन ही अमेरिका से हुआ है और सिनेमा के तकनीकी और कला जुड़े हुए सभी कार्य-व्यवसाय या कहें सिनेमा की ए बी सी डी भी हमने अमेरिका से ही सीखा है।

भारतीय सिनेमा पर किसी न किसी रूप में प्रारंभ से ही विदेशी फिल्मों का प्रभाव रहा है जो आज तक क़ायम है। हमें यह भी विदित है कि भारत मे सिनेमा का आगमन ही अमेरिका से हुआ है और सिनेमा के तकनीकी और कला जुड़े हुए सभी कार्य-व्यवसाय या कहें सिनेमा की ए बी सी डी भी हमने अमेरिका से ही सीखा है।

यदि सिनेमा के इतिहास पर एक नजर डाला जाए तो शुरू-शुरू में फ्रांस की पाथे कंपनी का थोड़ा बहुत हस्तछेप रहा था लेकिन आगे चलकर सिनेमा व्यवसाय के क्षेत्र में अमेरिका का आधिपत्य क़ायम हो गया जो वर्तमान में भी बना हुआ है। अन्य देशों की तुलना में हमारे भारत में अमेरिका की फिल्मों का सबसे ज्यादा आगमन हुआ । अमेरिका के फिल्म व्यवसायी ने अन्य देशों की फिल्मों को भारत में आने ही नहीं दिया क्यूंकि उन्हे भारत में सिनेमा के व्यवसाय का सुनहरा भविष्य उसी समय नजर आ गया था। अन्य देशों के सिनेमा को भारत ना आने देने की व्यावसायिक राजनीति की स्थिति वर्तमान में भी काफी हद तक बनी हुई है। इस प्रकार अमेरिका से सभी नए सिनेमा प्रयोग, तकनीक, स्टूडिओ व्यवस्था, सितारा प्रणाली (स्टार सिस्टम) यहाँ तक कि कहानी आदि का भारत में आगमन होता रहा और भारत उसका अनुशरण करता चला आया।

वर्तमान में निर्मित होने वाले भारतीय व्यावसायिक सिनेमा (सिनेमा जो व्यवसाय हेतु बनाया गया हो) पर अमेरिकन सिनेमा का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। बीच में एक समय ऐसा भी आया जब हमारी कला फिल्मों ने इस अमेरिकन प्रभाव को खत्म करने का प्रयास किया लेकिन वो ज्यादा समय तक अपना प्रभाव नहीं दिखा पाई। वास्तव में अगर देखा जाये तो हमारी कला और समानान्तर सिनेमा पर भी यूरोपियन प्रभाव था। भारतीय सिनेमा पर अमेरिकन सिनेमा या हॉलीवुड के प्रभाव का अध्ययन करने से पहले हम एक हल्की सी नजर डालते है भारतीय सिनेमा और अमेरिकन सिनेमा पर।

भारतीय सिनेमा :- हमारा भारतीय सिनेमा विश्व का सबसे वृहद और विविधता वाला सिनेमा उद्योग है। हर साल नौ सौ से भी अधिक फिल्मों का निर्माण करने वाला हमारा भारतीय सिनेमा उद्योग भारत को विश्व का सबसे ज्यादा फिल्मों का निर्माण करने वाले देश का दर्जा दिलाता है। हमारा भारतीय सिनेमा कई प्रकार में विभाजित है। मुख्यतः वर्तमान में प्रचलित हिंदी सिनेमा जिसे व्यावसायिक सिनेमा या मुंबइया सिनेमा भी कहा जाता है। इसके अलावा स्थानीय (रिजनल) सिनेमा, कला सिनेमा, डायस्पोरा सिनेमा तथा समानान्तर सिनेमा।

अब हम एक नजर डालते हैं अमेरिकन सिनेमा पर जिसे जनसाधारण में हालीवुड के नाम से

जाना जाता है।

अमेरिकन सिनेमा :- अमेरिकन सिनेमा का विश्व सिनेमा पर बहुत ही गहरा प्रभाव रहा है, यहाँ तक कि प्रारंभिक बीसवी शताब्दी से ही। अमेरिकन सिनेमा के इतिहास को चार प्रमुख अवधि में बांटा जाता है- मूक फिल्मों की अवधि, क्लासिकल हालीवुड सिनेमा, न्यू हॉलीवुड और वर्तमान में चल रहा कंटेम्परेरी अवधि।

द बर्थ ऑफ ए नेशन :- पाश्चात्य सिनेमा की बात हो तो डी. डब्ल्यू. ग्रिफिथ का जिक्र करना आवश्यक हैं जिन्होंने फिल्मी व्याकरण के विकास में बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान दिया। मै यहाँ पर डी. डब्ल्यू. ग्रिफिथ द्वारा निर्देशित फिल्म 'द बर्थ ऑफ ए नेशन'(1915), की चर्चा करना आवश्यक मानता हूँ क्यूंकि इस फिल्म ने ही फिल्मी भाषा के विकास क्रम को आगे बढ़ाया और फिल्मी भाषा को विकसित किया।

इसने फिल्म तकनीकी के कई नए प्रयोगो को जन्म दिया उदाहरण के लिए- पैनोरमिक लॉन्ग शॉट, आइरिस इफैक्ट, स्टिल शॉट, रात में की गई फोटोग्राफी, पैनिंग कैमरा शॉट आदि। इस फिल्म के लड़ाई के भव्य दृश्य भी सिनेमा के इतिहास में बहुत प्रसिद्ध है जिसे कई एक्स्ट्रा कलाकारों के साथ फिल्माया गया था और इतनी चालाकी से फिल्माया गया था कि यही एक्सट्रा कलाकार सिनेमा के पर्दे पर हजारों की भीड़ में तब्दील हो जाते हैं। फिल्म के कई महत्वपूर्ण दृश्यों को एक विशेष रंग में टिंट किया गया था। उदाहरण के लिए युद्ध के दृश्यों को लाल रंग से टिंट किया गया था। तीन घंटे दस मिनट की अवधि वाली इस फिल्म का सम्मोहन वर्तमान में भी उतना ही बरकरार है जितना कि उस समय था। इसके कई सारे दृश्य हमारी फिल्मों में आसानी से देखे जा सकतें हैं। 'द बर्थ ऑफ ए नेशन' का प्रभाव आज भी हमारी फिल्मों नजर आता हैं।

वास्तव में अमेरिकी सिनेमा हमारे लिए सिनेमा की वो जीती जागती किताबें थी, जिससे हमने ध्वनि व तस्वीरों के द्वारा कहानी कहने की कला सीखी, फिल्मी भाषा का क ख ग सीखा। अमेरिकी फिल्मों से प्रभावित होकर कई फ़िल्म निर्देशकों और अभिनेताओं ने भारतीय सिनेमा में पदार्पण किया और भारतीय सिनेमा को एक नई पहचान दिलाई। सुनने में यह बात भले अजीब लगे पर यह सच है कि अमेरिकन सिनेमा भारतीय सिनेमा की जड़ों में है। हमारा फिल्म उद्योग जिसे हम बॉलीवुड कहते है यह नाम ही अमेरिकी सिनेमा उद्योग से पैदा हुआ है। भले ही सिनेमा की हमारी एक परंपरा रही है परंतु अमेरिकन सिनेमा हमारी सिनेमा के नीव मे है।

पूर्व परिप्रेक्ष्य में :- ऐसा भी नहीं है कि भारतीय सिनेमा पर केवल अमेरिकन सिनेमा का ही प्रभाव रहा है। पिछले दशकों में क्लासिक पाश्चात्य साहित्य, विलियम शेक्सपियर, इतालवी नवायथार्थवादी सिनेमा, जर्मन अभिव्यक्तिवाद आदि भी भारतीय सिनेमा को प्रभावित करते रहें है और उनके प्रभाव के फलस्वरूप भारत में बहुत ही महत्वपूर्ण फिल्में बनती रही हैं। उदाहरण के लिए विमल राय की दो बीघा ज़मीन पर दे सीका और रोबतो रोजलिनी का स्पष्ट प्रभाव नजर आता है।

अमेरिकी फिल्मों के कथानको को भारतीय सिनेमा इसलिए भी आसानी से अपना लेता है क्योंकि अमेरिका और भारत दोनों देशों के सिनेमा में उनकी अपनी संस्कृति पर कोई विशेष आग्रह नहीं रहा है। और तो और हमारे बॉलीवुड ने तो भारतीय संस्कृति से इतर अपनी एक नई संस्कृति को ही जन्म दे दिया है। वैसे अगर देखा जाए तो अमेरिकी और भारतीय दर्शकों की पसंद में बहुत विविधता है लेकिन यह तथ्य गिने चुने भारतीय निर्देशकों के समझ में आती है। ऐसा इसलिए भी कहा जा सकता है क्यूंकि पिछले कई वर्षों से लगातार अमेरिकी फिल्मों के रिमेक भी बनाए जा रहें है लेकिन उनकी व्यावसायिक और कलात्मक सफलता का स्तर कुछ ख़ास नही रहा है। विमल रॉय, सत्यजित रे और गुलजार जैसे कुछ ही निर्देशको को इस बात की समझ थी और उन्होने विदेशी कथानकों को भारतीय दर्शकों और परिवेश के अनुरूप सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया।

पश्चिमी संस्कृति, साहित्य और सिनेमा का हमारी हिंदी सिनेमा के द्वारा अनुशरण करने की ये परंपरा कई पीढ़ियों से चलती आ रही है लेकिन व्यावसायिक सिनेमा के परिप्रेक्ष्य में देखा जाये तो पिछले कुछ दशकों में यह प्रभावित होने की प्रक्रिया ने काफी ज़ोर पकड़ लिया है। ये फिल्में वास्तविक या मूल फिल्मों की जस की तस नकल नहीं कही जा सकती है क्यूंकि उसमे भारतीय दर्शको

के हिसाब से परिवर्तन किया जाता है। आमतौर पर देखें तो हमारी हिंदी फिल्में एक साथ कई हॉलीवुड की फिल्मों से प्रभावित नजर आती हैं। हिंदी फिल्म के निर्माताओं का अमेरिकी सिनेमा की ओर मुख़ातिब होना इस ओर इंगित करता है कि हमारे बालीवुड मे स्तरीय और मूल पटकथा लेखन की परंपरा समाप्ति के कगार पर है। एक समय था जब फिल्म संगीत पर विदेशी धुनो से प्रभावित होने का या हूबहू नकल होने का आरोप लगाया जाता था लेकिन धीरे-धीरे यह आरोप फिल्म निर्माण करने वाली कंपनियों पर भी लगने लगा।

निम्न सूची मे कुछ हिंदी फिल्मों का नाम दिया गया है अगर इन फिल्मों के देखें तो यह आसानी से समझ आ जायेगा कि इन पर विदेशी फिल्मों का या तो प्रभाव था या हूबहू नकल हैं :-

भारतीय फिल्में	विदेशी फिल्में
राजू चाचा	The Sound of Music
शोले	Once Upon a time in the west
क्योंकि मै झूठ नहीं बोलता	Lier Lier
अजनबी	Consenting Adults
चैंपियन	Mercury Rising
फर्ज़	Lethal Weapon
हमराज	A Perfect Murder
दीवानगी	Primal Fear
कसूर	Jagged Age
प्यार तूने क्या किया	Fetal Attraction
कांटे	Reseruire Dogs
हम किसी से कम नहीं	Unlies this
जो जीता वही सिकंदर	Breaking Away
गुलाम	On the water front
प्यार तो होना ही था	French Kiss
मोहब्बतें	Dead poet's society
दुश्मन	Eye for an eye
सिर्फ तुम	You have got mail
बिच्छू	Leyan
जोश	West side story
हर दिल जो प्यार करेगा	While you were sleeping
ढाई अक्षर प्रेम के	Heart condition
कहीं प्यार न हो जाए	The wedding singer
मन	An affair to remember
संघर्ष	The silence of the labs
कयामत	Classic kape fear
अंदर बाहर	48 hours
सत्ते पे सत्ता	Seven bridge for seven brother

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में :- भारतीय सिनेमा के लिए ये अत्यंत दुःखद परंतु कड़वा सच है कि छात्र और युवा विशेषकर के महानगरों मे रहने वाले युवा अपनी हिंदी फिल्मों की अपेक्षा हॉलीवुड की फिल्मों को अधिक पसंद करने लगे हैं। युवा दर्शकों की पसंद में इस बदलाव की क्या वजह हो सकती है? अगर गौर किया जाए तो इसका एक मुख्य कारण सामने आता है– हॉलीवुड की नकल। हमारे भारतीय निर्माता हॉलीवुड की फिल्मों की स्क्रिप्ट तो हूबहू उठाते ही है, और उसके साथ-साथ भारतीय परिवेश के हिसाब से उसमे थोड़ा बहुत परिवर्तन भी नहीं करते है। और तो और अगर उनके किसी किरदार को उठाते है तो उसके परिवेश यहाँ तक कि उसके कपड़ो को भी वैसे का वैसा रखते है। अब ऐसे में हमारा युवा दर्शक वर्ग मूल फिल्म ही क्यूँ न देखे जो भारतीय संस्करण से कई गुना समृद्ध होती हैं। यह बात सबके संज्ञान मे होगी कि अनुराग बासु की फिल्म 'बर्फी' को इसी नकल के

चलते आस्कर नामांकन से वापस लौटा दिया गया था। भारत के पास सिनेमा की अपनी एक धरोहर रही है ऐसे में ये हमारे लिए बहुत ही शर्म की बात है।

नकल सिर्फ हम ही नहीं करते हॉलीवुड वाले भी नकल करते है- एशियाई और यूरोपियन सिनेमा की लेकिन उनमे और हमारे नकल करने में जमीन आसमान का अंतर है । वो परफेक्शन की हद तक रूपान्तरण करते है और यह इतना परफेक्ट होता है कि उनका मौलिक हो जाता है। उनकी भाषा इतनी सशक्त होती है कि उसको नकल कहने से पहले कई बार सोचना पड़ता है। हमारे साथ समस्या भाषा की नहीं है। भाषा तो हमारे पास भी है, समस्या भाषा के उपयोग की है। हमने केवल बुरे की नकल की जो अच्छा था उसकी ओर ध्यान ही नही दिया। इसके अलावा भारतीय फ़िल्मकारों में ईमानदारी की कमी दिखाई देती है । उनके पास मानव संसाधन को उपयोग करने की क्षमता या कला ही नहीं है । कुछ फ़िल्मकार कभी-कभी अपनी नाकामयाबी का सारा ठीकरा फिल्म के बजट पर फोड़ देते हैं। यह बात किसी तरह से हज़म नहीं होती है क्यूंकी एक ओर गरीबी का रोना और दूसरी ओर दुनिया का सबसे ज्यादा संख्या में फिल्म निर्मित करने वाला देश होना, ये आपस में विरोधाभाष पैदा करता है।

...और अंत में :- आने वाला कल और बीता हुआ कल हमेशा ही हमें सुखद प्रतीत होता है। भले ही आज हम लोग प्रगति और विकास के युग में जी रहें हों लेकिन बीते हुए कल के सम्मोहन से स्वयं को विलग नहीं कर पाते । अमेरिकन सिनेमा हमारा बीता हुआ कल ही तो है जिसके मोह से आज भी हम नहीं बच पा रहे है। सृजन के प्रति हमारी भूख इतनी गहरी है कि जल्दी-जल्दी उसे पूरा करना बहुत मुश्किल हो जाता है। ऐसे में हम हॉलीवुड से उधार लेकर अपनी सृजनात्मक भूख मिटाने का प्रयास करते हैं।

हॉलीवुड की फिल्मों की रीमेक का समर्थन करने वाले और उसका विरोध करने वालों के पास उनके अपने-अपने अलग-अलग विचार व तर्क हैं। तथ्य यह है कि प्रत्येक देश की एक सांस्कृतिक धरोहर होती है और सिनेमा संस्कृति को जीवित रखने और उसे पीढ़ी दर पीढ़ी आगे ले जाने का सबसे श्रेष्ठ माध्यम है । अमेरिकन सिनेमा सारे विश्व पर एक तरह का बहुत बड़ा सांस्कृतिक प्रहार है जिससे अपनी मूल संस्कृति को खतरा उत्पन्न हो सकता है। अतः सभी देशों को इस प्रहार से बचते हुए अपनी अपनी सिनेमाई संस्कृति का संरक्षण करना चाहिए। हर राष्ट्र के सिनेमा में उसकी अपनी संस्कृति किसी न किसी रूप में विद्यमान रहती ही है और हर हाल में उसकी रक्षा होनी ही चाहिए। वास्तव में अब इस बात पर विचार करने का समय आ चुका है कि अपनी संकृति, साहित्य को नज़रअंदाज़ कर दूसरे देशों की फिल्मों की फ्रेम दर फ्रेम नकल उतारना कहाँ तक उचित है? सौ सालों की यात्रा में हमारा सिनेमा कितनी प्रगति कर सका है? बात कुछ भी हो लेकिन हमें अपना सिनेमा चाहे कैसा भी हो उसे संरक्षित करते हुए और उसमे सतत सुधार करते हुए चलना चाहिए तभी सिनेमा की यात्रा सफल कही जा सकती है।

व्यक्तित्व

विजय राघव रेड्डी

पुस्तक- 'भीमसेन निर्मल' के सौजन्य से

नैरंतर्य लेखन और अनुवाद के प्रतिमूर्ति : प्रो. भीमसेन

अनुवाद तो जैसे भीमसेन निर्मल जी के जीवन का ध्येय-सा था| वे मातृभाषा तेलुगु एवं हिन्दी दोनों भाषाओं में एम.ए. उपाधिधारी एवं दोनों साहित्यों के मर्मज्ञ विद्वान थे| अनुवाद कार्य में वे क्यों और कैसे प्रवृत्त हुए इसका मार्मिक कारण वे अक्सर बताया करते थे| एक बार बातों में वंशीधर विद्यालंकार ने, जिनका नाम वे सम्मान के साथ लिया करते हैं, कहा की हिन्दी साहित्य की तुलना में तुम्हारा साहित्य कैसे महत्वपूर्ण है, उसमें क्या है? कुछ अनुवाद तो कर के लाओ सही| गुरूजी की बात निर्मल जी को छू गई| वे अगले दिन किसी विशिष्ट रचना का हिंदी अनुवाद करके गुरुजी को दिखने ले गए| गुरुजी ने अनूदित पाठ को पढ़कर उन्हें शाबाशी ही नहीं, अपितु उसे संपादित कर अपने द्वारा संपादित एक पत्रिका में प्रकाशित भी किया| तब से निर्मल जी ने गांठ बांध ली तेलुगु की उत्कृष्ट रचनाओं का अनुवाद कर हिंदी जगत को तेलुगु साहित्य-परिमल का परिचय कराया जाए| क्या गद्य और क्या पद्य, तेलुगु साहित्य की हर विधा की कुछ श्रेष्ठ कृतियों का आपने अनुवाद किया| निर्मल जी की मृत्यु पर अपनी श्रद्धांजली अर्पित करते हुए पोट्टिश्रीरामुलु तेलुगु विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य जी.वी. सुब्रह्मण्यम सही उद्गार व्यक्त किया कि जीतने अनुवाद प्रो. निर्मल जी ने किए है, उतने किसी और तेलुगु भाषी ने संभवत: नहीं किए होगे|

निर्मल जी ने 32 कृतियों का तेलुगु से हिंदी में और 22 कृतियों का हिंदी से तेलुगु में अनुवाद किया| तेलुगु से हिंदी में अनूदित 32 कृतियों में काव्य कृतियाँ है। इनमें डॉ. सी. नारायण रेड्डी कि कृति 'विश्वंभरा' है जो भारतीय ज्ञानपीठ से पुरस्कृत है और 'प्रपंचपदी' नामक प्रयोगात्मक मुक्तक काव्य है जिससे प्रभावित होकर मणिपुरी के कवि 'लनचेनबा मीते" ने मणिपुरी मे पाँच पंक्तियो के नए छंद विधान प्रवेश करते हुए 'येडुलु येदुलुबदा' नामक काव्य कि रचना कर तेलगु काव्य पौधे को मणिपुरी काव्य वाटिका मे रोप दिया । हिंदी के माध्यम से तेलगु काव्य-सौरभ को मणिपुर पहुंचाने का श्रेय प्रो. निर्मल को जाता है।

प्रो. निर्मल अपनी द्विभाषिक क्षमता का सफलतापूर्वक प्रयोग करने का निरंतर प्रयास करते रहे। हिंदी से अपने 22 कृतियो का तेलगु में अनुवाद किया जिसमें डॉ. नगेन्द्र कृत 'रस सिधान्त' ग्रंथ भी सम्मलित है। लेकिन आपने किसी हिंदी काव्य कृति का तेलगु में अनुवाद प्रस्तुत नहीं किया। वे भरसक प्रयत्न करते थे कि अनूदित पाठ की भाषा शुद्ध हो, मुहावरेदार हो और देशीय भाषियों के लिए स्वीकार्य हो और वे यह भी समझते थे कि सीखी हुई भाषा मातृभाषावत दक्षता हासिल करना मुश्किल है। इसलिए तो अनुवाद करते समय कहीं किसी शब्द मे अटक जाते है तो उस पर घंटो सोचते और जानकार लोगों से संपर्क भी करते। जब खुद संतुष्ट हो जाते तब कहीं आगे बढ़ते। इन सब प्रयासो के बाद भी, उनकी हिंदी अनूदित रचनाओं की समीक्षा में कोई हिंदी भाषी समीक्षक भाषागत त्रुटियों की ओर संकेत कर देता है तो वे बिना आवेश में आए इतना कह देते कि, "वास्तव में हमे इतर भाषाओं से अपनी मातृभाषा तेलगु में अनुवाद कार्य संपन्न करना चाहिए था। लेकिन कोई हिंदी भाषी तेलगु से हिंदी मे अनुवाद नहीं करता , इसलिए हमें यह भी करना पड़ रहा है। स्वाभाविक है कि मेरे हिंदी अनुवाद में तेलगु का प्रभाव हो|" दोनों भाषाओं में कुल मिलाकर 54 कृतियों का अनुवाद करने वाले प्रो. निर्मल सही अर्थ में सव्यसाची के समान थे। उन्हें दर्जनो प्रतिष्ठित संस्थाओ से सर्वोच्यतम अनुवादक के पुरस्कार प्राप्त हुए है। पोट्टिश्रीरामलूलू तेलगु

संस्कृति का निर्माता समाज है और अभिव्यक्ति का माध्यम भाषा। तात्पर्य यह कि संस्कृति का सीधा संबंध समाज और उसकी भाषा से है। एक देश की भौगोलिक परिधि में विभिन्न संस्कृतियाँ विकसित एवं पल्लवित होती हैं। और लोकतंत्र में सभी संस्कृतियों को समान रूप से विकसित होने का अधिकार है।

विश्वविद्यालय के द्वारा उन्हें 31 दिसंबर 2003 को अपनी हिंदी से तेलगु में अनूदित रचना ‘काकुल द्विपांतरवासम’ [साहित्य अकादमी , दिल्ली प्रकाशन] पर अनुवाद पुरस्कार प्राप्त करना था, लेकीन उससे एक दिन पहले 30 दिसंबर को ही वे इस दुनिया से चले गए। उनकी जगह उस दिन पुरस्कार प्राप्त करने उनकी पुत्री डॉ. वाणी ने कहा कि, “मृत्यु से दो दिन पहले जब उन्हें पुरस्कार की सूचना दी गयी तो वे बहुत प्रसन्न हुए। पुरस्कार तो प्राप्त नहीं कर सके लेकीन इस सव्यसाची अनुवादक को अंतिम सुखद समाचार भी अनुवाद से संबंधित ही रहा।

जीवन वृत्त

नाम – भंडारम भीमसेन ज्योस्युलु ‘निर्मल’
जन्म : 30 नवंबर 1930 (मेदक आं.प्र.)
शिक्षा : एम.ए., पीएच.डी. (हिंदी), एम.ए. (तेलुगु)।
अलंकृत पद : आचार्य,हिंदी विभाग, उ. वि. वि.,
अध्यक्ष, हिंदी विभाग, उ. वि. वि.,
एमिरेट्स आचार्य, यू.जी.सी.
अध्यक्ष, दक्षिणांचलीय साहित्य समिति, हैदराबाद।
रचना कार्य : मौलिक रचनाएँ 13
तेलुगु से हिंदी अनुवाद 32
हिंदी से तेलुगु अनुवाद 22
संपादित रचनाएँ 12

व्यक्तित्व

प्रमोद कुमार पाण्डेय
बलिया, उत्तरप्रदेश

प्रकाश झा: व्यक्तित्व व कृतित्व

प्रकाश झा एक भारतीय फिल्म निर्माता-निर्देशक और पटकथा लेखक हैं, जो अपनी राजनीतिक व सामाजिक-राजनैतिक फिल्मों- दामुल (1984), मृत्युदंड (1997), गंगाजल (2003), अपहरण (2005) और राजनीति (2010) के लिए सबसे ज्यादा जाने जाते हैं। इसके अलावा वो राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीतने वाली डाक्यूमेंटरी जैसे- फेस आफ्टर स्टोर्म (1984) और सोनल (2002) के निर्माता भी हैं। वर्तमान में वो 'प्रकाश झा प्रोडक्शन्स' नामक प्रोडक्शन कंपनी चलाते हैं।

-: प्रारंभिक जीवन और शिक्षा :-

प्रकाश झा का जन्म और पालन पोषण भारत में बिहार के पश्चिमी चंपारन के शिकारपुर नरकटियागंज में हुआ। उनकी स्कूली शिक्षा सैनिक स्कूल तिलाया जिला कोडेर्मा और केंद्रीय विद्यालय न.1, बोकारो स्टील सिटी (जो अब झारखंड में है) में हुई। उन्होने अपना बचपन बोकारो स्टील सिटी मे ही बिताया और बाद में उन्होने रमजास कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय से भौतिकी में बी.एस सी.आनर्स किया यद्यपि उन्होने एक वर्ष बाद ही कालेज छोड़ दिया और बॉम्बे जाने का निर्णय लिया और एक चित्रकार बन गए। वो जे जे स्कूल ऑफ आर्ट की तैयारी के दौरान उन्हे धर्मा फिल्म की शूटिंग देखने का मौका मिला और तब उन्होने फिल्म निर्माण में जाने का निर्णय लिया। जल्द ही 1973 में सम्पादन मे कोर्स करने के लिए उन्होने फिल्म एंड टेलीविज़न इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (FTII)पुणे में प्रवेश ले लिया। छात्र मुद्दों की वजह से संस्थान कुछ समय के लिए बंद हो गया था इसलिए वो बाम्बे चले आए और काम करना प्रारम्भ कर दिया और 1976 में अपना कोर्स पूरा किया।

> **प्रकाश झा की फिल्मे हमेशा समसामयिक होती हैं और समसामयिक ही नहीं बल्कि मध्य वर्गीय भारत में स्वीकार्य बातचीत के स्वर को भी प्रतिबिम्बित करती हैं। और शायद यही कारण है कि झा की फिल्मे भारत के मध्यम वर्ग के स्वर से मेल खाती हैं भारी सफलता प्राप्त करती हैं।**

-: कैरियर :-

1974 में अपने कोर्स के बीच में ही उन्होने स्वतंत्र रूप से फिल्मों में काम करना प्रारंभ कर दिया था और 1975 में अपनी पहली डॉक्यूमेंटरी 'अंडर द ब्लू' बनाई और अगले 8 वर्षों तक ऐसा करते रहे।

इस समय के दौरान उन्होने कुछ राजनीति से प्रेरित डॉक्यूमेंटरी बनाई जैसे 'बिहार शरीफ रोइट्स', 'फेसेस आफ्टर स्ट्रोम' इसने बड़ी तेजी से लोगो का ध्यान खीचा और अपनी रिलीज के 4 -5 दिनों बाद प्रतिबंधित कर दी गई यद्यपि बाद में इसने बेस्ट नॉन फीचर फिल्म ऑफ द ईयर का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किया।

1983 में उन्होने हिप हिप हुर्रे से फीचर फिल्म निर्देशक के रूप में अपना पदार्पण किया। इस फिल्म की स्क्रिप्ट गुलज़ार ने लिखी थी और राज किरण और दीप्ति नवल मुख्य भूमिका में थे। और उनकी अगली फिल्म नें सबसे ज्यादा ध्यान खींचा वो थी दामुल (1984) जिसने बेस्ट फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार जीता और 1985 में बेस्ट मूवी के लिए फिल्मफेयर क्रिटिक्स अवार्ड मिला। फिल्म बिहार के बंधुआ मजदूरों के जीवन पर आधारित थी।

1986 में उन्होने परिणति का निर्देशन किया जो विजय दान देथा की कहानी पर आधारित थी। 1980 के दशक में उन्होने चार टेलीविज़न सीरीज का निर्माण किया जिसमे 13 भागों मे क्लासिकल डांसेस फ्रोम इंडिया, और मुंगेरी के हसीन सपने शामिल हैं जिसमे रघुवीर यादव ने

मुख्य भूमिका निभाई थी।
1989 में उन्होने फिल्मों से विराम ले लिया और चार वर्षों के लिए बिहार चले गए। इन चार वर्षो के दौरान उन्होने दो संस्थाओं की स्थापना की, अनुभूति जो उस क्षेत्र के युवा लोगो को फिल्म निर्माण की ट्रेनिंग देती थी और संवेदन जो चंपारण में लघु व कुटीर उद्योग को बढ़ावा देती थी।
फिल्मों मे दूसरी पारी की शुरुआत में उन्होने जिस फिल्म से आगाज़ किया वो थी- बंदिश (1996)जिसमे जैकी श्रोफ और जूही चावला मुख्य भूमिका में थे। इसके बाद मृत्युदंड (1997) गंगाजल, अपहरण का लगातार निर्माण होता गया। इन वर्षों के दौरान उन्होने 25 से भी ज्यादा डॉक्यूमेंटरी, 9 फीचर फिल्म, 2 टेलीविज़न फीचर, और तीन टेलीविज़न सीरीज का निर्माण किया और यह क्रम लगातार चला आ रहा है। उनकी अधिकांश फिल्मे सामाजिक बुराइयों को दिखाती हैं।

-: राजनीति से जुड़ाव :-

अपने लोकसभा क्षेत्र चंपारण से 2004 में उन्होने लोकसभा का चुनाव लड़ा और हार गए। 2009 में वो फिर से लोक जनशक्ति पार्टी के उम्मीदवार के रूप में पश्चिमी चंपारण से चुनाव हार गए। प्रकाश झा का विवाह फिल्म अभिनेत्री दीप्ति नवल से हुआ है।

कृतित्व

1982 से लेकर अब तक प्रकाश झा ने लगभग 16 फिल्मों का निर्माण किया और उनकी प्रत्येक फिल्म चाहे वो फीचर हो या डाक्यूमेंटरी, सामाजिक समस्या – राजनीति,समाज में महिलाओं,बंधुआ मजदूर,सामाजिक रूप से अस्वीकार्य प्रेम,आरक्षण आदि के इर्द-गिर्द लिखी गई हैं। किसी मुख्य धारा के बॉलीवुड के निर्देशक के बारे में यह सोचना बहुत ही कठिन है जिसे केरल के संस्कृत थिएटर फॉर्म पर (कूडियट्टम 1986) डाक्यूमेंटरी बनाने के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिला हो।
उनकी एक फीचर "मृत्युदंड"(1997) में एक बहुत ही शानदार दृश्य है जिसमे चंद्रवती (शबाना आज़मी) अपने विवाह से इतर गर्भवती हो कर अपने ससुराल आती है और यह पूछने पर कि किसकी औलाद है ? उनका जवाब होता है- मेरी।
मृत्युदंड महिलाओं के प्रति सहानुभूतिक, निचले वर्ग को जीत दिलाती एक कट्टरपंथी फिल्म है जो बहुत ज्यादा देखी गई और बहुत लोकप्रिय हुई। यह फिल्म जन-सामाजिक ढांचे को चुनौती देने और उस पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए निजी और पारिवारिक परिदृश्य का उपयोग करती है। कई मुश्किलों के बावजूद तीन पीड़ित औरतें शीर्ष पर आ जाती हैं-अप्रत्याशित और अद्भुत।
प्रकाश झा की पहले और बाद की फिल्मों में भेद को आसानी से देखा जा सकता है। उनके पुराने कार्यों में समाज में सत्ता के लिए अपमानजनक चुनौतियों को दिखाया गया है; बाद के कार्य ये प्रदर्शित करते हैं कि सिस्टम के साथ क्या गलत है या हो सकता है।
प्रकाश झा की फिल्मे हमेशा समसामयिक होती हैं और समसामयिक ही नहीं बल्कि मध्य वर्गीय भारत में स्वीकार्य बातचीत के स्वर को भी प्रतिबिम्बित करती हैं। और शायद यही कारण है कि झा की फिल्मे भारत के मध्यम वर्ग के स्वर से मेल खाती हैं भारी सफलता प्राप्त करती हैं।
प्रकाश झा की फिल्मे एक बड़ी दुनिया की बात करती हैं और इसके लिए हमेशा आस-पास के परिवेश, लोक व निजी चीजों का इस्तेमाल किया है। दामुल (1984) ग्रामीण बिहार में अनुचित श्रम प्रथाओं , प्रवास और जाति की राजनीति को उजागर करने के लिए एक बंधुआ मजदूर की जिंदगी को दिखाता है। परिणति (1986) मानवीय लोभ को दिखाने के लिए एक लोक कथा का उपयोग करता है। लेकिन समाज को चुनौती देने, जहां वो निजी चीजों का उपयोग करते हैं वो है उनकी बाद की फिल्मे।जहां वो ये दिखते हैं कि हम किस प्रकार से समाज में सम्मिलित होते हैं या हो सकते हैं।
1970 और 80 के दशक में राजनीति और मध्यम वर्गीय बातचीत, भारत के आधुनिकीकरण, ' गरीबी कम करने और अन्याय से लड़ने पर केंद्रित थे। गरीबी हटाओ!1970 के दशक में इंदिरा गांधी का नारा था। मंडल आयोग की 1979 में स्थापना हुई और 1980 के दशक मे इसने कार्य किया। 1990 के दशक में भारत को लेकर मध्यम वर्ग में निराशावाद बड़े पैमाने पर व्यक्त किया गया था। ' ब्रेन ड्रेन ' इस समय एक लोकप्रिय मुहावरा बन गया।
राष्ट्र निर्माण के प्रयोग के दौरान राज्य और समाज एक दूसरे से अजीब अनुगामी थे। जबकि कई बार राज्य दोषी होता था, माध्यम वर्ग तब भी सोचता था कि राज्य चुनौतीपूर्ण पारंपरिक समाज में मददगार था। और इसलिए भी मृत्युदंड मे जिला कलेक्टर वह

पहला व्यक्ति बनता है जो सभी शक्तिशाली पुरुषों को चुनौती देता है।

अब हाल ही में जबकि भारत में मध्यम वर्ग के बातचीत का विषय बदल चुका है, मान्यता यह है कि समग्र तंत्र अब जैसा है सही है, राज्य सही हैं, आर्थिक उन्नति वही है जो हम चाहते थे। हमारी व्यापक भावना यह है कि हम सही जगह पर है और सही दिशा की ओर बढ़ रहे हैं।

झा की फिल्में भी इन बदलावों को प्रतिबिंबित करती हैं। आरक्षण (2011) जाति आधारित आरक्षण का एण्ट्रोगेशन (सकारात्मक या नकारात्मक)मात्र नही है बल्कि एक ऐसी उदाहरणात्मक कहानी है कि किस प्रकार हम निःस्वार्थ और रुचि पूर्वक गरीबों में शामिल हो सकते हैं।. बेशक हमें केवल अपदस्थ कॉलेज के प्रिंसिपल प्रभाकर की तरह निस्वार्थ होने की जरूरत है जब वैसे भी खोने के लिए ज्यादा कुछ नहीं है।

प्रकाश झा -फिल्मों का परिचय

निर्देशन

2013 सत्याग्रह।
2012 चक्रव्यू ।
2011आरक्षण ।
2010 राजनीति ।
2005 अपहरण ।
2003 गंगाजल ।
2001राहुल ।
1999 दिल क्या करे
1997 डेथ सेंटेन्स ।
1996 बन्दिश ।
1994 दीदी ।
1990 मुंगेरी लाल के हसीन सपने (टीवी सीरीज)
1990 ट्राईबल फेस्टिवल ।
1989 कथा माधोपुर की ।
1989 परनिती ।
1988 अभिशप्त ।
1988 एन एक्स्प्रेसन ।
1987 एक और इतिहास ।
1987 लूकिंग बैक ।
1986अनादि अनंत ।
1986 क्लासिकल डांस फॉर्म ऑफ इंडिया ; कूडियट्टम (Documentary)
1986 परम्परा ।
1985 दामुल ।
1984 हिप हिप हुर्रे ।
1983 मे आई थिंक , सर । (Documentary)
198 श्रीवत्स्य (Documentary)
1982 डरपोक की दोस्ती । (Short)
1981 फेसेस आफ्टर द स्ट्रोम । (Documentary)
1981 पास दे देउक्स ।(Documentary)

1979 ओड टू अ चाइल्ड । (Documentary)
1978 टोगेदर (Documentary)
1976 रिथम ऑफ आ लैंड एंड इट्स पीपुल (Documentary)

लेखन

2013 सत्याग्रह।
2012 चक्रव्यू ।
2011 आरक्षण ।
2010राजनीति ।
2005 अपहरण । (dialogue) / (screenplay) / (story)
2003 गंगाजल । (screenplay)
1999 दिल क्या करे (story)
1997 डेथ सेंटेन्स । (dialogue) / (screenplay)
1985 दामुल ।

निर्माता

2013 सत्याग्रह। (producer)
2011टर्निंग 30!!! (producer)
2010 राजनीति (producer)
2007 खोया खोया चाँद । (producer)
2007 दिल दोस्ती आदि .. (producer)
2005अपहरण (producer)
1997 डेथ सेंटेन्स । (producer)
1996बन्दिश । (producer)
1989 परनीति । (producer)
1981 पास डी देउक्स (Documentary) (producer)

संपादन

2003 गंगाजल ।
1999 दिल क्या करे ।
1997 डेथ सेंटेन्स ।

अभिनय

2010 राजनीति – राम कुमार सेकसरिया
2009 नमः शिवाय शांतया – बूढ़ा बुद्धिमान उद्घोषक (स्वर)

सेकंड यूनिट सहायक निर्देशन

1973 धर्मा । (द्वितीय सहायक निर्देशक)

उपसंहार

ऐसे बहुत ही कम निर्देशक है जिन्होने सामाजिक मुद्दों पर सफल व्यावहारिक फिल्में बनाई हो और प्रकाश झा उन्ही निर्देशकों में से एक है| फिर चाहे वह दमुल हो (बंधुआ मजदूरों पर) ,मृत्युदंड हो झा की फिल्मों ने इन कठोर सच्चाइयों को दिलचस्प और स्तंभित तरीके से दर्शकों को दिखाया है|

प्रकाश झा अपने फिल्मी कैरियर मे अपने फिल्मों के माध्यम से भारतीय समाज जिसमे गाँव तथा शहरी क्षेत्र दोनों शामिल है उनका यथार्थवादी विश्लेषण बखूबी किया है। प्रकाश झ एक स्वयं राजनीतिक व्यक्ति है इस हिशाब से देखे तो उनकी राजनीतिक समझ काफी हद तक मजबूत है। प्रकाश झा एक बार पश्चिमी चंपारण बिहार से लोकसभा का चुनाव जे. डी. यू . लड़ चुके है हालांकि वो चुनाव हार गए थे। लेकिन कोशिश उनका अभी भी बरकरार है वर्तमान चुनाव 2014 लोकसभा मे वो दोबार लोकसभा प्रत्यासी के रूप मे दिखेंगे। प्रकाश झा समाज के कई मुद्दो पर फिल्मे बनाई है दामुल मे जमीदार का दलितो पर अत्याचार दिखाया तो भागलपुर के आंखफोड़ घटना पर आधारित गंगाजल ने दर्शको के खूब वाहवाही बटोरी झा ने मृत्युदंड से स्त्री की एक नयी छवि दर्शको के सामने लायी जिसमे स्त्रियो को अबला के नाम से दूर करने की कोशिश की वही राजनीति के दौरान पूरे देश की राजनीति से दर्शको को अवगत कराने का कार्य किया।

निर्देशक प्रकाश झा हमेशा से ही अपनी सुलझी फ़िल्मो और बेहतरीन निर्देशन के लिए जाने जाते है| 'गंगाजल', 'अपहरण' जैसी सटीक और सफल फ़िल्मो के बाद, झा लाए 'राजनीति'| जैसा के नाम से पता लगता है, 'राजनीति' सत्ता को पाने की जंग और उसके लिए रचे गये षड्यंत्रो की दास्तान है| फिल्म महाभारत और भारतीय राजनीति का शानदार संयोग है और प्रकाश झा ने इसे बेहतरीन तरीके से दर्शकों के सामने रखा है| दर्शक हर पात्र को महाभारत के पात्रों से जोड़ पाते है| यहाँ तक की अंत मे नाना और रणबीर का दृश्य महाभारत की भगवद् गीता की याद दिला देता है|

प्रकाश झा ने अपने फिल्मों के माध्यम भारत के युवा पीढ़ी के लिए एक नए सोच उत्पन्न करने के लिए कई एसे मुद्दे अपने फिल्मों के माध्यम से दे दिये है कि अब के युवा समाज तथा राजनीति के प्रति काफी कुछ सोच सकते है और उनमे और निखार लाकर देश के हित मे कार्य कर सकते है।

दलित समाज का फिल्मांकन : कल और आज

संकेतवैज्ञानिक संदृष्टि

शोध

मेघा दिलीप आचार्य

पी-एच.डी. हिंदी(अनुवाद प्रौद्योगिकी)

acharyamegha20@gmail.com

• सारांश

सिनेमा का क्षेत्र अपने शुरुआती दौर से ही समाज के सभी मुद्दों, विषयों और समस्याओं का जीवंत चित्रण हमारे समक्ष प्रस्तुत करता आया है| सिनेमा ने भारत जैसे जाति व्यवस्था और ग्राम्य आधारित देश के लोकजीवन को अपना विषय बनाया| हिंदी सिनेमा ने दलितों के प्रश्नों को भी छुआ है| इनकी संख्या भी गिनीचुनी ही हैं जिनमें अछूत कन्या, सुजाता, अछूत, सद्गति जैसी फिल्मे शामिल हैं| यह आरोप लगता रहा है कि फिल्मों में भी दलित समाज हाशिये पर दिखाई देता है| उसकी छवि हमेशा ही डरी सहमी सी पेश की गई| और फिल्मों में जितनी प्रखरता और गंभीरता के साथ दलित वर्ग की समस्याओं और मुद्दों का प्रस्तुतिकरण होना चाहिए वो नहीं हुआ है| परंतु इस बात की ओर भी ध्यान देना आवश्यक है कि हिंदी सिनेमा में दलित की जो दबी कुचली छवि दिखाई देती थी अब वह अपने अधिकारों के प्रति जागरूक पात्र में बदल चुकी है और फिल्म मनोरंजन का माध्यम होते हुए भी सामजिक उत्तरदायित्वों को पूर्ण करता नजर आ रहा है|

प्रमूख शब्द: संकेतविज्ञान, फ़िल्म, दलित|

• परिचय

साहित्य के साथ सिनेमा भी समाज के दर्पण के रूप में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है| सिनेमा का क्षेत्र अपने शुरवाती दौर से ही समाज के सभी मुद्दों, विषयों और समस्याओं का जिवंत चित्रण हमारे समक्ष प्रस्तुत करता आया है| धर्म से लेकर प्रेम तक और मानवी संबंधों से लेकर बेरोजगारी तक, दलित विमर्श से लेकर बीमारी से जूझते लोगो की करूण कहानी फिल्मों के माध्यम से मुखर हुई है| सिनेमा ने भारत जैसे जाति व्यवस्था आधारित, ग्राम्य आधारित देश के लोकजीवन को अपना विषय बनाया| इस संदर्भ में 1936 में हिमांशु रॉय द्वारा निर्मित और ऑस्टिन स्टेंज़ द्वारा निर्देशित फिल्म अछूत कन्या उल्लेखनीय ऐसी पहली फिल्म है| सामाजिक सरोकार को लेकर बनी यह पहली फिल्म है जिसमें तत्कालीन सवर्ण हिंदू समाज और पिछड़े व दलितों के सामाजिक संबंधो को चित्रित किया है| 2011 में प्रदर्शित प्रकाश झा की 'आरक्षण' शिक्षा क्षेत्र में आरक्षण के मुद्दे के आधार पर वर्तमान समाज में दलितों के जागृत अस्मिता को पर्दे पर प्रस्तुत करती है| दोनों ही फिल्मों में दलित समाज के सामाजिक, आर्थिक और वैचारिक स्तर में आये परिवर्तन को हम साफ-साफ देख सकते हैं|

• उद्देश्य

सिनेमा मनोरंजन का साधन है| परंतु फिर भी उसकी अपनी एक वैचारिकी है जिसके चलते सिनेमा ने सामाजिक चेतना को भी अपना विषय बनाया है| हिंदी सिनेमा पर दलित

सिनेमा मनोरंजन का साधन है| परंतु फिर भी उसकी अपनी एक वैचारिकी है जिसके चलते सिनेमा ने सामाजिक चेतना को भी अपना विषय बनाया है| हिंदी सिनेमा पर दलित समाज को हाशिये पर रखे जाने के आरोप लगे है| परंतु इस बात को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता कि सिनेमा ने दलित प्रश्नों को छुआ है और उनकी समस्याओं का चित्रण परदे पर करने की कोशिश की है| कल और आज के सिनेमा में दलित समाज का चित्रण बहुत भिन्न हो गया है|

समाज को हाशिये पर रखे जाने के आरोप लगे है| परंतु इस बात को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता कि सिनेमा ने दलित प्रश्नों को छुआ है और उनकी समस्याओं का चित्रण परदे पर करने की कोशिश की है| कल और आज के सिनेमा में दलित समाज का चित्रण बहुत भिन्न हो गया है| अब दलित दबा कुचला नहीं बल्कि अधिक जागरूक, सशक्त और अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करता नजर आता है| अत: प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य संकेतवैज्ञानिक संदृष्टि से हिंदी सिनेमा में दलित समाज के बदलते हुए रूप और दलित चेतना को उजागर करना है|

- **शोध परिसीमन**

प्रस्तुत शोध पत्र में फिल्म समय के अतीत और वर्तमान के प्रतिनिधि के तौर पर 1936 में प्रदर्शित फिल्म 'अछूत कन्या' और 2011 में प्रदर्शित फिल्म 'आरक्षण' को शोध-विश्लेषण सामग्री के रूप में लिया गया है| 'अछूत कन्या' फिल्म एक ब्राह्मण नायक और अछूत नायिका की असफल प्रेम कहानी है और 'आरक्षण' दलितों के अधिकार के मुद्दे पर आधारित फिल्म है| दोनों ही फिल्मों की विषयवस्तु भले ही भिन्न है परंतु उसके मूल में दलित की समसामायिक स्थिति और वैचारिकी है जो सिनेमा द्वारा मुखर हुई है|

- **समाज में दलित समाज**

धार्मिक शब्दावली में जिन्हें 'अतिशूद्र', 'चंडाल', और 'अंत्यज' कहा गया, सामाजिक शब्दावली में अछूत और क़ानूनी शब्दावली में 'अनुसूचित जातियाँ', गांधी द्वारा 'हरिजन' और डॉ. अंबेडकर द्वारा दलित कहा गया वे अस्पृश्य नहीं बल्कि सामाजिक रूप से दमित, पीड़ित, शोषित और अविकसित जातियाँ है| यह हमारे देश का एक बड़ा वर्ग है जो सामाजिक विसंगतियों और कट्टरपंतिता के चलते रूढ़ीवाद का शिकार बनकर गुलामी में जीता रहा है| इसका मुख्य सिरा समाज में स्थित वर्णव्यवस्था में मिलता है| विभिन्न धर्मग्रंथो में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और क्षुद्र वर्ण के भिन्न-भिन्न कर्तव्य या वर्ण धर्म बताये गये हैं जिसका मुख्य उद्देश्य समाज को श्रम विभाजन का लाभ पहुँचना था| वर्ण व्यवस्था के माध्यम से लोगों को यह भी विश्वास दिलाया गया कि अपने अपने वर्णों का पालन के फलस्वरूप अगले जन्म के उच्च सामाजिक स्थिति प्राप्त होगी| शूद्रों को बताया गया के वे पहले तीन वर्णों की बिना निंदा किये सेवा करें| आगे कर्म आधारित वर्णव्यवस्था कठोर होकर जन्म आधारित जातिव्यवस्था में बदल गई| समाज में अस्पृश्यता का उदय हुआ और शूद्र अछूत माने जाने लगे|

अतीत में दलित जातियों पर अन्याय और अत्याचार हुआ| ऊँची जाति के लोग इन्हें प्रारंभ से ही हेय दृष्टि से देखते आये हैं जिस कारण उन्हें सामाजिक शोषण और अत्याचारों को सहना पड़ा| दलितों द्वारा ऊँची जाति के लोगों के साथ उठने-बैठने, खाने-पीने, रहने, बातचीत, उत्सव में भाग लेने, बराबरी के स्तर पर आचरण करने आदि पर कड़े प्रतिबंध लगे रहें है| अस्पृश्यता के चलते कुओं से पानी लेने, सड़को पर चलने, मंदिरों में प्रवेश करने आदि पर कठोर प्रतिबंध लगे रहे| उन्हें शिक्षा पाने का अधिकार नहीं था| व्यवसाय और संपत्ति पर भी प्रतिबंध थे| सामाजिक स्थिति के कारण उनकी उपेक्षा की गई और उन्हें आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक लाभों से वंचित रखा गया| स्वतंत्रता के बाद राजनैतिक जागरूकता, शिक्षा की प्रगति, आर्थिक स्थिति में सुधार के कारण इन जातियों में स्वाभिमान जागृत हुआ है| इसलिए वे अन्याय का प्रतिरोध करने लगे हैं|

- **फ़िल्म का संकेतविज्ञान**

संकेतविज्ञान ऐसा शास्त्र है जो सामाजिक जीवन के भाग के रूप में संकेतो की भूमिका का अध्ययन करता है(फर्दिनांद दी सस्यूर)| संकेतविज्ञान भाषिक एवं भाषेतर सभी प्रकार के संकेतो के अध्ययन का एक बृहद क्षेत्र है। व्यापक स्तर पर देखा जाए तो संकेतविज्ञान उस सब से संबद्ध है जो संकेत के रूप में स्वीकृत है। 'संकेत' ही संकेविज्ञान की आधारभूत इकाई है और संकेतविज्ञान संकेत, संकेत व्यवस्था, संकेत प्रक्रिया तथा संकेत प्रकार्य का व्यवस्थित अध्ययन है। संकेतवैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाए तो संसार

संकेतो से ही भरा पड़ा है।

फिल्म भी अपने आप में एक संकेतों की व्यवस्था है| फिल्म की अपनी एक विशिष्ट भाषा है| फिल्मिक भाषा की सबसे विशेष बात यह है कि यह सार्वभौमिक है जिसे सभी लोग बड़ी आसानी से समझ सकते है| फिल्म की भाषा चलचित्र और ध्वनी से बनी संकेत व्यवस्था है|

फिल्म या सिनेमा का संकेतविज्ञान फिल्म सिद्धांत में प्रमुख प्रवृत्ति है| फिल्मिक कोड़ के संरचना की पहचान फिल्म और भाषा के बीच सदृश्यता के आधार पर की जाने लगी है| 'सिनेमा के व्याकरण' की पहचान के लिए फिल्मिक संकेतों और संप्रेषण का अध्ययन फिल्म के संकेतविज्ञान में प्रमुख विषय बन गया है| फिल्म संकेतविज्ञानियों में Ricciotto Canudo, Louis Delluc, Vachel Lindsay, bela balazs का नाम उल्लेखनीय है|

फर्दिनांद दी सस्यूर संकेत या प्रतीक की संकल्पना को दो अभिन्न युग्म में प्रस्तुत करते है- संकेतक(signifier) और संकेतित(signified)। उनके शब्दों में-

> "The sign is the whole that results from the association of the signifier with the signified."

अर्थात 'संकेत, संकेतक तथा संकेतित की संयुक्ति का परिणाम है।' सस्यूर द्वारा प्रस्तुत संकेत की संकल्पना निम्न प्रतिदर्श द्वारा अधिक स्पष्ट होगी:

संकेत :

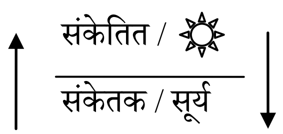

संकेतक और संकेतित यह संकेत के दो अभिन्न आयाम है जिनमें से एक के बिना दूसरे की कल्पना असंभव है। संकेतक ध्वनि बिम्ब है तो संकेतित मानसिक अवधारणा है और दोनों के बीच का संबंध यादृच्छिक है। बार्थ्स फ्लिमिक संकेत को संकेतक और संकेतित के एकीकृत इकाई वाले सस्युरियन प्रतिदर्श के रूप में देखते है| बार्थ्स के अनुसार फिल्मिक कोड में संकेतक परदेपर दिखने वाले चित्र मात्र नहीं, बल्कि फिल्मिक प्रस्तुति के तत्व जैसे नायक, वेशभूषा, सेट, हावभाव और संगीत आदि है| अत: चयनित फिल्मों का संकेतवैज्ञानिक विश्लेषण निम्न तत्वों के आधार पर किया गया है:

फ़िल्म का कथानक, पात्र और वेशभूषा
पात्रों के संवाद और हावभाव
फिल्म का संगीत

• दलित समाज का फिल्मांकन : संकेतवैज्ञानिक संदृष्टि

1. फिल्म 'अछूत कन्या'

▪ फ़िल्म का कथानक, पात्र और वेशभूषा

फ़िल्म की कहानी एक अछूत रेलवे गेटकीपर दुखिया की बेटी कस्तूरी और एक ब्राह्मण व्यापारी मोहन का बेटा प्रताप के प्रेम पर केंद्रित है| आजादी से पहले बनी इस फिल्म में एक अछूत और ब्राह्मण का प्रेम संबंध परदे पर दिखाना ही अपने में बड़ी बात थी|

दुखिया मोहन के पैर से साँप का जहर चूस कर उसके प्राण बचा लेता है और दोनों घनिष्ट मित्र बन जाते हैं| कस्तूरी और प्रताप भी बचपन से साथ-साथ खेलते-कूदते जवान होते हैं| परंतु एक ब्राह्मण और अछूत की मित्रता गावंवालों खटकती रहती है|

तत्कालीन समाज में कट्टर ब्राह्मणवाद होने के बाद भी फिल्म में एक ब्राह्मण और अछूत के बीच इतना सौजन्यपूर्ण संबंध इस फिल्म में दिखया गया है| वहीं फिल्म के अछूत पात्र अपने को हमेशा नीच बताते हुए खुद से दूर रहने को कहते है|

जब प्रताप के विवाह की बात चलती है तो मोहन कहता है कि यदि कस्तूरी अछूत न होती तो वो उसे अपनी बहु बना लेता| प्रताप को भी एक ब्राह्मण कन्या से विवाह करना पड़ता है| प्रताप का विवाह कस्तुरी के लिए कोई चौंकानेवाली या गज़ब बात नहीं है।

वहीं दुखिया के बीमार हो जाने पर मोहन उसे अपने घर ले आता है और बाबूलाल वैद्य गाववालों को भड़काता है कि मोहन ने एक अछूत को घर में रखा है और पूरे गावं का धर्म भ्रष्ट हो जायेगा| जब मोहन दुखिया को घर से निकालने से मना कर देता है तब भीड़ मोहन पर हमला कर उसका घर जला देती है| दुखिया जैसेतैसे डॉक्टर को लेने रेलवे क्रोसिंग आता है और लाल झंडी दिखा कर गाड़ी रोक देता है जिससे कि उसे नौकरी से हाथ धोना पड़ जाता है| उसकी जगह अछूत युवक मन्नू को नौकरी पर रख लिया जाता है| आगे इसी युवक से कस्तूरी की शादी हो जाती है जो कि पहले से ही विवाहित होता है| कुछ दिनों बाद मन्नू की पूर्व पत्नी कजरी आ जाती है जो कि प्रताप के पत्नी की सखी होती है| दोनों षड्यंत्र करके कस्तूरी को मेले में जाने के लिए राजी करती है जहाँ प्रताप अपनी दुकान लगाये है| दोनों कस्तूरी को मेले अकेली छोड़कर गावं वापस आ जाती है और मन्नू को बताती है की कस्तूरी प्रताप के साथ भाग गई है| मन्नू आगबबुला हो धारदार हथियार लेकर घर से निकलता है और उसे प्रताप और कस्तूरी रेलवे क्रोसिंग पर मिल जाते है| वह प्रताप पर वहीं टूट पड़ता है| रेलवे क्रोसिंग पर बैल गाड़ी खड़ी रह जाती है और प्रताप और मन्नू की झड़प जारी है| इतने में गाड़ी धडधडाते हुए रेल क्रोसिंग पर आती हुई दिखती है| कस्तूरी बैल गाड़ी हटाने का और दोनों की झड़प रोकने का असफल प्रयास करती है और कहती है न जाने कितनी जाने जाएगी और रेल गाड़ी को रोकने के लिए लाल झंडा लेकर गाड़ी की और दौड़ती है गाड़ी तो रुक जाती है परंतु इंजन के चपेट में आकार उसकी मौत हो जाती है|

'अछूत कन्या' की पूरी कहानी अछूत नायिका और ब्राह्मण नायक के प्रेम पर केंद्रित है फिर भी फिल्म में अछूतपन का व्यवहार प्रदर्शित करने वाला कोई भी दृश्य नहीं है। दुखिया को अछूत होते हुए भी गेटकीपर की नौकरी करते दिखाया गया है जबकि उस समय अछूतों को अक्सर रेल में झाड़ू लगाने की या मजदूरी करने की नौकरी मिलती थी। नौकरी के दौरान दुखिया वर्दी में दीखता है और नौकरी न रहने के बाद उसकी वेशभूषा से उसकी गरीबी झांकती नजर आती है|

- **पात्रों के संवाद और हावभाव**

संवाद एक

जब दुखिया मोहन के पावं से साप का जहर चूसकर उसकी जान बचाता है और मोहन के होश में आने पर दुखिया उससे हाथ जोड़कर कहता है,

"मुझे क्षमा करना पंडित जी मैंने तुम्हें छू लिया! क्या करता? तुम्हारी जान जोखम में थी|"

सदियों से चली आ रही छुआछूत तत्कालीन समाज में व्याप्त थी और फिल्म में भी दलित पात्र जाति प्रथा को बहुत ही सहजता से स्वीकार कर चूका है| उच्च वर्णियों द्वारा किया गया तुच्छतापूर्ण व्यवहार अपना भाग्य समझता है| जब मोहन भावुक हो कर दुखिया को गले लगाने के लिए आगे बढ़ता है दुखिया संकोच और भय के कारण पीछे हट जाता है| यहाँ मोहन के कायिक हावभाव और वाचिक संकेत समाज की दबी कुचली मानसिकता का प्रतीक है| वे इतने तिरस्कृत थे कि उन्हें किसी ब्राह्मण से किसी तरह के सौजन्यपूर्ण व्यवहार की अपेक्षा नहीं थी|

संवाद दो

मोहन के प्राण बचने के बाद दुखिया और मोहन में घनिष्ट मित्रता हो जाती है| परंतु इस बात से गावं के लोगों को आपत्ति होती है| इस बात का ज्ञान दुखिया को भी है और वह मोहन से कहता है,

"मोहनलालजी भैय्या! अब तुम हमारे घर आना-जाना छोड़ दो! तुम उच जात हो हम नीच! इस बात से सारा गावं तुम्हारा बैरी हो गया है!"

अपने को बहुत ही सहजता से 'नीच' जाति का संबोधित कर देना और उसे मानना इस बात का संकेत है कि दलित आत्मसम्मान को समाज ने किसी तरह भी जागने नहीं दिया था|

- **संवाद तीन**

प्रताप की माँ कस्तूरी और प्रताप को एक दूसरे से मिलने के लिए मना कर देती है| उदास प्रेमी जोड़े के बीच का यह संवाद है|

प्रताप- "माँ कहती है की अब हमारा साथ-साथ खेलना ठीक नहीं है|" आगे प्रताप कहता है कि, जब मैं बड़ा हो जाऊंगा तब मुझे माँ की बात न माननी पड़ेगी|"

कस्तूरी- "बड़े होकर भी तुम्हे माँ का कहना मानना पड़ेगा|"

प्रताप- "क्यों....? ....पिताजी भी तो दादी का कहना न मानते थे|.....वो तो तुम्हारे बापू और पिताजी के मेल-जोल कभी नहीं पसंद करती थी|"

समाज में जहाँ किसी एक वर्ग के साथ छुआछूत का पालन किया जाता था वहां उससे रोटी-बेटी का व्यवहार तो दूर की ही बात थी| कस्तूरी इस बात को जानती थी इसलिए प्रताप की बात काटते हुए वह कहती है,

"हम अछूत ठहरे| हमें सब बुरा समझते हैं|

प्रताप- " सब नहीं कस्तूरी! पिताजी का तो बापू के साथ दिन रात उठाना बैठना है|"

अछूत और ब्राह्मण की मित्रता तो ठीक है पर समाज का विरोध कर दोनों परिवार के बीच विवाह संबंध स्थापित कर पाना असंभव था| इसपर कस्तूरी कहती है,

"हाँ! पर हमारा उठाना बैठना अब गया!"

अछूत नायिका और ब्राह्मण नायक जानते हैं कि उनकी जाति उन्हें उनके प्रेम में कभी सफल नहीं होने देगी| जिसे वह दोनों इसे बिना किसी विरोध के अपना भाग्य समझ कर स्वीकार कर लेते है| फिल्म में किसी प्रकार के जातिगत अपशब्दों का प्रयोग नहीं किया गया है। दलित पात्रों के अधिकतर संवाद बड़ी ही स्वाभाविक तरह से स्वयं को नीच मानते दिखाई पड़ते है|

- **फिल्म का संगीत**

फिल्म में पार्श्व संगीत की कमी है| फिल्म को संगीत सरस्वती देवी का है और गाने के बोल एस. कश्यप के है| फिल्म का लोकप्रिय गीत है- "मैं बन का पंछी..." जिसे स्वयं देविका रानी और अशोक कुमार ने गया है|

प्रताप का विवाह निश्चित हो जाने के बाद कस्तूरी के मनोदशा दर्शाने के लिए "किथ गये ...ओ खेवनहार ..... नैय्या डूबती.....|" यह गाना फिल्माया गया और विवाह के बाद उदास कस्तूरी पर "उडी हवा में जाती है गाती चिड़िया यह राग...." गाना फिल्माया गया है| वहीं प्रताप भी हताश है जिसपर "किसे करता मुरख प्यार प्यार प्यार तेरा कौन है..." गाना फिल्माया गया है| गाने के बोल जाती-पाती के कारण बिछड़े हुए प्रेमी जोड़े के जीवन की नीरसता, उदासी और हताशा की ओर संकेत करते|

2. फिल्म 'आरक्षण'

- **फ़िल्म के पात्र, कथानक और वेशभूषा**

भोपाल के एक प्राइवेट कॉलेज एस.टी.एम में प्रिंसीपल प्रभाकर आनंद(अमिताभ बच्चन) अपनी ईमानदारी और सिद्धांतों पर अडिग रहने के कारण वह सभी का सम्मानीय है। एस.टी.एम में दलित वर्ग का दीपक कुमार (सैफ अली खान) प्रोफेसर है जो कि प्रभाकर आनंद के प्रिय छात्रों में से एक है और ऊंची जाति के मिथिलेश सिंह(मनोज बाजपेयी) जैसे कुछ प्रोफेसर उससे नफरत करते हैं। दीपक कुमार को प्रभाकर आनंद की बेटी पूरबी (दीपिका पादुकोण) पसंद करती है। इस फिल्म में भी दलित युवक और उच्च जाति की युवती के प्रेम संबंध दिखाए गए है जिससे प्रभाकर आनंद को कोई आपत्ति नहीं है| कॉलेज में पढ़ने वाला छात्र सुशांत (प्रतीक) इन सब से घुला-मिला है। फिल्म में इनके संबंध तब तक ठीक रहते हैं जब तक सुप्रीम कोर्ट द्वारा अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और ओबीसी के लिए 27 प्रतिशत का आरक्षण तय नहीं कर दिया जाता है। जैसे ही यह फैसला आता है आरक्षण के मुद्दे को लेकर इनके संबंधों में खटास आ जाती है। प्रभाकर आनंद किस ओर है, यह स्पष्ट न करने से सवर्ण छात्र सुशांत भी नाराज हो जाता है और दलित वर्ग का दीपक कुमार भी। इसके बाद फिल्म प्रभाकर आनंद बनाम मिथिलेश की लड़ाई में बदल जाती है। मिथिलेश कॉलेज में न पढ़ाते हुए अपनी कोचिंग क्लास में पढ़ाता है। प्रभाकर आनंद जब उसके साथ सख्ती करते हैं तो मिथिलेश बदला लेते हुए उन्हें प्राचार्य पद से हटने पर मजबूर करता है। उसका घर और सम्मान छीन लेता है। प्रभाकर आनंद अपना गौरव फिर से प्राप्त करते हैं इस सुखांत के साथ फिल्म पूरी हो जाती है| दलित युवक दीपक कुमार की वेशभूषा भी उनके पद के अनुरूप दिखाई गई है| फिल्म का कथानक अपने पहले भाग में आरक्षण के मुद्दे को उठता है| सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि इस फिल्म का नायक एक दलित पात्र है जो शोषित नहीं बल्कि उच्चशिक्षित और अपने अधिकारों को लेकर जागरूक दिखाई देता है| इसके लिए समय आने पर वह अपने गुरु के भी विरोध में खड़ा हो जाता है|

- **पात्रों के संवाद हावभाव**

  - **संवाद एक**

इस फिल्म का पहला दृश्य दीपक कुमार नामक दलित पात्र के साक्षात्कार के साथ शुरू होता है| साक्षात्कारकर्ताओं के आवाज, बातचीत की व्यंगात्मक शैली और आंगिक चेष्टाएँ इस बात की ओर संकेत करती है साक्षात्कार लेने वाले तीनों सदस्य तथाकथित उच्च जाति से है जो दीपक कुमार को हेय दृष्टि से देखते है| दीपक कुमार को उसका पूरा नाम, फॅमिली बैकग्राउंड आदि सवालात पूछे जाते है| दलित पात्र दीपक कुमार को जब उसका पूरा नाम पूछा जाता है वह अपना पूरा नाम बताने में संकोच करता है और हिचहीचाते हुए कहता है,

"जी, बस दीपक कुमार!"

दीपक कुमार की आंगिक चेष्टाएँ एवं हावभाव से स्पष्ट है कि वह अपनी पहचान को लेकर संकोच में है| साक्षात्कारकर्ताओं की उसके जाति के प्रति विकृत मानसिकता को वह भाप लेता है और असहज हो जाता है| दीपक कुमार से व्यक्तिगत सवाल के दौरान वह असहज ही रहता है| लेकिन जब साक्षात्कारकर्ता उसके 10th और 12th में कम प्राप्तांको के बारे में बात करते है तब उसकी झिझक कुछ कम होती है और वह आत्मविश्वास भरे शब्दों में जवाब देता है,

"....लेकिन बीएससी में 76% से एस.टी.एम. का टॉपर था मैं! और एमएससी में यूनिवर्सिटी की मेरिट लिस्ट में फर्स्ट!

इसके बावजूद भी साक्षात्कारकर्ताओं ओछी मानसिकता उनके संवादों में दिखाई पड़ती है और तब दीपक कुमार उन्हें जाते-जाते करारा जवाब देता है,

"प्लीज़... मेरी माँ का बैकग्राउंड को समझने की औकात नहीं है आप लोगो की! और रही बात मैनर्स और

एटिकेट्स की तो उसका जीता जागता एक्जाम्पल मैं आपके सामने बैठा हूँ| आप लगातार मेरी जात, मेरी औकात का मजाक कर रहे है और उसके बावजूद ये पेपर वेट अपने जगह पर पड़ा रहा! मैनर्स न होते तो आपके सर पर आपके इंस्टिट्यूट का नाम छाप दिया होता अब तक! थैंक यू जेंटलमन !

अगर आप लोगों ने एक भी सवाल मेरे सब्जेक्ट से किया होता तो आपको पता चल जाता के इंटेलिजेंस और परफोर्मेंस बैकग्राउंड का मोहताज नहीं होता| शायद आप भूल गए कि मौका मिला था तो एक हम जैसे ने इस देश का संविधान लिख डाला था|"

स्पष्ट है कि आज का दलित न केवल शिक्षा का महत्त्व और ताकत समझ गया है बल्कि आत्मसम्मान को लेकर जागरूक है| इस प्रकार की परिस्थिति में अपनी पहचान को लेकर संकोच में हैं, शंका में नहीं|

- **संवाद दो**

दीपक कुमार के एस.टी.एम. में जूनियर लेक्चरार के पद पर नियुक्ति के पश्चात् सबसे भेट के दृश्य में सवर्ण सहकारी मिथिलेश सिंह उससे कहता है,

"क्यूँ यहाँ टाइम ख़राब कर रहे है मि. दीपक कुमार? कोटे का इस्तेमाल कीजिये| सरकार खैरात में नौकरी बाँट रही है आप लोगो को!"

उसे भी करारा जवाब देते हुए दीपक कुमार कहता है,

"खैरात तो आप खाते रहे है सर| हमारा हक़ हमसे छीन कर! अब बांटना पड़ेगा तो तकलीफ़ तो होगी ही न सर!"

दलित पात्र के इस वाचिक संकेतों से स्पष्ट है कि आज दलित पहले की तरह शोषित, दमित नहीं है| वह अपने पर हो रहे प्रत्येक अन्याय को जान गया है और उसका प्रतिरोध करने के लिए हमेशा तैयार है|

- **संवाद तीन**

एस.टी.एम. के वाइस प्रिंसिपल आरक्षण विरोधी है और दलित लेक्चरार दीपक कुमार से जातिगत आरक्षण के मुद्दे पर बहस कर रहा है|

"हमारे बच्चे एडियाँ रगड़-रगड़ कर पढ़ते रहें, और एडमिशन का मौका आए तो खैरात लूट लीजिए आप लोग! डर लगता है न मेहनत करने से?"

इस पर दीपक कुमार दलित समाज के सदियों के शोषण के इतिहास का हवाला देते हुए जवाब देता है,

"अच्छा! हमें मेहनत का पाठ पढ़ा रहे है आप? हमने आज तक और किया क्या है? अरे भूल गये है तो पढ़ लीजिए इतिहास कि कौन मेहनत कर के कमाता रहा है और कौन उसे खैरात समझ के लुटाता रहा है| अरे सदियों से दक्षिणा ले ले के भर ली है अपनी पेटियां आप लोगों ने और हमसे खैरात की बात करते है? आपके खेत जोते हमने! आपकी फसले काटी हमने! आपके मवेशी चराएं हमने! आपके बेटियों की, बीवियों की डोलियाँ उठाई हमने! आपके मुर्दे जलाए, जूते सिये, बैल हांके, नाव चलाई, आपके घरों के गंदे नालियों की सफाई की! यहाँ तक कि आपकी टट्टी भी सर पर ढोई हमने! हमें मेहनत सिखाएँगे आप?"

दलित पात्र दीपक कुमार के संवादों में कितने सालों से दबी हुई आग मानो भड़की सी लग रही है| फिल्म आरक्षण में चित्रित यह दलित पात्र अधिक दृढ़ निश्चयी मजबूत इरादों वाला और समाज व्यवस्था द्वारा दलित वर्ग पर किए गए अन्याय के प्रति जागरूक है| प्रकाश झा की आरक्षण फिल्म दलितों के प्रति समाज के तथा कथित उच्चवर्ण की विकृत मानसिकता और इसके विरोध करता हुआ आज का दलित दिखाई देता है| फिल्म में आरक्षण के मुद्दे को लेकर संवाद पक्ष और विपक्ष में है|

- **फिल्म का संगीत**

फिल्म में प्रसून जोशी के गीतों को शंकर-एहसान-लॉय ने संगीत से सजाया गया है. एस.टी.एम. में दीपक कुमार की जूनियर लेक्चरार के पद पर नियुक्ति के बाद इस उपलब्धि की ख़ुशी मानते हुए यह गीत फिल्माया गया है| गीत के बोल इस प्रकार है:

"जरा पंख खोलो... फिर उड़ान देखना
जरा मौका तो दो... फिर आसमान देखना
बराबर की लाइन तो खीचों जरा
फिर हिम्मत बड़ी या भगवान देखना
इक चानस तो दे दे मेरी जान
तुम फिर उड़ान देखना..."

यह गीत उल्लेखनीय इसलिए भी है क्यूँकि इसके बोल तथाकथित उच्च वर्णीय समाज को चुनौती देते हुए दिखाई पड़ते है| आज का दलित युवक कर्मनिष्ठ है और उसे अपने योग्यता पर पूर्ण विश्वास है बस उसे केवल अवसर की प्रतीक्षा है|

फिल्म और दलित समाज : कल और आज

फिल्म 'अछूत कन्या' भारतीय समाज के एक काले पक्ष को उजागर करती है। फिल्म से तत्कालीन सामाजिक पृष्ठभूमि, लोगों का रहन-सहन का पता चलता है। फ़िल्म के नायक और नायिका बिना किसी झिझक के अपने ऊपर आरोपित भाग्य को स्वीकार करते हैं और अपनी खुशी और सन्तुष्ट भविष्य के लिए लड़ाई नहीं करते हैं। अछूत लड़की के लिए भी यह सब इतना स्वाभाविक है कि वह प्रताप की पत्नी- मीरा से दोस्ती करती है। वहीं हम देखते हैं कि

आरक्षण का नायक बड़ी आसानी से अपना आपा खो देता है और अक्सर निराश होकर अपनी उग्रता का इस्तेमाल करता है। उसके इस व्यवहार का कारण योग्यता होने के बावजूद भी उसकी अस्मिता पर होने वाली बारंबार चोट को मान सकते है| फिल्म के पात्र, उनकी वेशभूषा, संगीत आदि से तत्कालीन समाज की झलकी मिलती है| पात्रों के संवाद स्पष्ट रूप से समसामयिक समाज की वैचारिकी और समाज में उनकी स्थिति को दर्शाते है| हम कल और आज के दलित समाज के बदले हुए रूप को स्पष्ट रूप से देख सकते है|

निष्कर्ष

हिंदी सिनेमा पर भी दलितों के प्रति नजरिये पर सवालिया निशान है| 'समाज के हाशिये का सिनेमाई हाशिया' नामक अपने लेख में तत्याना षुर्लेई कहती है कि 'जब हम बालीवुड फिल्मों की संख्या के बारे में सोचेंगे तो यह देखेंगे कि दलित न सिर्फ़ जाति के वरीयता क्रम से बाहर हैं बल्कि सिनेमा से भी बाहर हैं|' प्रकाश झा की आरक्षण इस दृष्टि से कुछ हरकत में है जिसमें दलित चेतना दिखाई देती है| तत्याना षुर्लेई इसे भी 'बालीवुड की सबसे बेकार फिल्म' घोषित कर देती है| परंतु तमाम आलोचनाओं के बावजूद भी हम यह कह सकते है कि आरक्षण में दिखाया गया दलित पात्र अब शोषित नहीं है| वह अपने अधिकारों के प्रति जागरूक दिखाई देता है| अविजित घोष आरक्षण की समीक्षा करते हुए लिखते है, "सदियों से भारत में दलित समाज शोषण का शिकार होता रहा है। बॉलिवुड की फिल्मों में भी उसकी वही छवि पेश की जाती रही है। वह दबा-कुचला, सहमा सा दिखाई देता है। अपनी पहचान को लेकर डरा हुआ सा। लेकिन पिछले कुछ सालों में हिंदी फिल्मों में उसके पोर्ट्रेएल में बदलाव साफ नजर आ रहा है। अब वह पहले से ज्यादा दृढ़ निश्चय वाला है। आत्मविश्वास से भरा हुआ और जागरूक। आरक्षण का हीरो दीपक कुमार नए दौर

के दलित युवा का प्रतीक है|" फिल्मों में दलित समाज की छवि काफी हद तक मजबूत दिखाई दे रही है| दलित लेखक चंद्रभान प्रसाद कहते हैं कि "आरक्षण फिल्म का दलित हीरो बॉलिवुड के बदलते परिदृश्य का प्रतीक है|"

सिनेमा का मुख्य उद्देश्य मनोरंजन है| सिनेमा अपने सामाजिक दायित्वों की पूर्ति करते हुए सामाजिक विषयों को पर्दे पर प्रस्तुत कर रहा है| हिंदी सिनेमा में दलित की जो दबी कुचली छवि दिखाई देती थी अब वह अपने अधिकारों के प्रति जागरूक ऐसे पात्र में बदल चुकी है और फिल्म मनोरंजन का माध्यम होते हुए भी सामजिक उत्तरदायित्वों को पूर्ण करता नजर आ रहा है| सिनेमा समाज का दर्पण बन गया है| उसमें जो भी विषय और दृश्य उठाएं जाते है वह समाज से ही प्रेरित होते है| जैसे-जैसे समाज बदलेगा फिल्मों में भी उसकी वैसी ही छवि दिखाई देगी|

संदर्भ ग्रंथ-सूची

1) भूषण, मुकेश. दलितों का इतिहास, राधा प्रकाशन, नई दिल्ली : 2010
2) गगाराम. दलितों की दुर्दशा: कारण और निवारण, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली : 2008
3) गुप्ता,रितु (अनु.). जाति प्रथा : दो निबंध, संवाद प्रकाशन, मेरठ: 2008
4) तोमर, देवेन्द्र पाल सिंह. हिन्दू अछूत जातियों में छुआछूत, कॉमनवेल्थ प्रकाशन,नई दिल्ली :2010
5) Noth, Winfried. Handbook of Semiotics, Library of Congress, America : 1995

लिंक्स

1. http://rythmsoprano.blogspot.in/2009/03/blog-post_11.html
2. http://akhilesh006.blogspot.in/2014/02/blog-post_24.html
3. https://hi.wikipedea.org/s/11nx
4. https://tirchhispelling.wordpress.com/2013/05/31/समाज-के-हाशिए-का-सिनेमाई-ह/
5. http://jagranreviews.jagranjunction.com/2011/08/12/aarakshan-hindi-movie-review/
6. http://navbharattimes.indiatimes.com/articleshow/9770947.cms

समीक्षा

मुकेश मानस
मुंबई

film based on the life of the 19th-century Indian painterRaja Ravi Varma.Made as a bilingual, the film is titled Rang Rasiya in its Hindi version and Colours of Passion in

Rang Rasiya(Colours of passion)

Rang Rasiya depicts painter Raja Ravi Varma's passion towards art and also takes a closer look at the method behind the madness. The film is based on writer Ranjit Desai's biographical novel Raja Ravi Varma, whose art knew no boundaries.

Centuries ago a painter dared to paint Indian Gods the way he imagined them. His portraits of goddesses were inspired by a woman, Sugandha (Nandana Sen), who was his muse. A case was filed against Raja Ravi Varma for making obscene paintings because some people from the Hindu community claimed that his work had hurt their religious sentiments.Apart from the court case, the film also shows his struggle with business because all he could do is paint, but unfortunately selling the art was not his strength. He partnered with some businessmen who were starting a printing press that would make copies of his paintings and flood the market with his work.Raja Ravi Varma's paintings of Gods and Goddesses reached every home, his work was worshiped by lakhs of people because they saw their God in them and his popularity reached newheights. His fight with the Hindu activists continued because he refused to budge and continued making the paintings he wanted to make. His work was inspired by Kama Sutra, Khajuraho and many ancient temple arts but since it was now being done within the community and the paintings were not pieces of age old art, some people saw the pictures as obscene.This is an important story that needed to be told and what better way than to put it on the big screen for the world to watch.The biggest strength of this film is its casting. Randeep Hooda as Raja Ravi Varma is the best thing to happen to Rang Rasiya. He plays the roleof the legendary painter with full conviction and leaves no stone unturned in portraying it in front of the camera.Nandana Sen as Sungandha plays her part well too. It's brave of her to accept this role and pull it off the way she does. Music by Sandesh Shandiliya is decent.What could have been better is the production quality of the film and that would

make a huge difference. The length could have been shorter too. Some more madness behind the passion would have been nice as well but even after all itsflaws, I enjoyed the film.Rang Rasiya is not a perfect film and not for everyone but for those who would like to know more about one of the best painters ever, this onewill be worth your time.

- **Directed by Ketan Mehta**

- **Produced by**
- **Deepa Sahi**
- **Aanand Mahendroo**
- **Ketan Mehta**

- **Written by Sanjeev Dutta (screenplay) Ketan Mehta**

Starring
Randeep Hooda
Nandana Sen
Feryna Wazheir
Triptha Parashar
Gaurav Dwivedi

- **Music by – Sandesh Shandilya**

- **Cinematography - Rail Raltchev , Christo Bakalov**

RAJA RAVI VERMA

लेखनी

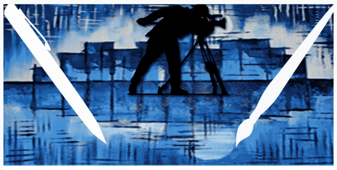

CREATION

सृजन

कुछ जली हुई
निहायती आशावादी खाखनुमा लाशे
ढूंढ रही है
कुछ बचा हुआ....
शरीर का कोई पुर्जा
आँख
कि देख पाये उनकी निर्मम हत्या के बाद
कितना और क्या परिवर्तित हुआ है...?

और अगर ना हुआ तो....
ढूंढ़ रही है
हाथ
दोनों पाव
जबान
कि
जरूरत पड़ने पर चलाई जा सके
जो बांध दी गई थी
जब सजीव थी !!

कुछ लाशें
खोज रही है
उनका दफनाया गया आत्मसम्मान!
शायद मिल जाए कहीं
खोजते-खोजते....!

जा पहुंची लाशे
ऐसी जगह
जहां
साबुत आंखो, हाथ-पैरों वाली मरी हुई आत्माएँ रहती है...
यह वहीं जगह है
जहां वे भी तो रहते थे!
जिसे हम समाज के नाम से जानते है....

मेघा आचार्य

बीज

ये शब्द
उसी के थे
जो आज
लहलहाते खेतों का रूप
ले चुके हैं
वो बोता था
और मैं
अपने आधे-अधूरे
अर्थों का खाद
उड़ाया करता था
उसका बोया बीज
गहरा है
इसीलिए
जड़ मजबूत है
लेकिन मेरे लिए
आधे-अधूरे
अर्थों का खाद
जहरीला है, कडवा है
फसल पर तो
हरियाली है
लेकिन
जमीन सफ़ेद, पोपली
और खतरनाक है|

लखन रघुवंशी

लेखनी

सृजन

Dr. RAJESH V. MOON
School of translation
MGAHV wardha

TRUTH OF MIRROR

She breaks the images of mirror
Up and until she stands there
Her shadow threaten me
Sometimes I over poured in her
And imagine the jingles of her bangles
She is truth for me perhaps I may be
The seashore of glass and serene water
Combat my gravid emotion
And fulfill the unseen dreams
I overjoyed with lethal sorrow
Keen pathos of my life
I forgot my bygone friends
And engaged with her
Her one smile of cheek
Quivered me in bright thunder
She blaze the future of my eyes
I love her thoroughly
She didn't hear my story
But fall in glory
Many times I want to say something
But she didn't hear
Now listen
Green leaves spark in night
Pebbles promulgate right
Kite is not in much height
Dark hat even be fight
Look in the eye of tigers
Ring the nail of peacock
And the closen magic starts
The hidden rain discards the movement
But even the pleasure of her eye
I should continue it
The quarters of her age
And the bondage of her hair
She will delivered the child
Blue eyes and red cheeks
Blighten the magic stick
And won the whole world
Sword should not cut the head of poor's
And the scavengers find the food in pot
Mankind will be the religion
Then I will smile in heaven
Who ruled the moon?
And who rolled the sun
The order of almighty
And we all the followers
I did not know why the man is happy
But partially know the reason of his sadness
I am not the Buddha and others
I am only the harbinger
And love my creator
My kind master
I already wrote his story
Parrot and 52 cards
What happen when the king died?
And how jack build the magic castle
Pangs and pathos of my life quivered me
And the tears fringed in my eyes
I never smile
But not frustuted
Tried to be live in anger
Sun kill the energy
Moon enlighten it
Round the earth thousand time
You will find the truth
As the harbinger of nature

तूलिका

CREATION

सृजन

VISHAL SORTEY

[WORKS AT NTPC MAUDA , MAHARASHTRA]

तूलिका

CREATION

सृजन

MERLIN , VERSOVA, (MUMBAI)

कैमरा

CREATION

सृजन

ABHIMANYU SINGH , SIDHI (MADHYAPRADESH)

CREATION

सृजन

कैमरा

PRAVEEN SINGH CHAUHAN, VERSOVA (MUMBAI)

दक्षिण भारत में हिंदी प्रचार एवं प्रसार

भाषा

डॉ. के. वी. कृष्णमोहन
विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग
सय्यद अप्पलस्वामी
महाविद्यालय, विजयपाड़ा,
आंध्रप्रदेश
Email- hindisas2020@gmail.com
Mob. 08121269349

दक्षिण भारत में स्वतंत्रता आंदोलन से पूर्व भी राजा-महाराजा, प्रशासन, सैन्य, व्यापारी, साधु-संत और अनेक धर्म प्रचारकों ने हिंदी भाषा का प्रचार किया है| आगे चलकर अनेक संघ-संस्थाओं ने मिलकर प्रचार कार्य की शुरआत की|

भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है। भारत को अंग्रेजों से आज़ादी पानी थी तब एक भाषा की आवश्यकता पड़ी। विभिन्न प्रकार के लोग विभिन्न प्रांतों में भिन्न-भिन्न भाषा बोलते थे। लेकिन राष्ट्र को एक सूत्र में बांध कर मजबूत बनाने के लिए एक भाषा की आवश्यकता पड़ी। उसी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाकर उसके माध्यम से आज़ादी पाना चाहते थे। हिंदी भाषा सभी प्रांतों में फैल चुकी थी| केवल दक्षिण भारत के लोगों के लिए यह भाषा अनजानी सी लग रही थी। ऐसी स्थिति में महात्मा गांधी और अन्य हिंदी भाषा प्रेमियों ने मिलकर हिंदी को राष्ट्र भाषा के रूप में चुना और घोषित किया कि हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है। दक्षिण भारत को ध्यान में रखते हुए हिंदी प्रचार कार्य की शुरुआत की गई।

स्वतंत्रता आंदोलन से पूर्व हिंदी प्रचार कार्य

स्वतंत्रता से पूर्व कई साल पहले ही दक्षिण भारत में हिंदी, उर्दू या हिंदुस्तानी भाषा का थोड़ा बहुत परिचय और प्रसार अनेक कारणों से हुआ है। उसमे कुछ प्रमुख कारण निम्नानुसार हैं:

धार्मिक कारण

भारत साधु-संत, ऋषि-मुनियों की तपस्थली रही है। उन ऋषि-मुनियों की देन यह मान्यता है कि देश भर में भ्रमण करके अपने ज्ञान को जन-जन तक फैलाएं और उसीसे मोक्ष की प्राप्ति करें। इसीलिए साधु-संत पूरे देश में भ्रमण करते थे। स्थलों की महिमा जानते हुए पीठ और संस्थानों की स्थापना करते थे। स्वामी श्री माध्वाचार्य आदि अनेक वैष्णव आचार्यों ने भारत भ्रमण करके धार्मिक एकता एवं भक्ति का प्रचार-प्रसार किया है। इन दक्षिण भारतीय साधु-संतों के अलावा उत्तर भारत के जैन और बौद्ध भिक्षुओं ने पूरे भारत भर में समय-समय पर पर्यटन करके धर्म प्रचार और उपदेश प्रदान करने का महान कार्य किया है। इनके प्रभाव से दक्षिण के लोग भी हिंदी भाषा को सीखने और समझने को उत्सुक हुए। इस प्रकार संस्कृत, पाली तथा उत्तर भारत की अनेक बोलियों से सारा भारतवर्ष परिचित हुआ और हिंदी दक्षिण भारतीयों के लिए अनजानी भाषा नहीं रही। धार्मिक और आध्यात्मिक लोग पूर्व से लेकर पश्चिम तक के सभी पुण्य तीर्थस्थलों और मंदिरों के दर्शन करना आवश्यक और पवित्र कार्य मानते थे। उन तीर्थयात्रियों के ठहरने के लिए तीर्थस्थलों के आस-पास धर्मशाला स्थापित किये जाते थे। उत्तर भारत के तीर्थयात्री और साधु-संत दक्षिण की उन धर्मशालाओं में आकर ठहरते थे। उनके साथ दक्षिण के लोग मिलजुल कर रहते थे और इस प्रकार हिंदी भाषा से परिचित होते थे।

प्रशासनिक कारण

पहले दक्षिण भारत में स्वतंत्र राज्यों और छोटे- छोटे रियासतों के अपनी-अपनी अलग फौज होती थी। फौज में स्थानीय लोगों को उत्तर भारत के राजपूत, पंजाबी, मराठी और अन्य भाषा-भाषियों के साथ भी मिलकर कार्य करना होता था। इसलिए फौज के कप्तान, सूबेदार आदि संचालकों की तरफ से सिपाहियों को हिंदुस्तानी भाषा का काम चलाऊ ज्ञान

हासिल कराने की व्यवस्था कराते थे। इस कारण उन फ़ौजियों के बीच हिंदी-भाषा या उर्दू का प्रसार होने लगा। उस जमाने में सैनिकों और सिपाहियों के संपर्क में आने वाले सभी लोग काम चलाउन खिचड़ी हिंदी और उर्दू भाषा को सीखने का प्रयत्न करने लगे। इस तरह पुराने जमाने से ही फ़ौज और राजपरिवारों के बीच हिंदी का उपयोग दिखाई देता है।

व्यावहारिक कारण

प्राचीन काल से ही समुद्री व्यापारियों के साथ दक्षिण भारत के लोग जुड़े हुए हैं। आंध्रा के विशाखापट्टनम , मछलिपट्टनम, कर्नाटक के भुगलूर, कारवार, तमिलनाडु के मद्रास, पांडिचेरी, नागपट्टनम, तुंतुकड़ी, रामेश्वर, केरला के तिरुवनंतपुरम, कोल्लम, आल्लप्पी, कोच्चिन, कोड़ङ्ग्ल्लूर, बडगारा आदि दक्षिण भारत के बंदरगाह इलाके समुद्री व्यापारियों से जुड़े थे। दक्षिण भारत के सभी भाषा-भाषी लोगों को उन व्यापारियों के साथ व्यवहार करने के लिए हिंदुस्तानी भाषा की आवश्यकता पड़ती थी। अत: उन व्यापारियों ने टूटी-फूटी हिंदुस्तानी भाषा सीख ली। इस प्रकार दक्षिण भारत के व्यापारियों के बीच में हिंदी का आदान- प्रदान होना सहज और स्वाभाविक हो गया।

साहित्यिक कारण

दक्षिण भारत के चारों प्रमुख भाषाओं के विद्वानों ने हिंदी पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी आदि भाषा के प्राचीन पौराणिक, धार्मिक ग्रन्थों को अपनी भाषाओं में अनुवाद किया है। दक्षिण भारत के अनेक विद्वानों ने जैन और बौद्ध धर्म के संपर्क में आकार उन धर्मों के तत्व और सिद्धांतों को अपनी भाषा में प्रचार करने का कार्य किया है। इसलिए साहित्य के विकास में हिंदी प्रचार और प्रसार के लिए अधिक महत्व दिया गया है।

दक्षिण भारत में हिंदी प्रचारार्थ प्रमुख संस्थाएं

नागरी प्रचारणी सभा

राष्ट्रभाषा का प्रचार कार्य राष्ट्र निर्माण का कार्य है| इस कार्य मे अनेक संस्थाओं एवं संगठनों ने सहगोग किया है| उनमे से एक है नागरी प्रचारणी सभा! जुलाई 1893 में ठाकुर शिवकुमार सिंह के प्रयत्नों से काशी नागरी प्रचारणी सभा स्थापित हुई| प्रथमत: फारसी लिपि की तरह नागरी लिपि के व्यवहार को प्रोत्साहित करना इस संस्था का मुख्य उद्देश्य था| आगे चलकर इस संस्था ने हिंदी साहित्य की खोज और प्रकाशन कार्य भी आरंभ किया| इसके अतिरिक्त साधारण जनता में हिंदी के प्रति प्रेम उत्पन्न करना और हिंदी साहित्य के अध्ययन एवं अनुसंधान की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट करना भी सभा के कार्यक्रमों का अंग था| दक्षिण भारत मे हिंदी सिखाने के लिए पाठ्यक्रम की आवश्यकता पड़ी| हिंदी भाषा उत्तर भारत के लोगों के लिए जितनी आसान थी, उतनी दक्षिण भारत के लोगों के लिए नहीं थी| अत: नागरी प्रचारणी सभा द्वारा पाठ्यक्रम निर्माण कर दक्षिण भारत मे हिंदी शिक्षण का कार्यक्रम शुरू हुआ| आज भी पाठ्यक्रम का प्रकाशन कार्य चल रहा है| प्राचीन हिंदी साहित्य का प्रकाशन, उच्च शिक्षा के लिए पाठ्यपुस्तकों का निर्माण, अनुसंधान पत्रिका का प्रकाशन आदि प्रमुख कार्य इस नागरी प्रचारणी सभा द्वारा हुआ है|

केंद्रीय विश्वविद्यालय

श्रीमती एनिबिसेंट के प्रयत्न और थियोसोफ़िकल सोसाइटी के तत्वावधान में सन 1897 में काशी के 'कूमछा' मुहल्ले में सेंट्रल हिन्दू स्कूल की स्थापना की गई| बालिकाओं की शिक्षा के लिए बालिका विद्यालय की शुरवात भी की गई| इन दोनों संस्थाओं की भारतीय भाषा, साहित्य और संस्कृति की ओर उन्मुखता के कारण हिंदी भाषा को शिक्षा के स्तर पर स्थान मिला| आगे उत्तर और दक्षिण भारत के शिक्षा केन्द्रों में हिंदी को स्थान मिला| आगे चलकर यही 'सेंट्रल स्कूल कॉलेज' बना| 'बनारस हिंदू विश्वविद्यालय' इसका केंद्र बन गया| हिंदी भाषा और साहित्य के विकास कार्य मे 'काशी हिंदू विश्वविद्यालय' और यहां के आचार्यों और छात्रों का बड़ा योगदान है|

हिंदी साहित्य सम्मेलन

हिंदी साहित्य सम्मेलन का उद्देश्य हिंदी साहित्य तथा राष्ट्रभाषा का विकास और देवनागरी लिपि का प्रचार करना है| साथ -साथ साहित्यकारों का सम्मान और उनकी प्रतिभा का परिचय कराना भी सम्मेलन का ध्येय था| सन 1910 में नागरी प्रचारणी सभा के तत्वावधान में हिंदी साहित्य सम्मेलन की स्थापना हुई जिसके द्वारा हिंदी साहित्य के अध्यापन-अनुशीलन का कार्य किया जाने लगा| सम्मेलन एक परीक्षा क्रम निर्धारित किया है| हिंदी का अध्ययन-अध्यापन अधिक व्यापक और लोकप्रिय बना| हिंदी पढ़ने वालों की संख्या भी बढ़ गई| विदित है कि महावीर प्रसाद द्विवेदी और 'सरस्वती' पत्रिका का हिंदी के विकास एवं प्रचार में बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है| महात्मा गांधी ने सन 1918 इंदौर में भाषण दिया| उस वक्तव्य का मुख्य बिंदु इस प्रकार है-

गांधी ने इंदौर की अदालतों मे हिंदी में अर्जी लिखने की शुभ सूचना देने के साथ वकीलों के अंग्रेजी मे बहस पर टीका की| उन्होंने स्मरण कराया – "हमें ऐसा उद्योग करना चाहिए कि एक वर्ष में राजकीय सभाओं में, कांग्रेस में, प्रांतीय सभाओं में और सभा, समाज और सम्मेलनों में एक भी अंग्रेजी शब्द सुनाई न पड़े, हम कबलकुल अंग्रेजी का व्यवहार त्याग दें| अब हमें अपनी मातृभाषा को और नष्ट करके उसका खून नहीं करना चाहिए| जैसे अंग्रेज़ अंग्रेजी में ही बोलते हैं और सर्वथा उसे ही व्यवहार में लाते है वैसे ही मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप हिंदी को भारत कि राष्ट्रभाषा बनने का गौरव प्रदान करें| हिंदी सब समझते हैं| इसे राष्ट्रभाषा बनाकर हमें अपना कर्तव्य पालन करना चाहिए|"

दक्षिण में प्रथम प्रचार कार्य का आरंभ

सन 1917 के हिंदी साहित्य के वार्षिक अधिवेशन के बाद सन 1918 में गांधी जी ने अपने पुत्र देवदास गांधी को दक्षिण के प्रथम हिंदी प्रचारक बनाकर प्रचार कार्य आरंभ किया| उन्होंने मद्रास आकार श्रीमती एनीबिसेंट, डॉ. सी. पी. रामस्वामी अय्यर, श्रीनिवास शास्त्री आदि नेताओं की सहयता से दक्षिण भारत में हिंदी प्रचार आंदोलन का बीजारोपन किया| उनकी कठिन तपस्या और साधना से धीरे-धीरे दक्षिण भारत में हिंदी प्रचार का कार्य लोकप्रिय होने लगा| महात्मा गांधी ने स्वामी सत्यदेव को भी उनकी सहायता के लिए मद्रास भेजा| हिंदी प्रचार के साथ हिंदी वर्ग चलाना उनका दैनिक कार्यक्रम हो गया| इन प्रचारकों के निस्वार्थ प्रयत्न से शीघ्र ही दक्षिण भारत में हिंदी प्रचार को बढ़ाने के लिए हिंदी प्रचार सभा की स्थापना की गई| यहीं 'दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा' के नाम से ख्यातनाम हो कर हिंदी के प्रचार में बड़ा योगदान दे रही है|

आंध्रप्रदेश की अन्य संस्थाएं

सन 1921 में 'प्रचारक विद्यालय' राजमहंद्री में प्रारंभ किया गया| शिवराम शर्मा, मल्लादी सितारामांजनेयुंलु, जंझाल शिवन्न शास्त्री, पीसपाटी वेंकट संब्बाराव आदि ने हिंदी प्रचार कर शुरू किया|

- उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद
- आंध्रा विश्वविद्यालय, विशाखापट्टणम
- श्री वेंकेटेश्वरा विश्वविद्यालय, तिरुपति
- केंद्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद
- नागार्जुना विश्वविद्यालय, गुंटूर
- कृष्णा विश्वविद्यालय,मछलिपट्टणम
- मौलाना अब्दुल केंद्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद
- कृष्णदेवराया विश्वविद्यालय, कड़पा .....आदि |

तमिलनाडू की प्रमुख संस्थाएं

सबसे पहले सन 1918 में देवदास गांधी के द्वारा प्रचार आरंभ किया गया| तमिलनाडू में प्रांतीय शाखा सन 1924 तिरूचुनपल्लि में प्रारंभ किया गया है|

- तमिलनाडू हिंदी प्रचार सभा
- तमिलनाडू के सभी विश्वविद्यालय

आदि|

कर्नाटक की प्रमुख संस्थाएं

सन 1924 में कर्नाटक में भी हिंदी प्रचार कार्य व्यवस्थित रूप से आरंभ हुआ|

- मैसूर हिंदी प्रचार परिषद
- हिंदी विद्यालय
- कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय

आदि |

केरला की प्रमुख संस्थाएं

सन 1930 में दामोदर उण्णीजी को सरकार की ओर से निरूणितकुर के राजघराने के राजकुमारों को हिंदी और संस्कृत पढ़ाने के लिए नियुक्त किए गया|

- हिंदी विद्यापीठ
- केरला हिंदी प्रचार सभा
- गांधीजी स्मारक हिंदी प्रचार मंडल/केंद्र
- केरल हिंदी प्रचार सभा
- केरला के सभी विश्वविद्यालय

निष्कर्ष

दक्षिण भारत में हिंदी प्रचार एवं प्रसार कार्य को देखते हुए हमें यह पता चलता है कि स्वतंत्रता आंदोलन से पूर्व भी राजा-महाराजा, प्रशासन, सैन्य, व्यापारी, साधू-संत और अनेक धर्म प्रचारकों ने हिंदी भाषा का प्रचार किया है| आगे चलकर अनेक संघ-संस्थाओं ने मिलकर प्रचार कार्य की शुरवात की है| इस प्रकार हिंदी भाषा के प्रचार और प्रसार कार्य में अनेक लोगों के साथ संघ-संस्थाओं का योगदान भी महत्वपूर्ण है|

बोनज़ाय जिंदगी

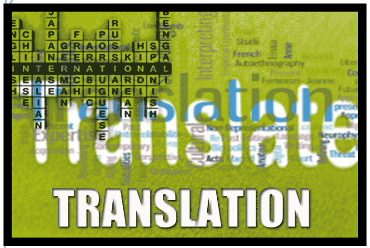

अनूदित

मूल कहानी : अब्बूरि छाया देवी

अनुवाद : डॉ. अन्नपूर्णा सी.

एसोसिएट प्रोफेसर
अनुवाद अध्ययन विभाग,
अनुवाद और निर्वचन विद्यापीठ
महात्मा गांधी अंतर राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,
गांधी हिल्स, वर्धा-442001।
(महाराष्ट्र)

अब्बूरि छाया देवी की कहानी का हिन्दी अनुवाद - बोनज़ाय ज़िंदगी

ऑफिस से घर पहुंचते ही सामने चिट्ठी दिख जाए तो जैसे अलौकिक आनंद मिलता है| लगता है जैसे किसी अपने ने प्यार से बात की और दिन भर की थकावट यूँ गायब हो गई| सुकून सा मिलता है| नीरसता की स्थिति से बाहर निकल कर ख़ुशी से गाना गुनगुनाते हुए कॉफ़ी बनाकर पीने का मन करता है| अगर जान-पहचान की चिट्ठी या इनलैंड लेटर है तो ख़ुशी और दुगनी हो जाती है| जोश इतना बढ़ जाता है कि गरमागरम पकोड़ी बनाकर खाई जा सकती है| खुद को चिट्ठी लिखने में आलस आता है, फिर दूसरों से उम्मीद रहती हैं कि 'चिट्ठी' लिखे या हर रोज़ किसी न किसी की 'चिट्ठी' मिले|

ऐसे ही चिट्ठी थी वह! दीदी कभी चिट्ठी लिखती नहीं। फिर भी आज विशेष रूप से चिट्ठी लिखी है तो कुछ खास बात जरुर होगी| परंतु चिट्ठी खोलते हुए मन बेचैन हो उठा| कोई बुरी खबर तो नहीं? सब ठीक हो तो कोई भला क्यूँ चिट्ठी लिखे !

"छोटू !

मेरा पत्र देख कर तुम्हे आश्चर्य होगा! मैं और तुम्हारे जीजाजी, दोनों ही तुम्हारे घर आने की खबर तुम्हें और आश्चर्यचकित कर देगी| हम लोग कई दिनों से काशी और हरिद्वार की यात्रा करने का सोच रहे थे। किंतु इतने दिनों बाद अब संभव हो पाया! आप लोगों को कोई तकलीफ़ या असुविधा तो नहीं होगी?

तुम्हारी दीदी"

"सुनिए!

मेरी दीदी और जीजाजी आ रहे हैं यहाँ!"

"सच!

कब? दिखाओ चिट्ठी!"

उन्होंने मेरे हाथ से पत्र खींचच लिया| मैं रसोई में चली गई कॉफ़ी-वाफी तैयार करने के लिए! मेरी शादी के बाद दीदी और जीजाजी पहली बार हमारे घर आ रहे हैं | न जाने कितने सालों से उनका इंतजार था| वे दोनों गावं छोड़ कर कहीं नहीं जाते| बच्चे, खेती-बाड़ी या फसल कटवाई आदि के कारण अपना गावं और घर छोड़ कर कहीं निकलते ही नहीं! लेकिन अब पहली बार इस महानगर में, हमारे घर आ रहे हैं!

दीदी मेरी तरह पढ़ी-लिखी नहीं है| पिताजी ने उन्हें पांचवी कक्षा तक पढ़ाकर घर में बिठा दिया| उन दिनों समाज में यह सोच थी कि बेटियों को पढ़ाने की क्या आवश्यकता है? धोबी का हिसाब-किताब करने तक पढ़ लिख ले, तब भी काफ़ी है| दस साल के बाद मेरा जन्म हुआ| तब तक बेटियों की शिक्षा को लेकर समाज की सोच काफ़ी हद तक बदल चुकी थी| समय और समाज के साथ पिताजी भी बदल गए| यह मेरी किस्मत! हाईस्कूल के बाद मुझे कॉलेज में प्रवेश कराने के लिए भी उन्होंने ज्यादा सोचा नहीं| कोई भी उच्च शिक्षित लड़की केवल गृहिणी के रूप में रहना नहीं चाहेगी| अपने शिक्षा का सदुपयोग करना चाहेगी| जीवन में

कुछ हासिल करने की चाह लेकर घर से निकलती है| इस प्रकार का उत्साह और उमंग मुझ में भी था! पति की अच्छी नौकरी के बावजूद भी मैं नौकरी करने लगी| दीदी ज्यादा पढ़ी-लिखी न होने के कारण उनके लिए गावं से रिश्ता आया| जीजाजी ने पढ़े लिखे होने के पर भी खेती-बाड़ी को ही जीवन के लक्ष्य के रूप में चुना और अपने खेत में फसल उगाते गावं में ही रह गए| दीदी भी गावं के जीवन की आदी हो गई|

दीदी गांव से क्षीर*, अंबाडा पत्ते, शहजन(drumsticks), पापड़, बारी, नारियल की मिठाई आदि कई चीज़े लाई| संकोच के साथ कहने लगी,

"क्या कहें? सुदामा की तरह मैं भी गावं की चीज़े ले कर आई हूँ| पता नहीं आप लोगो को पसंद आएंगी कि नहीं ?"

"अरे दीदी! ऐसे क्यों बोल रही हो? ये सारी चीज़े हमें पसंद है और यहाँ मिलती भी तो नहीं! तुम्हारे दामाद को अंबाडा पत्ते(बीलू) से बनी चीज़े, क्षीर से बनी दाल, शहजन से बनी रसम बहुत पसंद है| इनके लिए तो यही मिष्ठान्न है | नौकरी के कारण मुझे घर पर पापड़-वापड़ बनाने का समय नहीं मिलता और समय मिले तो भी इस तरह के काम करने में आलस आता है| मुझे तो जानती ही हो न तुम......!"

हंसते हुए मैंने कहा|

"हाँ! छोटू! ऑफिस से चलकर घर आती हो। ये सारे काम कैसे कर पाओगी? इड़ली, डोसा आदि बनाने के लिए समय चाहिए! मुझे तो समझ नहीं आता कि घर और ऑफिस का काम तुम एक साथ कैसे कर पा रही हो?"

दीदी सांत्वना दे रही थी|

"क्या कहूँ दीदी! ये फिजूल की नौकरी! कभी-कभी सोचती हूँ कि नौकरी छोड़ दूँ!| दीदी, स्त्री के लिए पहली प्राथमिकता घर ही है। दोनों में तालमेल बैठाने के चक्कर में औरत न घर की न घाट की रह जाती है" स्वानुभव से कहा|

"नहीं! ऐसे क्यूँ सोचती हो छोटू! तुम कितनी भाग्यशाली हो! कहने की जरूरत नहीं है पर देखो कितनी अच्छी तरह से पढ़कर, मर्द के बराबर तुम भी नौकरी कर के कमा रही हो| दूसरों के सामने 'देहि' कर के हाथ फ़ैलाने की जरुरत नहीं है| मेरी तरह हर छोटी से छोटी चीज के लिए पराधीन हो कर जीने की आवश्यकता नहीं है| पति पर बोझ डाले बिना आराम से जी सकती हो|"

मैंने मन में सोचा कि दूर के ढोल सुहाने होते हैं|

बात बदलते हुए दीदी से पूछा,

"बेटी क्या पढ़ रही है?"

"एस.एस.सी. कर रही है| भगवान की कृपा से पास हो जाए तो कॉलेज में दाखिला दिलाने के जिद पर हूँ| पर बेटी को दूसरे प्रांत में भेज हास्टल में रखकर पढ़ाना उनको पसंद नहीं है| ......मुझे देख रही हो न? मैं कितनी परेशानियाँ उठा रही हूँ| आज कल औरत के हाथ में एखाद डिग्री रहना जरुरी है| नहीं तो मर्द की गुलाम बनकर जीना पड़ता है|"

दीदी अपना आक्रोश जताने लगी|

दीदी को बचपन से ही पढाई बहुत शौक था| परंतु पिताजी ने उसे नहीं पढाया| कोई एक छोटे से गणित का तुरंत जवाब दे नहीं पाई| तो सोचने लगे कि लड़की को ज्यादा शिक्षित करने की जरूरत नहीं है| और पिताजी भाई की पढाई पर ज्यादा ध्यान देने लगे| दीदी को गावं से रिश्ता आया| उन्हें घर-द्वार संभालना, सफाई, चूल्हे को गोबर से लीपना, कुए से पानी लाना आदि काम करके घर में एक तरह से गिरमिटिया जैसे रहना पड़ रहा था| माँ को दीदी की चिंता होती|

पुरानी बातें याद कर दीदी दुखी होने लगी| यह देखकर माहोल बदलने के लिए मैंने कहा,

"चलिये न... बाहर जा कर बैठेंगे दीदी !" कहते हुए उन्हें बरामदे में ले गई|

दीदी वहां पर रखे हुए गमलों के पौधों को देख रही थी| दीदी जितनी भी सब्जियां लाई थी वो सब उनके ही घर के बागीचे में उगाई और घर में बनाई हुई चीजें थी|

“दीदी, अगली बार कोई शहर आ रहा हो तो उसके हाथों अंबाड़े के बीज भेजो|”

“ठीक है छोटू!

ये तुरी पेड़ और अनार के पेड़ को क्यूँ इन गमलों में डाल दिया छोटू? कितने नाटे बन गए देखो! आँगन में डालती तो बड़े-बड़े पेड़ बनते| परंतु गमले में फूल के पौधे की तरह डालने से कैसे बड़े होंगे?”

दीदी दुख और आश्चर्य से बोल पड़ी|

मैं जोर-ज़ोर से हंसने लगी। दीदी एकदम चौक गई और पलट कर मेरी ओर देखने लगी|

“दीदी, मैंने जान-बूझकर ही गमले में डाला इसे! यह एक विशेष पद्धति है| जापान में इसे “बोनज़ाय” कहा जाता है| बरगद के पेड़ जैसे महावृक्ष को भी ऐसे छोटे गमले में डाला जा सकता है! छोटे गमले में अगर बीज डाल कर उसकी शाखाओं को कांट-छांट कर और गमले बदल- बदल कर पेड़ को छोटे कद में बढ़ाया जा सकता है| इस तरह के छोटे पेड़ों को बहुत सावधानी से बढ़ाया जाता है| बोनज़ाय एक कला है |

शायद दीदी को मेरी बातें अच्छी नहीं लगी! गहरी सांस भरते हुए वे कहने लगी... “क्या कहे? कोठरी की ऊँचाइयों तक जानेवाली तुराई को इस छोटे गमले में बाँध लिया?”

दीदी को मैं बोनज़ाय कला से खुश नहीं कर सकी| निरुत्साह होकर कुर्सी पर बैठ गई | मैंने जिसे कला के रूप में देखा, वह सब परिश्रम मिट्टी में मिल गया| इतने में अचानक धूल आंधी उड़ने लगी| रेत भरी हवा हमारे चेहरों पर झपेड़े मारने लगी| दीदी का हाथ पकड़ कर मैं उन्हें कमरे में ले आई और जल्दी-जल्दी खिडकियां बंद करने लगी| मिनटों में बदले इस मौसम को देख कर दीदी को अचरज हुआ|

“छोटू! ये क्या? ....अभी तो मौसम ठीक था! इतने में धूल-आंधी कैसे चलने लगी? सडक तो पूरे डांबर के हैं?

“हाँ! इस महानगर में ऐसा ही है दीदी! देखते-देखते राजस्थान के रेगिस्तान से रेत लाकर हवा हमें थपेड़े मार चली जाती है।

इतने में बूंदा-बाँदी होने लगी | टप....टप... की आवाज|

मैंने बरामदे का दरवाजा खोलकर बोनज़ाय पेड़ों के गमले छत के नीचे रख दिए| तेज हवा और बारिश शुरू हो गई| दीदी खिड़की खोल कर गली की ओर झांकी और कहने लगी,

“देखो छोटू उस ओर...”

दीदी की पुकार में नया जोश दिखाई दिया| मैंने भी कूतूहल से देखा| लेकिन समझ नहीं पाई । और दीदी की ओर देखा| फिर भी समझ में नहीं आया तो पूछा,

“क्या है दीदी?”

“देखो! रास्ते पर खड़े उस वृक्ष की ओर... उसकी छाव में आकार कितने लोग भीगने से बच रहे हैं!”

दीदी तो जैसे कोई नया विषय बोल रही थी| मुझे तो बहुत साधारण सा विषय लगा| वह समझ गई और बोलने लगी...

“देखो! वह तुरा पेड़ कितना बड़ा हो गया है खुली हवा में! कितनी ही बड़ी आंधी-तूफान आए पर वह खड़ा ही रहता है और तो और कितने लोगों का आश्रय बनता है| धूप में भी कितने लोग उसके छाव में अपनी थकान दूर करते हैं!

“उस में बड़ी बात क्या है दीदी?” मैंने कहा |

"क्यों नहीं है? ...तुम्हारे प्यारे बोनज़ाय को देखो! देखने में सुंदर लग रहा है। एक अच्छी गृहिणी की तरह! परंतु कितना नाज़ुक! उसे तो संभाल कर ही रखना पड़ेगा| छोटासा तूफान भी नहीं सह सकता| खुद ही दूसरों पर आश्रित है तो दूसरों को क्या छाव देगा? इस समाज में बेटे और बेटी के पालन-पोषण में अलगाव के कारण ही स्त्री का जीवन भी बोनज़ाय बन गया है| वह हर छोटी से छोटी चीज के लिए दूसरों पर आश्रित है|"

दीदी की बातों से मेरा मन पिघल गया। मन किया कि जैसे पिंजरे से पक्षी को मुक्त किया जाता है, मैं अपने बोनज़ाय पेड़ों को भी गमलों के बंधन से मुक्त कर स्वतंत्र रूप से बढ़ने के लिए मिट्टी में रोप दूँ..........!!!

*क्षीर : आंध्र प्रांत में कीरा जैसे गोल-गोल पीली और हरे रंग में सब्ज़ी मिलती है। उससे अचार, चटनी, सब्ज़ी(curry) और दाल बनाकर चावल के साथ खाते हैं। इसे सांबार में भी डाला हैं।

बात-चीत

TRANSFRAME TEAM

प्रह्लाद अग्रवाल

यायावर , आशिकमिज़ाज. संगीत, साहित्य और सिनेमा सिनेमा से गहरी आशिकी

प्रह्लाद अग्रवाल हिन्दी सिनेमा पर मनोमुग्धकारी व्याख्यानों के लिए विख्यात हैं । सिनेमा के साथ ही शैक्षणिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक विषयों पर पर बेशुमार रचनाएँ विगत चालीस वर्षों की श्रेष्ठतम, सर्वाधिक लोकप्रिय और शीर्ष व्यावसायिक एवं साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। हिन्दी सिनेमा पर अनेक पुस्तकें प्रकाशित और शीघ्र प्रकाश्य होने जा रही हैं। ट्रांसफ्रेम अपने पाठकों के समक्ष लेकर आया है प्रह्लाद अग्रवाल से जुड़े कुछ अनछुए पहलू।

आप परिचय के मोहताज नहीं हैं फिर भी हम आपके बारे में थोड़ा शुरुआत से जानना चाहते हैं।

फिल्म मेरा जुनून,मेरा शौक था और जब मै बहुत छोटा था तब मैंने पहली फिल्म देखी थी राज कपूर की अनाड़ी 1959 में। उस समय कुछ नहीं जानते थे। उस समय आई एम 11 येयर्स ओल्ड। सिनेमा के बारे में कुछ पता नहीं था, घर मे सिनेमा के मामले में स्ट्रिक्ट माहौल था। 8 वी क्लास में मै शनिवार को हाफ टाइम में स्कूल से गोल मार कर मैटिनी शो देखने जाया करता था। कई बार एक फिल्म को दो दिन मे देखा करता था आधी-आधी ताकि घर पर पता न चले। इस तरह से छुप-छुपा के फिल्मे देखा करता था। पर मै एक तरह से थोड़ा विद्रोही था। 12 साल के बाद मैंने कभी किसी से एक पैसा नहीं माँगा।

प्रह्लाद अग्रवाल

सबसे पहले जो सिनेमा का काम मैंने किया था वो.... मेरी हैंड राइटिंग बहुत अच्छी थी तो उसका फायदा मैंने उठाया। 1960 में हमारे जबलपुर में स्टेबलिश हुई थी सबसे अच्छी टॉकीज, पहली एयर कूल टॉकीज। तो उसमे मै पोस्टर लिखने लगा। मुझे लगता था कि पैसे कमाना ज्यादा इंपोर्टेंट हैं अपने पैरों पर खड़ा होना, इसलिए 11 वी के बाद मेरी पढ़ाई लगभग बंद ही हो गई। मै कलकत्ता भाग गया मौसा जी के पास नौकरी करने 6-8 महीने नौकरी कि। फिर मै जबलपुर आ गया, मै रहने वाला जबलपुर का हूँ, सतना का नहीं हूँ। जबलपुर मे पोस्ट अँड टेलीग्राफ में शोर्टर की नौकरी लग गई। उसके बाद 18 जुलाई 1965 को जब मै 18 साल का हुआ तो वैसे ही मुझे सरकारी नौकरी मिल गई। mpsb मे लोअर डिवीजन क्लर्क। वहाँ रहते हुए मैंने अँग्रेजी, हिंदी और संस्कृत साहित्य से बीए किया।

फिल्म लेखन मे आपका आना कैसे हुआ?

फिल्म लेखन मे मै नहीं आया। ये लोगों मे बड़ा भारी भ्रम है। ये तो मैंने जो फिल्में देखी, हालाकी मैंने कभी सोचा नहीं था....मैंने शुरू शुरू में कहानियाँ लिखीं, कई कहानियाँ छपी, फिर मेरा एक उपन्यास छपा।मेरी पत्नी बहुत बड़ी लेखिका थीं वर्तिका अग्रवाल उसे भी सिनेमा देखने का बहुत शौक था। ऐसे ही फिल्म देखने गए, विश्वनाथ। ऐसे ही बातों बातों मे मैंने कहा कि एक लेख लिख दूँ शीर्षक होगा- विश्वनाथ बाबू आप मुक़द्दमा हार गए। तो उसने बोला बोलो बोलो लिख के भेज दो कहीं। मैंने कहा पागल हो क्या सिनेमा पर भी कोई लिखता है क्या? उस समय मैंने सोचा ही नहीं था। मैक मिलन से मेरी किताब छप गई थी तब तक तो बड़ा जंका मंका था।बहुत बड़ी बात थी उस समय 26 साल के लड़के की मैक मिलन से किताब आ रही है। तो ऐसे ही लिखा मैंने क्या लिखा उसने लिखा लिखा और उसे भेज

दिया मायापुरी में। जैसे ही मेरा लेख गया तो चौथे ही दिन उनका पत्र ही नहीं आया, पत्र के साथ 60 रुपये का पारिश्रमिक भी आया। 1977 मे 60 रुपये बहुत बड़ी रकम थी। उस समय मेरी तनख्वाह 800 रुपये लगभग थी। तो एक लेख का 60 रुपये बहुत बड़ी बात थी। तो उनका पत्र आया उसमे लिखा था कि आपका लेख मिला इस अंक मे आ रहा है। और 60 रुपये पुरस्कार राशि भेजी जा रही है। वो पुरस्कार राशि थी पारिश्रमिक नहीं। और उन्होने लिखा था कि यदि आप चाहे तो दो तीन लेख और लिख दें इन इन लोगों पर। फिर क्या 60 रुपये की स्फूर्ति मे मैंने तीनों लेख लिख दिये। फिर क्या दूसरे दिन उन्हे फिर भेज दिए। तो जो अगला अंक आया उसमे तीनों लेख छपे। 77-78 के बीच 14 महीनों में मायापूरी में मेरे लगभग सवा सौ लेख छपे और जितना मुझे नौकरी से पैसा मिलता था लगभग उतना ही मायापुरी से। उसके बाद जहां भी भेजो छप जाती थी। ऐसी कोई पत्रिका नहीं थी जिसमे मेरे लेख न छपे हों। छपता रहा और मै लिखता रहा। इस प्रकार लिखना शुरू हुआ। इसके बाद मै काफी बीमार रहा, जब बीमारी से उठा 1981 में तो मन मे आया कि राज कपूर पर किताब लिखूँ। मुझे राज कपूर अतिशय प्रिय थे। और जो ईमानदारी कि बात है वो किताब 10 दिन में लिखी। तो सिनेमा वो है जो लोग देखना चाहते हैं। लोग पागल नहीं हैं। लोग कुछ भी नई देखना चाहते, लोग वो देखना चाहते हैं जो उनके दिल को छूता है। तो वो पढ़ना भी वही चाहते हैं जो उनके दिल को छूता है। तो मैंने वो राज कपूर पर किताब लिखी।

तो सिनेमा पर जो आपकी पहली किताब है वो राजकपूर पर है।

हाँ पहली किताब जो छपी थी राज कपूर पर है 1984 में। फिर दूसरी किताब जो छपी वो गुरुदत्त पर। और भी कितबे छपी। वसुधा के फिल्म विशेषांक का जो संपादन मैंने किया था वो बहुत ही लोकप्रिय हुआ, उससे बड़ा वसुधा का फिल्म अंक नहीं निकला। फिर मैंने बहुत बड़े बड़े लंबे लेख लिखे।

वसुधा फिल्म विशेषांक

फिलहाल आप किन किन किताबों पर काम कर रहे हैं?

ये किताब पहले चार खंडों में प्रस्तावित थी लेकिन जब इसका इंडेक्स बनाया तो वही केवल 600 पन्नों की थी। तो अब उसके छः खंड होंगे। मै चाहता हूँ कि मेरी किसी एक किताब की एक लाख प्रतियाँ छपे और ऐसी मेरी कोशिश है एक किताब मै ऐसी किए हुए हूँ। छोटी सी किताब है और उस किताब पर मुझे बड़ा भरोसा है और वो किताब जल्दी ही आएगी और छः खंडो वाली किताब के पहले आ जाएगी- महाबाजार के महानायक। लोग कहते है कि ये तो कविता है, मै कहता हूँ ये कविता नहीं गद्य है। मै लिखता ही ऐसा हूँ।

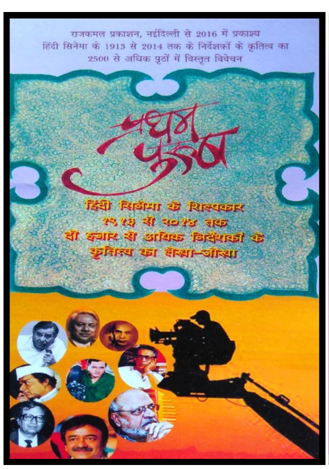

अभ्यास

संपादक

ध्वनि अंकन एवं ध्वनि पथ निर्माण की प्रक्रिया एवं उपयोगिता

ध्वनि अंकन एवं ध्वनि पथ निर्माण तकनीकी रूप से उतना ही जटिल है जितना कि फोटोग्राफी, और इसे सीखने मे थोड़ा समय लगता है। यह पढ़ कर या जल्दी से सीख लेने वाली विधा नहीं है। इसकी समझ केवल और केवल इसे व्यावहारिक रूप से करने पर ही विकसित हो सकती है। फिर भी कुछ आधारभूत जानकारियाँ होनी आवश्यक है। उदाहरण के लिए -ध्वनि कैसे रेकॉर्ड होता है,ध्वनि अंकन के उपकरण,उनके प्रकार और उनकी कार्य पद्धति , उससे जुड़े उपकरण और कंप्यूटर सॉफ्टवेयर की जानकारी होने पर ही उनका समुचित उपयोग किया जा सकता है।

ध्वनि अंकन एवं ध्वनि पथ निर्माण तकनीकी रूप से उतना ही जटिल है जितना कि फोटोग्राफी, और इसे सीखने मे थोड़ा समय लगता है। यह पढ़ कर या जल्दी से सीख लेने वाली विधा नहीं है। इसकी समझ केवल और केवल इसे व्यावहारिक रूप से करने पर ही विकसित हो सकती है।

साउंड के प्रकार :-

मुख्य रूप से साउंड तीन प्रकार के होतें हैं। स्पीच, म्यूजिक, साउंड इफेक्ट। इन तीनों को भी अलग अलग बाँट सकते है।

स्पीच	म्यूजिक	साउंड इफ़ेक्ट
• डायलॉग • मोनोलॉग • वॉइस ओवर	• लाइव म्यूजिक • रेकोर्डेड म्यूजिक • बैकग्राउण्ड म्यूजिक	• हार्ड या कट इफ़ेक्ट • फोली साउंड इफ़ेक्ट • एम्बिएंस • डिज़ाइन साउंड इफ़ेक्ट

स्पीच :-

स्पीच फिल्म के कहानी को समझने का सबसे महत्वपूर्ण टूल है। अतः यह आवश्यक कि यह समझ मे आने योग्य हो साथ ही जितना हो सके रियलिस्टिक हो। डायलॉग एडिटर उनके ट्रैक्स के लिए कई श्रोतों पर निर्भर रहते हैं जैसे :- ऑन सेट डायलॉग [शूटिंग के दौरान],वाइल्ड लाइंस डायलॉग [शूटिंग के बाद उसी लोकेशन पर]सिंक्रोनाइज्ड डायलॉग [पोस्ट प्रोडक्शन मे रेकॉर्ड]

म्यूजिक :-

फिल्मों के लिए म्यूजिक अलग से कंपोज किए जाते हैं। कंपोजर, डायरेक्टर, साउंड एडिटर,साउंड डिज़ाइनर पूरी फिल्म को स्पॉट [कहाँ और कैसा]करते है।

साउंड इफेक्ट :-

वो सभी साउंड जो हम मूवी मे सुनते है जो डायलॉग या म्यूजिक नहीं है, साउंड इफेक्ट के अंतर्गत आते हैं। यह दर्शकों की आशा होती है कि जो कुछ वो पर्दे पर देखा रहे हैं और वो रियल लाइफ मे जैसी आवाज़े करती है उन्हे सुनाई देना चाहिए।

द हार्ड / कट इफेक्ट –

दर्शकों की इसी आशा को हार्ड साउंड इफेक्ट द्वारा कवर किया जाता है। इनका उपयोग कट इफेक्ट मे भी होता है। हार्ड इफेक्ट कभी भी सेट पर रेकॉर्ड नहीं किए जाते। इन्हे साउंड इफेक्ट लायब्रेरी से लिया जाता है।

फोली इफेक्ट :-

फोली साउंड इफेक्ट रेकोर्डिंग स्टुडियो [जिसे फोली स्टेज कहते है] मे बनाया जाता है। फोली आर्टिस्ट पिक्चर को देखते हुए उसी प्रकार का एक्शन करता है। फोली इफेक्ट का सबसे अच्छा उदाहरण है –चलने की आवाज़ (फुट स्टेप्स)। यह इफेक्ट मूवी को और ज्यादा वास्तविकता के करीब ले जाता है।

एम्बिएंस :-

यह सेट या लोकेशन की बैक्ग्राउण्ड म्यूजिक की रिकॉर्डिंग होती है। यह लो फ्रिक्वेंसी की कॉटीन्युअस साउंड होता है। यह सीन कंटिन्युटी मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

डिज़ाइन साउंड इफेक्ट :-

ये ऐसे साउंड है जो सामान्य रूप से प्रकृति मे घटित नहीं होते तथा इन्हे रेकॉर्ड करना असंभव होता है। ये इमोशनल मूड क्रिएट करने के लिए प्रयोग होता है। इस प्रकार का इफैक्ट सबसे पहले किंग काँग (1933) मे आया।

ध्वनि अंकन से पूर्व :-

सबसे पहले हमे यह तय कर लेना चाहिए कि हम क्या फिल्माने जा रहे हैं। यह बात हमारे दिमाग मे होनी चाहिए कि वास्तविक साउंड हमारी छवियों को सजीवता प्रदान करता है तथा फिल्म को जीवन के करीब लाता है साथ ही दर्शकों को फिल्म से जोड़ता है। केवल वॉइस ओवर या म्यूजिक होने पर अलग प्रभाव होता है।

अतः यह चुनाव हमे पहले ही कर लेना चाहिए कि हम किस प्रकार का साउंड चाहते हैं। साउंड की गुणवत्ता कैसी होगी यह बात साउंड रिकॉर्डिंग के दौरान या बाद नहीं बल्कि उसी वक्त तय हो जाती है जब हम ध्वनि उपकरणों का चुनाव करते हैं।

आवश्यक ध्वनि उपकरण :-

यहाँ पर हमे ध्वनि अंकन की प्रक्रिया को देखना है न कि ध्वनि उपकरणों के प्रकार या उनकी कार्यपद्धति। अतः कुछ अति महत्वपूर्ण उपकरणों की चर्चा करना चाहूँगा जो कि साउंड रिकॉर्डिंग के लिए बहुत ही जरूरी है तथा जिनके बिना गुणवत्ता वाली ध्वनि प्राप्त करना संभव नहीं है।

मिक्सर :-

इसका उपयोग अलग अलग साउंड चैनल को मिक्स करने के लिए होता है। यह दो प्रकार का होता है [1] फील्ड मिक्सर [2] स्टुडियो मिक्सर

रिकॉर्डर :-

यह पहले एनालॉग[मग्नेटिक टेप & एनालॉग मीटर वाले रेकॉर्डर] होता था जैसे न्यागरा। आज कल डिजिटल रेकॉर्डर का प्रयोग

किया जा रहा है।

कैमरा:-

हमारा कैमरा भी एक ध्वनि अंकन का उपकरण हैं और इसका फंक्शन भी अन्य रिकॉर्डिंग फंक्शन से ज्यादा अलग नहीं होता है। फिर भी इसके सभी फंक्शन और बटन्स पर अच्छी पकड़ होनी चाहिए।

हैडफोन :-

क्लोज्ड कप [न कि इन ईयर] हैडफोन मिनी-जैक कनेक्टर के साथ। साथ में हैडफोन केबल के लिए एक एक्सटेंशन [mini-jack socket to mini-jack plug]।

माइक्रोफोन :-

हमारे पास उपयुक्त माइक्रोफोन होने चाहिए [आदर्श रूप से डायरेक्शनल या शॉटगन]।

क्लिप या माउंट :- इसकी सहता से हम माइक को पोल,माइक स्टैंड,या फिर हैंड हेल्ड पिस्टल ग्रिप से जोड़ सकते हैं।

केबल्स :-

कम से कम 3 मीटर लंबी केबल का होना जरूरी है जिसके द्वारा साउंड को माइक से रिकॉर्डिंग उपकरण तक लाया जा सके। इसके अलावा हमे छोटे छोटे एक्सटैन्शन भी रखने चाहिए ताकि हम माइक को एक्शन के ज्यादा पास रख सके ।इसके अलावा बॅक अप भी होना चाहिए ताकि केबल खराब होने पर हमारी रिकॉर्डिंग बर्बाद न हो जाए।

बूम पोल :-

यदि हम चलते हुए बात करते हुए लोगो को फिल्माना है तो हमे वास्तव मे एक एक्स्टेंडिंग पोल [1.5 -3m] की आवश्यकता होगी। बूमिंग दो प्रकार से की जाती है सबजेक्ट के ओवर हैड और अंडरनीथ।

रिकॉर्डिंग मीडिया और बैटरी :-

खाली मेमोरी कार्ड्स, हार्ड ड्राइव तथा अतिरिक्त बैटरी या फिर पावर सोर्स , अन्य सभी आवश्यक केबल्स के साथ।

कोंपटिबिलिटी :- इस बात का ध्यान रखना बहुत ही आवश्यक है कि सभी उपकरण, केबल्स और सॉफ्टवेर जिस पर हमे अपना बहुमूल्य डाटा रखना है हमारे पास उपलब्ध हो तथा कंपेटबेल हों।

किट व रिकॉर्डिंग साउंड का परीक्षण :-

रिकॉर्डिंग उपकरण को इकट्ठा करना ही पर्याप्त नहीं है उनका अच्छे तरीके से कार्य करना भी आवश्यक होता है। सभी उपकरण ठीक ढंग से कार्य कर रहे हैं या नहीं यह पता लगाने के लिए किट का परीक्षण करना होता है।

इसके लिए सभी माइक चालू करते है उन्हे रिकॉर्डिंग उपकरण से केबल्स द्वारा जोड़ते है। यदि कैमरे मे साउंड रेकॉर्ड करना है तो माइक को उससे जोड़ते हैं।

साउंड लेवेल सेट करना :-

साउंड लेवेल को सेट करना आवश्यक होता है। साउंड लेवेल को हमेशा मध्य मे रखने की कोशिश करनी चाहिए। AGC [automatic gain control]का उपयोग भी कर सकते हैं परंतु अच्छे परिणाम के लिए इसे मन्नुयल सेट करना सही होता है।

एक टेस्ट रिकॉर्डिंग :-

टेस्ट रिकॉर्डिंग बिलकुल वास्तविक रिकॉर्डिंग की तरह की जाती है। कम से कम एक मिनट तक रिकॉर्डिंग करनी चाहिए। ध्यान से आवाज को सुनने का प्रयास करना चाहिए। आवाज़ और सामान्य बैक ग्राउंड के वॉल्यूम के अंतर पर ध्यान देना चाहिए। यहाँ पर

हम सही साउंड लेवेल को सेट कर सकते हैं।

रिकॉर्डिंग रोक कर रेकोर्ड हुए साउंड को फिर सुनते है और आवश्यकतानुसार लेवेल और माइक की स्थिति को सेट करते हैं।

सावधानी :- कई बार हमारे हैडफोन का वॉल्यूम कम या ज्यादा होता है अतः सतर्क रहना चाहिए।

ध्वनि अंकन से जुड़ी कुछ आवश्यक बातें

ध्वनि आसानी से नियंत्रित नहीं होती है -

जब हम कैमरा शॉट का निर्धारण करते हैं तो हमे फ्रेम के साइज़ को नियंत्रित करने का प्रयास करना चाहिए कि फ्रेम में क्या है और क्या नहीं है। साउंड हर जगह यात्रा करता है वहाँ भी जहां हम नहीं चाहते। हमारा वातावरण कई प्रकार के ध्वनियों और शोर से भरा हुआ है जो कि हमारे विडियो से संबन्धित नहीं होता है।

माइक्रोफोन को पास रखें –

जितना संभव हो माइक्रोफोन को सबजेक्ट के पास और उसके मुंह के सीध में रखने का प्रयास करना चाहिए। इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि सबजेक्ट के ऊपर और फ्रेम में माइक की शैडो नहीं आनी चाहिए।

अच्छे साउंड के लिए लोकेशन को नियंत्रित करें –

लोकेशन पर जितनी ज्यादा शांति होगी उतना ही ज्यादा मनचाहा और क्लियर साउंड रेकॉर्ड करना आसान होगा। कई बार हम कुछ धावनियों को नियंत्रित कर सकते हैं। या फिर उस लोकेशन पर किसी समय विशेष पर जब शोर सबसे कम होता हो, फिल्मांकन कर सकते हैं।सभी के मोबाइल फोन ऑफ होने चाहिए।

अकौस्टिक्स [इन्डोर]

किसी भी लोकेशन की साइज़ शेप और नेचर उसमे ट्रेवेल करने वाली साउंड को प्रभावित करती है। इंडोर लोकेशन पर रिकॉर्डिंग करने से पहले उसका अकौस्टिक्स पता कर लेना चाहिए। ताली बाजा कर या ज़ोर से बोल कर देखते हैं। इको जितना ज्यादा है उतना ही ज्यादा खराब साउंड रेकॉर्ड होगी। ऐसे लोकेशन से बचना चाहिए।

आउट डोर और हवा :-

माइक्रोफोन हवा के वाइब्रेशन को पकड़ लेते हैं अतः हमे माइक्रोफोन को हवा के सीधे संपर्क से बचाना होता है।इसके लिए विंड शील्ड , विंड जैमर या सोफ़्टी [फ़र से बना सुरक्षात्मक आवरण] का उपयोग करना चाहिए।

शूटिंग की सबसे पहली रिकॉर्डिंग को प्ले करके देख लेना चाहिए कि यह ठीक ढंग से रेकॉर्ड हुआ है या नहीं।

साउंड ट्रैक का निर्माण

सामान्य रूप से साउंड रिकॉर्डिंग 2 चैनल में [स्टेरिओ अर्थात दो ट्रैक्स [LR]] की जाती है। यहाँ पर हमे दो ट्रैक्स प्राप्त हो जाते हैं। ये तो ऑन लोकेशन की बात हुई। हम फिल्म मे जितने प्रकार के साउंड का प्रयोग कर रहे है उन सभी के लिए अलग अलग साउंड ट्रैक्स का निर्माण किया जाता है। उदाहरण के लिए हम निम्न साउंड फिल्म मे प्रयोग कर रहे है :-

- **डायलॉग**
- **मोनोलॉग**
- **वॉइस ओवर**
- **लाइव म्यूजिक**

- **रेकोर्डेड म्यूजिक**
- **बैक्ग्राउण्ड म्यूजिक**
- **हार्ड या कट इफेक्ट**
- **फोली साउंड इफेक्ट**
- **एम्बिएंस**
- **डिज़ाइन साउंड इफेक्ट**

यहाँ पर 10 प्रकार के साउंड के लिए कम से कम 10 साउंड ट्रैक्स बनेगें। डायलॉग के लिए एक से ज्यादा ट्रैक्स का निर्माण किया जा सकता है। साउंड ट्रैक्स के निर्माण के लिए सभी साउंड को अलग अलग रेकॉर्ड कर लिया जाता है।इन सभी साउंड ट्रैक्स को कम्प्युटर मे इंपोर्ट कर साउंड मिक्सिंग सॉफ्टवेर द्वारा मिक्स कर फ़ाइनल ट्रैक का निर्माण कर लिया जाता है।

साउंड ट्रैक बनाते वक्त हमे सिग्नल प्रोसेसिंग द्वारा उसकी गुणवत्ता मे सुधार कर लेना चाहिए। अब कंप्यूटर द्वारा भी काफी हद तक साउंड की गुणवत्ता में सुधार कर लिया जा सकता है। विभिन्न प्रकार के स्पेशल साउंड टेक्नोलोजी जैसे डॉल्बी डिजिटल ,5.1 सराउंड साउंड का निर्माण पोस्ट प्रोडक्शन मे कंप्यूटर सॉफ्टवेअर द्वारा किया जाता है।

-:उपयोगिता:-

फिल्म निर्माण में साउंड एक ग्रामेटिकल भूमिका निभाता है। यह फिल्म के लिए कंटिन्युटी का एक फॉर्म या कनेक्टिव टिसू उपलब्ध कराता है। फिल्म साउंड की दो मुख्य उपयोगिता है-

- हाइपर- रिऐलिटि पैदा करना
- पिक्चर के साथ सह-संबंध [co-relation]बनाना
- साउंड कहानी को सपोर्ट करता है तथा उसके प्रभाव को बढ़ता है।
- बिना नरेटिव सीधे साउंड भी कहानी कह सकता है।
- संपादन के दौरान संवादो के मध्य के रिक्त स्थान को भरने में भी इनकी उपयोगिता है।
- मूड /इमोशन का निर्माण।
- किसी चरित्र विशेष को एस्टब्लीश करना।

इस प्रकार हम फिल्मों मे ध्वनि अंकन एवं ध्वनि पथ निर्माण की प्रक्रिया एवं उसके महत्व को समझ सकते हैं।

अभ्यास

संपादक

अनुवाद का व्यावहारिक संदर्भ

पिछले अंक में 'अनुवाद का सैद्धांतिक संदर्भ' शीर्षक के अंतर्गत अनुवाद क्या है? उसका स्वरूप, प्रकृति, प्रक्रिया क्या है यह देखा| अनुवाद सिद्धांत वास्तव में अपने व्यावहारिक लक्ष्य की प्राप्ति का ही परिणाम है| अनुवाद के वर्गीकरण के कई आधार है | विषयवस्तु को ध्यान में रख कर अनुवाद पर बात करें तो इसके दो प्रकार हैं- एक साहित्यिक अनुवाद और दूसरा साहित्येतर अनुवाद| देखा जाएं तो साहित्यिक और साहित्येतर लेखन अनुवाद के माध्यम से ही विश्व में प्रसारित हो रहा है। विशेष रूप से साहित्येतर विषयों का अनुवाद आज ज्ञान-विज्ञान के प्रचार और प्रसार की दृष्टि से अनिवार्यता बन गया है।

साहित्येतर अनुवाद एक नवीन कार्यक्षेत्र के रूप में स्थापित होने के कारण अखिल भारतीय स्तर पर कामकाजी भाषा के रूप में हिंदी के विकास में भी अनुवाद की अनिवार्य आवश्यकता है। साहित्येतर अनुवाद की उपयोगिता और महत्व आज के संदर्भ में तो स्पष्ट ही है। इसी के चलते साहित्येतर अनुवाद के अनुवाद सिद्धांत और व्यवहार को एक नई दिशा प्रदान की है। आज यह अनुवाद चिंतन का मुख्य विषय बन गया है। साहित्येतर अनुवाद में कार्यालयीन अनुवाद भी शामिल है| अत: इस अंक में अनुवाद के व्यावहारिक पक्ष के संदर्भ में कार्यालयीन अनुवाद पर बात की जा रही है|

कार्यालयीन अनुवाद

कार्यालयीन अनुवाद से आशय 'कार्यालय के कामकाज में प्रयुक्त साहित्य के अनुवाद' से है| कार्यालयी साहित्य में सरकार के कार्यालयी कार्यवृत्तों का विवेचन-विवरण होता है| कार्यालयी साहित्य मुख्य रूप से दो प्रकार का होता है- मसौदा-टिप्पणी के रूप में दैनंदिन पत्राचार और दूसरा संसद के प्रश्नोत्तर, नियतकालिक प्रशशानिक रिपोर्टें, राजपत्र में प्रकाशित होने वाली अधिसूचनाएं एवं संकल्प, सार्वजनिक सूचनाएँ, जनसमान्य और समाचारपत्रों के लिए प्रकाशित की जाने वाली प्रेस-विज्ञप्ति, प्रेस-टिप्पणी, प्रेस-प्रकाशनी आदि है|

आज सभी कार्यालयों मे हिंदी में काम करने पर बल दिया जा रहा है| परिणामत: अनुवाद का महत्व अपने आप ही बढ़ गया|

कार्यालयीन साहित्य की भाषा

सरकारी साहित्य की प्रकृति के अनुरूप कार्यालयीन भाषा का स्वरूप निर्धारित होता है| कार्यालयीन भाषा के चार गुण माने गए है:

1. निर्वैयक्तिकता
2. तथ्यों में स्वपूर्णता और स्पष्टता
3. यथासंभव असंगदिग्धता
4. वर्णनात्मकता

साहित्येतर अनुवाद की उपयोगिता और महत्व आज के संदर्भ में तो स्पष्ट ही है। इसी के चलते साहित्येतर अनुवाद के अनुवाद सिद्धांत और व्यवहार को एक नई दिशा प्रदान की है। आज यह अनुवाद चिंतन का मुख्य विषय बन गया है। साहित्येतर अनुवाद में कार्यालयीन अनुवाद भी शामिल है| अत: इस अंक में अनुवाद के व्यावहारिक पक्ष के संदर्भ में कार्यालयीन अनुवाद पर बात की जा रही है|

निवैयक्तिकता

सरकारी तंत्र में अधिकारों का वितरण सोपान क्रम के आधार पर होता है| अत: प्रत्येक अधिकारी या तो अपने उच्चाधिकारियों के आदेश का पालन करता है या निम्न अधिकारी को आदेश देना है या सरकारी निर्णयों की सूचना देता है| इसलिए सरकारी अधिकारी का सरकारी आदेशों से व्यक्तिगत संबंध नहीं होता| अधिकारी व्याकरिगत रूप से कुछ न कहकर निवैयक्तिक रूप में कहता है| जैसे- पत्र भेजा जा रहा है| यही कारण है कि कार्यालय की भाषा में कर्मवाच्य की प्रधानता रहती है|

उदाहरण :

PREESSNOTE

INDEPENDENCE DAY FUNCTION AT AAYAKAR BHAVAN,NAGPUR

Independence Day was celebrated by the Income Tax Department at Aayakar Bhavan, Nagpur. The National Flog was hoisted by Shir M D Kabra, chief Commissioner of Income Tax ,Nagpur .

After greeting the members of the Income Tax Department and other dignitaries present on the occasion ,Shri M.D.Kabra spoke on the importance of the contribution of the Income Tax Department to the National Exchequer. He reiterated the glorious past of India and the development of the country after independence. He also spoke about the contribution of Indians towards spirituality and scientific research in the world.

He stated that this Independence Day is very special for the Income Tax Department as this year on 24July 2110 the regime of Income Tax in India completed 150years. Form a meager tax collection of Rs.1.35crores in 1860-61the collection of taxes has risen manifold with the present collection of about Rs.3,80,000 crores in the preceding financial year. A new citizen charter was also released on 24 July 2010 Which shows the determination of the Department to offer quality service to tax-payers.

3

Shri M.D.Karbra lauded the efforts of the officers and staff of the Income Tax Department , Nagpur and urged them to continue to work sincerity, commitment and dedication to achieve the targets set by the Government and contribute to the progress of the Nation.

The function was largely attended by the officers and staff of the Income Tax Department , Nagpur as also by the representatives from Nag Vidarbha Chamber of Commerce, Nagpur Chamber of Commerce, Institute of Chartered Accountants of India, Income Tax Bar Association and Vidarbha Industries Association , Nagpur. Retired officers of the Department were also present on the occasion

मूल-

कार्यलाय मुख्य आयकर आयुक्त नागपुर

आयकर भवन तेलंगखेड़ी रोड, सिविल लाइन्र्स नागपुरा–44001

दूरभाष नंबर–(0712)–2565098 / फैक्स नंबर– (0712)–2565654

प्रेस विज्ञप्ति

आयकर भवन नागपुर में गणतंत्र दिवस समारोह संपन्न

आयकर विभाग, नागपुर द्वारा आयकर भवन, नागपुर के प्रांगण में गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन काफी उत्साहपूर्वक किया गया। इस अवसर पर अधिकारियों और कर्मचारियों की भारी उपस्थिति के बीच मुख्य आयकर, श्री मोहन दास काबरा ने आयकर भवन के प्रांगण में राष्ट्रध्वज फहराया।

इस अवसर पर आयकर विभाग के उपस्थित सदस्यों तथा अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों का अभिनंदन करते हुए श्री एम.डी. काबरा ने राष्ट्रीय कोष में आयकर विभाग के योगदान का महत्व विषद किया। अपने भाषण में उन्होंने भारत के वैभवशाली इतिहास को दोहराते हुए स्वतंत्रता के बाद में देश में हुए विकास के बारे में अपने विचार व्यक्त कर कहा कि हमारे देश की चलन मुद्रा के प्रतीक में हुए परिवर्तन से अवगत कराया जो कि संपूर्ण विश्व में ऐसा करने वाला पाँचवा देश है। विश्व में आध्याात्मिक एवं वैज्ञानिक अनुसंधान के क्षेत्र में भारतीयों के बहुमूल्य योगदान के बारे में भी उन्होंने उदाहरण प्रस्तुत किए। उन्होंने कहा कि नागपुर का संबधं देश के बहुत से विश्वमान्य व्यक्तियों के साथ घष्टिता से जुड़ा हुआ है। श्री काबरा जी ने 26 जनवरी 1950 को भारत के गणतंत्र बनने के फलस्वरुप संविधान द्वारा प्रदत्त मतदान के अधिकार का महत्व प्रतिपादित किया। उन्होंने नागरिकों से आग्रहपूर्वक कहा कि वे उन्हें संविधान द्वारा प्रदत्त मतदान अधिकार का महत्व समझें।

श्री एम.डी. काबरा ने आयकर विभाग, नागपुर के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा कर संग्रहण के मामले में किए गए प्रयासों की प्रशंसा की तथा उनसे अनुरोध किया कि वे भारत सरकार द्वारा तय किए गए लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्धता एवं समर्पित भाव से काम करतें हुए राष्ट्र के विकास में अपना योगदान दें। इसी अवसर पर उन्होंने वर्ष 2010में उत्कृष्ट कार्य करनेवाले विभाग के कर्मचारियों का सत्कार किया। इसी के साथ भारत में आयकर के 150 वर्ष पुर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया।

ध्वजारोहण समारोह के पश्चात आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा देशभक्ति पर गीत प्रस्तुत किए गए जिसे मुक्तकंठ से सराहा गया। इस गणतंत्र दिवस समारोह में आयकर विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के अलावा नाग विदर्भ चेम्बर ऑफ कॉमर्स , नागपुर चेम्बर ऑफ कॉमर्स इंस्टिटयूट ऑफ चार्टर्ड एकाउन्टेन्टस ऑफ इंडिया , आयकर बार असोसिएशन तथा विदर्भ इंडस्ट्रीज असोसिएशन , नागपुर के प्रतिनिधी भी भारी संख्या में भाग उपस्थित थे। इसके अलावा विभाग के सेवानिवृत्त अधिकारी भी इस अवसर पर बडी तादाद में उपस्थित थे।

अनूदित-

तथ्यों में स्वपूर्णता और स्पष्टता

कार्यालयीन हिंदी में तथ्यों पर अधिक बल दिया जाता है| साथ में यह अपेक्षा की जाती है कि यह तथ्य अपने आप में पूर्ण तथा स्पष्ट हों| प्रशासन के क्षेत्र में संदेह और भ्रांति को अलंकार नहीं, भाषा का दोष माना जाता है| स्वपूर्णता और स्पष्टता कार्यालयीन भाषा के आवश्यक गुण हैं|

उदाहरण:

मूल-

GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF FINANCE
INCOME TAX DEPARTMENT
NAGPUR

--: **AUCTION NOTICE** :--

In exercise of the Revenue Recovery Certificate case no.12/13/08-09 dated 23/02/2009 of Shri Vijay Tulsiram Dangre, r/o. Plot Nos. 427 & 428, Anand nagar, Nagpur, the right, title and interest of the said defaulter in respect of the following properties will be sold by the undersigned by public auction on the date and schedule, as mentioned below:

: DETAILS OF THE PROPERTY :

1)	Location and area of the property	:	(i) Property at Plot No. 444, Mouza Nagpur, Patwari Halka no. 39, Circle no. 4, D. No. 2, Azamshah Layout, Anand Nagar, Ward No. 20, Tahsil & Distt. Nagpur. Property comprises of Plot area 278.81 Sq. Mtrs. with a three stories building having a total Built-up area of 278.76 Sq. Mtrs. (ii) Property at Plot No. 427 (part portion) and 428, House no. 1002A and 1003, Mouza Nagpur, Patwari Halka no. 39, Circle no. 4/6, Azamshah Layout, Anand Nagar, Ward No. 73, Tahsil & Distt. Nagpur. Property comprises of total Plot area of 535.11 Sq. Mtrs. [i.e.185.80 + 349.31 of plot nos. 427 and 428 respectively] with a two storeyed building having total construction of 416.337 Sq. Mtrs. [i.e. 44.59 + 371.747 on plot nos. 427 and 428 respectively].
2)	Municipal Liability	:	For (i) Rs. 2661/- per annum. Arrears of Municipal taxes are Rs. 5322/- for F.Ys. 2008-09 & 2009-10. For (ii), Rs. 2508/- & Rs. 3526/- per annum respectively. Arrears of Municipal taxes are Rs. 5016/- & Rs. 7052/- respectively for F.Ys. 2008-09 & 2009-10.
3)	Details of encumbrances	:	Bank Loan outstanding is Rs. 12,74,577/- as on 30/09/2009 against property situated on plot no. 428 as informed by United Bank of India, Nagpur branch.
4)	Income Tax dues	:	Rs. 813.51 Lakhs + Interest & costs.
5)	Reserve Price	:	For (i) Rs. 30,48,869/- For (ii) Rs. 53,84,472/-
6)	Date and time of Auction	:	30/11/2009 at 11.30 A.M.
7)	Venue of Auction	:	Room No. 312, Aayakar Bhavan, Telangkhedi Road, Civil Lines, Nagpur

Parties are requested to contact the Tax Recovery Officer (Central), Room No. 312, Aayakar Bhavan, Telankhedi Road, Civil Lines, Nagpur between 12.00 noon and 03.00 P.M. on all working days for inspection of the property and/or related queries.

Earnest Money Of Rs. 10,000/- (Rupees ten Thousand Only) has to be deposited by Bankers Cheque / Pay Order / Demand Draft, drawn in favour of The Tax Recovery Officer (Central), Income Tax Department, Nagpur before the commencement of the auction. In respect of successful bidders, the amount will be adjusted and for others, the Bankers Cheque / Pay Order / Demand Draft will be returned.

Sd/-
(S. M. V. V. SARMA)
Tax Recovery Officer (Central)
Nagpur

अनूदित-

भारत सरकार
वित्त मंत्रालय
आयकर विभाग, नागपुर

नीलामी की सूचना

श्री विजय तुलसीराम डांगरे, निवासी प्लाट नं. 427 एवं 428, आनंद नगर, नागपुर के मामले में जारी राजस्व वसूली प्रमाणपत्र संख्या 12/13/08-09 दिनांक 23/02/2009 के अनुसार उक्त चूककर्ता निर्धारिती की निम्नलिखित संपत्तियों की बिक्री सार्वजनिक नीलामी के जरिए अधोहस्ताक्षरी द्वारा निम्न सारणी में दर्शायी गई तिथि एवं अनुसूची के अनुसार की जाएगी :-

:संपत्ति का ब्यौरा :

1	संपत्ति का स्थान एवं क्षेत्रफल	:	(1)प्लाट नं.444,मौजा नागपुर पटवारी हलका नं.39,सर्कल नं.4,डी.नं.2,आजमशाहलेआउट,आनंद नगर,वार्ड नं.20, तहसील एवं जिला-नागपुर. इस संपत्ति का प्लाट का क्षेत्रफल 271.81 वर्ग मीटर है जिस पर तीन मंजिला भवन बनाया हुआ है और इसका बांधकाम क्षेत्रफल 278.76 वर्ग मीटर है । (2) प्लाट नं.427 (कुछ हिस्साा)एवं 428, मकान नं.1002ए एवं 1003, मौजा नागपुर, पटवारी हलका नं.39,सर्कल नं.4/6,आजमशाह लेआउट, आनंदनगर,वार्ड नं.73,तहसील एवं जिला-नागपुर। इस संपत्ति में कुल प्लॉट का क्षेत्रफल 535.11 वर्ग मीटर (अर्थात 185.80 +349.31 क्रमशः प्लॉट नं. 427 एवं 428) हैं, जिस पर दो मंजिला भवन बनाया हुआ है और इसका कुल बांधकाम क्षेत्रफल 416.337चौरस मीटर (अर्थात 44.59 + 371.747 क्रमश प्लॉट नं.427 एवं 428 पर) है।
2)	नगरपालिका देयता	:	संपत्ति (i) के संबंध में रुपये 2661/- प्रति वर्ष । वित्तीय वर्ष 2008-09 एवं 2009-10 के लिये बकाया नगरपालिका कर रु.5322/- हैं। संपत्ति (ii) के संबंध में नगरपालिका कर क्रमशः रु. 2508/- एवं रु.3526/- है । वित्तीय वर्ष 2008-09 एवं 2009-10 के लिये नगरपालिका का बकाया कर क्रमशः रूपये 5016/- एवं रूपये 7052/- है ।
3	देनदारियों का विवरण	:	जैसा कि यूनाईटेड बैंक ऑफ इंडिया, नागपुर शाखा द्वारा सूचित किया गया है, प्लॉट नंबर-428 पर स्थित संपत्ति कर दिनांक 30/09/2009 को रूपये 12,74,577/- का बैंक त्रृण बकाया है ।
4	बकाया आयकर	:	रूपये 813.51 लाख + ब्याज एवं लागत
5	आरक्षित मूल्य	:	रूपये 30,48,869/- (i) के लिये रूपये 53,84,472/-(ii) के लिये
6	नीलामी की तारीख एवं समय	:	दिनांक 30/11/2009 को पूर्वाह्न 11.30 बजे
7	नीलामी का स्थान	:	कमरा नंबर-312, आयकर भवन,तेलंगखेड़ी रोड, सिविल लाइन्स, नागपुर

इच्छुक पार्टियों से अनुरोध है कि उक्त संपत्ति के निरीक्षण हेतु और/या अधिक जानकारी के लिये कर वसूली अधिकारी (केन्द्रीय), कमरा नंबर-312, आयकर भवन, तेलंगखेड़ी रोड, सिविल लाइन्स, नागपुर के साथ सभी कार्य दिवसों में अपराह्न 12.00 बजे से 3.00 बजे तक संपर्क करें ।

बयाना की रकम **रूपये 10,000/- राशि (दस हजार रूपये मात्र)** नीलामी आरंभ होने के पूर्व बैंक चेक/ पे आर्डर/ डिमाण्ड ड्राफ्ट के माध्यम से जो कर वसूली अधिकारी (केन्द्रीय), आयकर विभाग, नागपुर के पक्ष में हो जमा करनी होगी । यह रकम सबसे बड़ी बोली लगानेवालों के पक्ष में समायोजित की जायेगी तथा अन्य बोली लगानेवालों को उनके बैंक चेक/पे आर्डर/ डिमांड ड्राफ्ट लौटा दिये जाएगे ।

हस्ता/-
(एस. एम. वी. वी. सर्मा)
कर वसूली अधिकारी (केन्द्रीय)
नागपुर

यथासंभव असंदिग्धता

कार्यालयीन भाषा में प्रयुक्त शब्दों में परिभाषिकता तथा वाक्यों में सरलता, स्पष्टता और सुबोधता की अपेक्षा होती है| अभिधा शक्ति ही कार्यालयीन भाषा का गुण है|

उदाहरण:

मूल-

MINUTES OF THE MEETING OF SPORTS & CULTURAL COMMITTEE HELD ON 18/2/2011 AT 5.00 P.M. IN CONFERENCE HALL, AAYAKAR BHAVAN, NAGPUR

A meeting of Sports & Cultural Committee was held on 18/2/2011 at 5.00 p.m. in Conference Hall, Aayakar Bhavan, Nagpur under the chairmanship of Shri M.D. Kabra, CCIT, Nagpur. The meeting was held to discuss the better management and cultural activities for departmental officers/officials within the Nagpur Region. The following members were present in the meeting :

S.No.	Name of the Officer with designation
1	Smt. Arti Handa, CIT-IV, Nagpur
2	Dr. Harshvardhini Buty, Addl.CIT, Nagpur
3	Dr. Pallavi Darade, Addl.CIT, Nagpur
4	Shri Sunil Umap, Addl.CIT, Range-6 & (HQ)(Admn.), & Ex-officio Secretary, Nagpur
5	Shri Amit Bobde, ACIT, Nagpur
6	Shri Ashish Dehariya, ACIT,Nagpur
7	Shri Pankaj Deshmukh, ITO
8	Shri Ravindra Deoghare, AD(OL), Nagpur
9	Shri A.R. Ahuja, ITO
10	Dr. S.K. Saha, ITO(HQ)(PR), Nagpur
11	Ms. Rashmi Daryani, ITI
12	Shri C.S. Kulkarni, ITI
13	Shri K.P. Nair, OS
14	Shri Ashok Ambule, OS
15	Shri N.H.T. Siddique, OS
16	Shri Sunil Chintalwar, Sr.TA

The following points/suggestions were discussed in the meeting by various members :

1. To verify possibility of Recruitment in Sports Quota.
(Action : DCIT(HQ)(Admn.) O/o CCIT, Nagpur)

2. To arrange CIT charge-wise sport events.
(Action :Dr. Harshwardhini Buty, Addl.CIT Range-7, Nagpur)

3. To convene regular monthly retirement functions.
(Action : DCIT(HQ)(Admn.), O/o CCIT & Dr. Pallavi Darade, Addl.CIT, Range-4, Nagpur)

4. In the month of April, 2011, there will be a Bada Khana to be arranged for all members of Aayakar Pariwar.

(Action : Smt. Arti Handa, CIT-IV & Shri A.K. Shrivastava, CIT(TDS)

5. To organise a monthly talk on topic of general interest.

(Action : Dr. Pallavi Darade, Addl.CIT, Range-4 & Addl.CIT(HQ) (Admn.) O/o CCIT, Nagpur)

6. To organise programmes to discharge social responsibility such as Blood Donation Camp as a part of social service.

(Action: DCIT(HQ)(Admn.), O/o CCIT Nagpur)

7. To call for Views/suggestions from staff.

(Action : PRO to circulate & compile)

8. On 24th July, 2011 - on the occasion of completing 150 years of Incometax - A big celebration function can be organised.

(Action : Smt. Arti Handa, CIT-IV & Shri A.K. Shrivastava, CIT(TDS), Nagpur)

The Chairman had agreed with all the above suggestions and assured all the co-operation to the Committee Members. The Chairman asked all the committee members to chalk out the programme and in the next meeting the same will be discussed.

The next meeting will be held at 4.30 p.m. on 18/3/2011.

Sd/-
(M.D. KABRA)
Chief Commissioner of Incometax
Nagpur

अनूदित

खेल तथा सांस्कृतिक समिति के 18/2/2010 को शाम 5.00 बजे सम्मेलन कक्ष, आयकर भवन, नागपुर में हुए बैठक का कार्यवृत्त

खेल तथा सांस्कृतिक समीति की बैठक दि. 18/2/2010 को शाम 5.00 बजे आयकर भवन, नागपुर के सम्मेलन कक्ष में श्री एम. डी. काबरा, मुख्य आयकर आयुक्त, नागपुर के अध्यक्षता में संपन्न हुई। नागपुर क्षेत्र में विभागीय अधिकारी तथा कर्मचारियों के लिए बेहतर व्यवस्थापन और सांस्कृतिक कार्यकलायों पर चर्चा के लिए यह बैठक की गई। इस बैठक में निम्नलिखित सदस्य उपस्थित हुए:

अ. क्र	पदाधिकारियों के नाम
1.	श्रीमती आरती हांडा, आयकर आयुक्त IV, नागपुर
2.	डॉ. हर्षवर्धनी बूटी, आयकर अपर आयुक्त ,नागपुर
3.	डॉ. पल्लवी दराडे, आयकर अपर आयुक्त, नागपुर
4.	श्री सुनील उमाप, आयकर अपर आयुक्त, रेंज–6, और (मुख्या.) (प्रशा.) तथा पदेन सचिव नागपुर
5.	श्री. अमित बोबडे, आयकर सहायक आयुक्त, नागपुर
6.	श्री. आशीष देहारिया, आयकर सहायक आयुक्त, नागपुर
7.	श्री पंकज देशमुख, आयकर अधिकारी
8.	श्री रविंद्र देवघरे, सहायक निदेशक (राजभाषा), नागपुर
9.	श्री ए. आर. आहुजा, आयकर अधिकारी
10.	श्री एस. के. शहा. आयकर अधिकारी (मुख्यालय) जनसंपर्क नागपुर
11.	सुश्री रश्मी दर्यानी, आयकर निरिक्षक
12.	श्री सी.एस. कूलकर्णी, आयकर निरीक्षक
13.	श्री के. पी. नायर, कार्यालय अधिक्षक
14.	श्री अशोक अंबुले, कार्यालय अधिक्षक
15.	श्री एन. एच. टी. सिद्धीकी कार्यालय अधिक्षक
16.	श्री सुनील चिंतलवार, वरिष्ठ कर सहायक

बैठक में निम्नलिखित मुद्दों/सुझावों पर विभिन्न सदस्यों द्वारा चर्चा की गई :

1) खेल कोटे में भरती की संभावना जाँचना।

(कार्यवाई : उप आयकर आयुक्त (मुख्यालय) (प्रशा.) /मुख्य आयकर आयुक्त नागपुर)

2) आयकर आयुक्त प्रभार–वार खेलकुद आयोजन करना।

(डॉ. हर्षवर्धनी बुटी,अपर आयकर आयुक्त रेंज–7, नागपुर)

3) नियमित मासिक सेवानिवृत्ति कार्यक्रम का संयोजन करना।

(कार्रवाई : उप आयकर आयुक्त (मुख्या) प्रशा), मुख्य आयकर आयुक्ता तथा डॉ. पल्लवी दाराडे, आयकर अपर आयुक्त, रेंज–4 नागपुर)

4) 2011 के अप्रैल माह में आयकर परिवार के सभी सदस्यों के लिए बडे खाने की व्यवस्था की जाए।

(श्रीमती आरती हांडा, आयकर आयुक्त– तथा ए. के. श्री वास्तव आर. आ. (टीडी एस.)

5) सामान्य रूचि के विषयों पर मालिक चर्चा का आयोजन करना।

(कार्रवाई : डॉ. पल्लवी दाराडे, आयकर अपर आयुक्त, रेंज –4 सहायक अपर आयुक्त (मुख्यालय) (प्रशा) मुख्य आयकर आयुक्त, नागपुर

6) सामाजिक दायित्वों के निवहि के लिए समाज सेवा के रूप में रक्तदान शिबिर जैसे कार्यक्रमों का आयोजन करना।

(कार्रवाई : उप आयकर आयुक्त (मुख्या.) (प्रशा.) /मुख्य आयकर आयुक्त, नागपुर

वर्णनात्मकता

कार्यालय में आवश्यक तथ्यों का विवरण दिया जाता है| उस विवरण में विचारधीन विषय में संबंधित सारी सामग्री को क्रमवार दिया जाता है| इसमें मूल्यांकन की गुंजाइश कम और तथ्यों के वर्णन की अधिक रहती है| अत: कार्यालयीन हिंदी में तथ्यों का सही-सही निरूपण होना आवश्यक है|

उदाहरण:

OFFICE OF THE

CHIEF COMMISSIONER OF INCOME TAX,NAGPUR

Aayakar Bhavan, Telangkhedi Road, Civil Line, Nagpur-440 001

F.No.: CCIT/ NGP/ PR/ Press Release/2010-11 Dated: 02.08.2010

PRESS NOTE

Extension of Due date for filing Income Tax Returns

As per press release issued by the Central Board of Direct Taxes (CBDT) which is available on the National website of the Income Tax Department www.incometaxindia.gov.in the due date of filing of Income Tax return has been extended on 4th August, 2010, for tax payers for whom the due date ended on 31st July 2010. All paper returns or e-returns filed on or before 4th August, 2010 will be considered as filed within the due date. The decision was taken in view of some technical snags in the e-filling computer system, and inclement weather at various locations, due to which tax payers have reported difficulties in filing or uploading income tax returns.

(Dr.S.K. SAHA)

Income Tax Officer (HQ) (PR)

for Chier Commissionr of Income Tax,

Nagpur.

अनूदित-

त्वरित

मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय, नागपुर

आयकर भवन; तेलंगखेडी रोड, सिविल लाईन, नागपुर – 440001

फाईल क्रं.: मुख्य आयकर आयुक्त/जनसंपर्क/प्रेस विज्ञप्ति/2010–11 दि. 02.08.2010

प्रेस विज्ञाप्ति

आयकर विवरणी दाखिल करने की देय–तारिख बढ़ाने बाबत।

आयकर विभाग ने राष्ट्रीय वेबसाईट www. incometax India: gov.in पर उपलब्ध केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड द्वारा जारी किए गए प्रेस विज्ञाप्ति के अनुसार जिनकी अंतिम तारीख 31 जुलाई, 2010 को समाप्त हो गई, उन कर दाताओं के लिए आयकर विवरणी दाखिल करने की देय तारीख का 4 अगस्त 2010 तक बढ़ाई गयी है।

यह निर्णय कंप्यूटर सिस्टम ई–फाइलिंग में कुछ तकनीकी बाधा और विविध स्थानों पर मौसम की ख़राबी के कारण करदाताओं के विवरणी दाख़िल करने या अपलोड़िंग करने में आई समस्या की दी गई सूचना को ध्यान में रखते हुए लिया है।

(डॉ. एस. के. शहा)

आयकर अधिकारी (मुख्यालय) जनसंपर्क

मुख्य आयकर आयुक्त नागपुर , के लिए

कार्यालयीन अनुवाद में कुछ समस्याएँ भी आती है जैसे कार्यक्षेत्र का अज्ञान, पारिभाषिक शब्दावली के एक से अधिक अर्थ (जैसे- account, return) पारिभाषिक शब्दविली में दुरूहता, दोनों भाषाओं की भिन्न प्रकृति, संक्षेपों की समस्या आदि| विषयज्ञाता के मार्गदर्शन तथा दोनों भाषाओं के व्यवस्थित ज्ञान के आधार पर इन समस्याओं को दूर किया जा सकता है |

A Study of Teaching Aptitude of Prospective Teachers in Relation to Sex, Intelligence and Academic Achievement

Dr. J.D .Singh

(Senior Professor, G.V. College of Education,Sangaria)

Satinder Kaur

(Principal, Mata Maiserkhana College of Education Bathinda)

INTRODUCTION

There is always a need to evaluate the efforts which are being made by the training institutions to achieve the desired goals. It is highly recognized that the teacher effectiveness, the aptitude of the teacher, a healthy attitude towards world of work and personality contribute a lot in successful teaching. Adapting training methods to specific teacher traits to best facilitate the training effects for pre-service teachers is an important. There are many factors in the lives of today's children that operate against their developing a positive, substantive and internal sense of the importance of achievement. The lack of a system that has worked for such achievement in the lives of many of their parents and community members, and the obtrusive presence of get- rich- quick models in the culture of the streets, are factors that strongly mediate against our young people in this regard. Notwithstanding, the meaning of achievement for young learners is especially important now. The level of academic skills necessary for successful entry into today's job markets, with or without a college education, has risen to the point that a focus on achieving academic success is necessary for all students throughout each and every year of schooling .

The quality of teacher, in fact, is a vital determinant of learning achievement of children. Even the Delor Commission Report recognized its importance as it stated in his report, "Improving the quality of education depends on first improving the recruitment, training, social status and condition of work of teachers. They need the appropriate knowledge and skills, personal characteristics, professional prospects and motivation if they are to meet the expectations placed upon them" (**Delor, 1996**)

This critical condition underscores the importance of developing, or redeveloping, a culture of achievement. In such a culture, learning, progressing academically, and working steadily and purposefully in school is seen as the standard pattern of behavior for students in elementary and secondary school. For this to happen Kids have to "get it" – that is, there must be a substantive meaning of achievement that they understand and believe to the extent that it becomes the primary piece of their motivation to do well academically. This motivated desire can then result in performance that is

reinforced in the school, the home, and the community until it becomes the guiding pattern of a child' life.

The need for higher achievement, incidentally, is not confined to low- income communities. Many middle class areas report consistently lower level of academic achievement and attainment; of children finishing high school without extended sequences of mathematics, science, languages and student performance deficit in other demanding areas that require diligence and support. Surely these are indicators of important work that remains to be done in terms of establishing and raising expectation and motivated for high performance.The issue of student achievement is presently receiving some of the national attention it needs. Sometimes, as a result of their communication competence, these students are too quickly mainstreamed into the regular classroom where they encounter difficulties understanding and completing school work in the more cognitively- demanding pedagogical needed for successful performance in academic subjects.

STATEMENT OF THE PROBLEM: -

"A study of Teaching Aptitude of Prospective Teachers in Relation to Sex, Intelligence and Academic Achievement."

OBJECTIVES OF THE STUDY:

The investigator set forth the following objectives for the study:-

1 To investigate the level of teaching aptitude of prospective teachers of Punjab state's

2 To know the independent effect of teaching aptitude of prospective teachers in relation to sex.

3 To know the independent effect of teaching aptitude of prospective teachers in relation to Intelligence.

4 To know the independent effect of teaching aptitude of prospective teachers in relation to Academic Achievement.

5 To study main and interactional effects of teaching aptitude among prospective teachers in relation to the following background factors:

I Sex and Intelligence

II Intelligence and Academic Achievement

III Sex and Academic Achievement

6 To study main and interactional effects of teaching aptitude of prospective teachers in relation to Sex, Intelligence and Academic Achievement

HYPOTHESES OF THE STUDY

1. In order to achieve the objectives of the study following hypotheses would be formulated by the investigator:

2. There is no significant difference in teaching aptitude of male and female prospective teachers in the Punjab.

3. There is no significant difference in teaching aptitude of low and high intelligent prospective teachers in the Punjab.

4. There is no significant difference in teaching aptitude of low and high academic Achievement of prospective teachers in the Punjab.

5. There is no significant difference in teaching aptitude of prospective teachers in relation to interaction effect of sex and intelligence.

6. There is no significant difference in teaching aptitude of prospective teachers in relation to interaction effect of academic Achievement and intelligence.

7. There is no significant difference in teaching aptitude of prospective teachers in relation to interaction effect of sex and academic Achievement.

8. There is no significant difference in teaching aptitude of prospective teachers in relation to interaction effect of sex and intelligence and academic Achievement.

DELIMITATIONS OF THE STUDY

This study was limited by a small sample size that covered all the four districts of Malwa region. Four districts (Bathinda, Faridkot, Muktsar sahib and Mansa) which existed in Malwa region of Punjab State were selected under study. The total sample that was selected from various education colleges are as follows:-

S.No	District	Male	Female	Total
1	Bathinda	75	75	150
2	Faridkot	75	75	150
3	Muktsar	75	75	150
4	Mansa	75	75	150
	Total	300	300	600

METHOD ADOPTED IN THE PRESENT STUDY

In the present study, descriptive survey method was employed to know the teaching aptitude of Prospective teachers in relation to sex, intelligence and Academic Achievement.

SAMPLE

The study was conducted over a random sample of 600 prospective teachers (300 males and 300 females)

TOOLS AND TECHNIQUES:

I Teaching Aptitude Test Battery (T.A.T.B): This test is meant for measuring the aptitude towards teaching profession. The present test named as Teaching Aptitude Test Battery (1998) has been constructed and standardized by **Dr. R.P. Singh** and **Dr. S.N. Sharma** of Patna University, Patna (Bihar) .It has been published by National Psychological Corporation, Agra.

II Raven's Standard Progressive Matrices (SPM): Raven's standard Progressive Matrices Scale designed and standardized by **J.C.Raven (1960).** This test consists of only designs or patterns and no verbal statements or indications. It is fully a non-verbal test.

III Academic Achievement: Academic Achievement has taken in reference of marks obtained by student teacher in B.A/ B.Sc/ B.com examination.

STATISTICAL TECHNIQUES

The statistical techniques used for the study were Mean , standard Deviation , t test, ANOVA (one way, two way) used for analysis and interpretation of data.

ANALYSIS OF DATA

Analysis of data was done by using different statistical Techniques. This was done as per instructions given in the manuals of the test.

TO KNOW DIMENSION WISE TEACHING APTITUDE AMONG PROSPECTIVE TEACHERS IN RELATION TO SEX **Table :1**

S.No.	Dimensions	Male Prospective Teachers			Female Prospective Teachers			"t" Ratio
		N	Mean	S.D	N	Mean	S.D	
1	Mental Ability	300	18.48	4.4	300	18.93	4.4	1.25
2	Attitude towards children	300	12.24	2.38	300	12.54	2.41	1.55
3	Adaptability	300	17.56	3.40	300	17.95	3.47	1.38
4	Professional information	300	17.25	3.02	300	17.58	3.1	1.30
5	Interest in profession	300	6.86	1.61	300	7.09	1.63	1.71
	Total	300	72.41	14.71	300	74.10	14.93	1.40

Table 1 depicts that the mean score of Female prospective teachers on mental ability dimension (M=18.93) higher than the mean score of male prospective teachers (M =18.48) 'traitor is 1.25 Which is not significant 0.05 level of confidence? The results indicate that female prospective teachers are not significantly on mental ability than male prospective teachers.

On teaching aptitude which is the sum up of all dimensions, we can say that there is no significant difference in the teaching aptitude of male and female prospective teachers

Test of significant differences between the mean scores on Teaching Aptitude in relation to Sex of Various Districts of Malwa Region

Group	Sex	N	Mean	S. D	t-Value	Significant .05 level	Degree of freedom
Teaching Aptitude (Faridkot district)	Male	75	73.17	15.22	0.65	Not Significant	148
	Female	75	74.77	14.88			
Teaching Aptitude (Muktsar District)	Male	75	72.57	14.06	0.43	Not Significant	148
	Female	75	73.57	14.24			
Teaching Aptitude (Mansa District)	Male	75	70.2	14.36	1.54	Not Significant	148
	Female	75	74.08	16.49			
Teaching Aptitude (Bathinda District)	Male	75	73.69	15.21	0.12	Not Significant	148
	Female	75	73.99	14.25			
Teaching Aptitude of whole Malwa region	Male	300	72.41	14.71	1.4	Not Significant	598
	Female	300	74.1	14.93			

Table 2

Inferences :-

In viewing the analyzed data presented in **Table 2** to know the significance difference in teaching aptitude of male and female teachers of whole Malwa region, In conclusion, we can say that there is no significant difference in the teaching aptitude of male and female prospective teachers of whole Malwa region.

Test of significant differences between the mean scores on Teaching Aptitude in relation to Intelligence of Various Districts of Malwa Region

Table 3

Teaching Aptitude	Intelligence	N	Mean	S. D	t -Value	Significant .05 level	Degree of freedom
Bathinda District	High intelligent	13 9	42.71	5.4 4	4.61	Significant	148
	Low intelligent	11	35.13	0.3 2			
Faridkot District	High intelligent	12 3	36.21	0.7 2	8.21	Significant	148
	Low intelligent	27	34.97	0.6 4			
Muktsar District	High intelligent	11 9	36.41	1.1 4	6.71	Significant	148
	Low Intelligent	31	34.6	1.9 1			
Mansa District	High Intelligent	11 5	36.35	1	7.46	Significant	148
	Low Intelligent	35	35.01	0.6 1			
All Malwa Region	High intelligent	49 6	38.11	4.1 4	7.86	Significant	598
	Low intelligent	10 4	34.89	1.1 6			

INFERENCES:

In viewing the analyzed data presented in **Table No. 3** to know the significance difference in teaching aptitude of low and high intelligent teachers of whole Malwa region, In conclusion, we can say that there is significant difference in the teaching aptitude of low and high intelligent teachers of whole Malwa region. Intelligence plays an important role in effecting Teaching Aptitude of prospective teachers. From analysed data we found that high intelligent had a significant higher mean intelligent Quotient (I.Q) as compared to low intelligent.

Test of significant differences between the mean scores on Teaching Aptitude in relation to Academic Achievement of Various Districts of Malwa Region

Table 4

Teaching Aptitude	Academic Achievement	N	Mean	S. D	t-Value	Significant .05 level	Degree of Freedom
Bathinda District	High Achiever	130	72.52	8.86	6.73	Significant	148
	Low Achiever	20	59.13	0.54			
Faridkot District	High Achiever	104	60.95	1.37	8.77	Significant	148
	Low Achiever	46	58.99	0.95			
Muktsar District	High Achiever	106	61.41	1.98	8.68	Significant	148
	Low Achiever	44	58.6	1.26			
Mansa District	High Achiever	102	61.34	1.81	9.02	Significant	148
	Low Achiever	48	58.82	0.98			
All Malwa region	High Achiever	442	64.56	7.18	9.94	Significant	598
	Low Achiever	158	58.85	1.02			

Inferences:

In viewing the analyzed data presented in **Table No. 4** to know the significance difference in teaching aptitude of high achiever and low achiever teachers of whole Malwa region, In conclusion, we can say that there are significant differences in the teaching aptitude of high achiever and low achiever teachers of whole Malwa region. Academic Achievement plays an important role in effecting Teaching Aptitude of prospective teachers. From analysed data we found that high achievers were more intelligent as compared to low achievers due to lack of their self confidence, inferiority complex and manifest other forms of deviant behaviour.

TO STUDY MAIN AND INTERACTIONAL EFFECTS OF TEACHING APTITUDE OF PROSPECTIVE TEACHERS IN RELATION TO SEX, INTELLIGENCE AND ACADEMIC ACHIEVEMENT

Table No. 5

	Variables	Sum of Squares	df	Mean Square	F	Sig.
Main Effects	(Combined)	1610.98	3.00	536.99	2.45	0.06
	Academic Achievement	0.34	1.00	0.34	0.00	0.97
	Intelligence	1399.73	1.00	1399.73	6.39	0.01
	Sex	322.37	1.00	322.37	1.47	0.23
2-Way Interactions	(Combined)	817.73	3.00	272.58	1.25	0.29
	Academic Achievement * Intelligence	811.53	1.00	811.53	3.71	0.05
	Academic Achievement * Sex	28.13	1.00	28.13	0.13	0.72
	Intelligence * Sex	0.76	1.00	0.76	0.00	0.95
3-Way Interactions	Academic Achievement * Intelligence * Sex	3.63	1.00	3.63	0.02	0.90
Model		2431.32	7.00	347.33	1.59	0.14
Residual		129377.09	591.00	218.91		
Total		131808.41	598.00	220.42		

Inferences:

The **Table 5** shows that the obtained “f” ratio is 2.45 for the main effect was found to be significant. The two way interaction effect between Academic Achievement * Sex & Intelligence * Sex was not found to be significant at 0.05 level of confidence however Academic Achievement * Intelligence was found to be significant at 0.05 level of confidence. The f value for three way interaction effect of Academic Achievement * Intelligence * Sex didn’t show any significant difference.

MAJOR FINDINGS

Normal teaching aptitude found according to opinion of 51.16% respondents of Malwa region.

In comparison of all districts highest and lowest teaching aptitude revealed in prospective teachers of

Muktsar and Mansa districts respectively.

It found that the mean score of the Male prospective teachers is 72.41, which falls on the interval 70-90.

It found that the mean score of the Female prospective teachers is 74.10, which falls on the interval 70-90.

In comparison of all dimensions of Teaching aptitude, highest mean score in mental ability dimension I is 18.71 and lowest mean score in Professional interest dimension is 6.98.

It found that on all dimensions of teaching Aptitude, there is no significant difference in the teaching aptitude of male and female prospective teachers..

There is no significant difference in the teaching aptitude of male and female prospective teachers of whole Malwa region.

There is significant difference in the teaching aptitude of low and high intelligent teachers of whole Malwa region.

There is significant difference in teaching aptitude of higher Achiever and low Achiever teachers of whole Malwa region.

There is no significant difference in teaching aptitude of prospective teachers in relation to interaction effect of sex and intelligence.

There is significant difference in teaching aptitude of prospective teachers in relation to interaction effect of Academic achievement and intelligence.

There is no significant difference in teaching aptitude of prospective teachers in relation to interaction effect of Academic achievement and Sex.

SUGGESTIONS FOR FURTHER RESEARCH

. Therefore, the studies reviewed and the findings of this study led the investigator to suggest the following areas for further research.

Study of the affective correlates discriminating between teacher trainees with high and low Teacher Aptitude.

Affective factor structure of teacher trainees with high Teaching Aptitude.

The forecasting efficiency of Teacher Aptitude when the trainees enter into teaching profession.

A study on the techniques and strategies to develop Attitude towards Teaching Profession.

The efficiency of Achievement in Teacher Education and Attitude towards Teaching Profession in predicting success in Teaching.

Developing a pre service training programme so as to produce teachers with favourable Attitude towards Teaching and Teaching Interest.

Study of socio-familial characteristics associated with High and Low Teacher Aptitude.

A comparative study may be conducted on rural and urban Prospective teachers, aided and unaided colleges, private and Government institutions.

A comparative study may be conducted on Art and Science Prospective teachers.

A research study may be undertaken on achievement motivation among the teacher trainees.

A comparative study may be conducted on teacher education in India and other countries.

Teaching aptitude is innate or acquired so teacher educator and member concerns should take the responsibilities seriously plan the training process so that capacities and efficiency for the task involved should be acquired during the training course by the trainees.

REFERENCES:

1. **Bhatia K.K (2005)** "Basis of Educational Psychology" New Delhi: Kalyani Publisher,.
2. **Buch M.B. (1988**) Third survey of Research in Education M.S. University, Baroda.
3. **Desai D.M (1971)** New Direction in the Education of the Indian Teachers, Baroda (ASE) M.S. University.
4. **Indian educational review 1978,**vol.13 .No. 4
5. **Journal of Teacher Education for 21st century**."(January 2006) Council for Teacher Education.
6. **Mangal S.K. (2011)** "Advanced Educational Psychology" New Delhi: PHI Learning Private Limited.
7. **Mehta, Arun C. (1996):** 'Reliability of Educational Data in the context of NCERT Survey'. Journal of Educational Planning and Administration, NIEPA, July 1996, Volume x, No.1, New Delhi.
8. **MHRD (20OOC):** Annual Report: 1999-2000.New Delhi: Government of India.
9. **MHRD (2000b)**: Sarva Shiksha Abhiyan: A People Movement for Education for All, Draft Guidelines. New Delhi: Government of India.
10. **Ministry of Education**, Govt. of India, 1966.

11. **NCERT (1992)**: Fifth All India Educational Survey (volume I and II). NCERT, New Delhi.

12. **NCERT (1998):** MId- Term Assessment Survey: An Appraisal of students Achievement (by Ved Prakash, S.K.S. Gautam, I.K. Bansal and M. Bhalla). NCERT, New Delhi.

13. **Report of the Education Commission 1952-1953**, Ministry of Education, Govt. of India, 1953.

14. **Report of the Education Commission, 1964-66**,

15. **Sharma, S.P (2005)** "Teacher Education -Principles, Theories and Practices, New Delhi: Kanishka Publishers.

16. **Singh. Amarjit and Doyle Clar (2004)** "Teacher Training- A Reflective Perspective, New Delhi: Kanishka Publishers.

17. **Sodhi, T.S and Suri, S.P,(2005)** " Psychological Foundations of Education" Patiala: Bawa Publications,

18. **Varghese, N. Vand Arun C. Mehta (1999a, b):** Universalisation of upper Primary Education in India - An Analysis of present Status and Future Prospects. National institute of Educational Planning and Administration (NIEPA), New Delhi, February.

19. **Virk, Jaswant and Sahu, Pardeep Kumar (2008)** "Educational Psychology" Patiala: Twenty First century Publications.